

भारतपथिक कबीरपंथी-
स्वामी श्रीयुगलानन्दद्वारासंशोधित

श्री-मुहम्मदबोध और काफिरबोध ।

खेमराज श्रीकृष्णदासने
मुम्बई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेसमें
छापकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९८०, शके १८४५.

सर्वाधिकार रक्षित है.

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लैन
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया।

सत्य नाम ।



श्री कवीर साहिब ।



अथ श्रीबोधसागरे

नवमस्तरंगः ।

मुहम्मदबोध ।

धर्मदास-वचन ।

साखी-धर्मदास विनती करे, कृपा करहु गुरुदेव ॥
नबी महम्मद जस भये, सोसब कहिये भेव ॥

सत्यकबीर वचन -चौपाई ।

धर्मदास पूछ्यो भल बानी । सो सब कथा कहूँ सहिदानी ॥
जेहि औसर मुहम्मद औतारा । धरम आपनो जगत पसारा ॥
मारि काटि निज धर्म चलायो । जाते जीव बहुत दुख पायो ॥
परम पुरुष दिल दाया आयी । मुक्ता मणि कहँ कह्यो बुझायी ॥
मुक्तामणि संसार सिधाओ । काल कष्टते जीव बचाओ ॥
बिगसी कमल उठी असबानी । मुक्तामनि सुनिओ तुम ज्ञानी ॥
भवमें जाओ जीवके काजा । जीवन कष्ट देत यमराजा ॥
मुक्तामणि चले शीस नवायी । तेही क्षण भव प्रकटे आयी ॥
साखी-दोसौ युग कलि युग गयो, तब आयो संसार ॥
बहुतक जीव चितायऊ, कोइ कोइ हंस हमार ॥

चौपाई ।

ऐसे बहुत दिन गयो सिरायी । सिंघल द्वीपमें पहुंच्यो जायी ॥
तब वहँ मिले मुहम्मद पीरा । जिन सब हुकुम कीन तागीरा ॥

तहाँ जाय हम कीन सलामा । मात रहे अलमस्त इलामा ॥
नजर दिदार जो कीन हमारी । मत्त गयन्द केर असवारी ॥
कहु भाई तुम कहँ भरमाये । कहां ते आये कहां को जाये ॥
नाहक को नहिं साहब राजी । पढ़ि कुरान पूछौ तुम का जी ॥
हुए हैरान नजर नहिं आये । किया नसीहत अल्ला फरमाये ॥

मुहम्मद् वचन ।

साखी—कहाँ ते आये पीर तुम, क्यों कर किया पयान ॥
कौन शक्सका हुक्म है, किसका है फरमान ॥

रमैनी ।

पीर मुहम्मद सखुनजो खोला । अल्ला हमसे परदे बोला ॥
हम अहदी अल्ला फरमाना । वतन लाहूत[1] मोर अस्थाना ॥
उन भेजे रूह बारह हजारा । उम्मतके हम हैं सरदारा ॥
तिस कारण जो हम चलिआये । सोवत थे सब जीव जगाये ॥
जीव ख्वाबमें परो भुलाये । तिस कारन फरमान ले आये ॥
तुम बूझो सो कौन हो भाई । अपनो इस्म कहो समुझाइ ॥
साखी—दूर की बाते जो करौ, करते रोजः नमाज ॥
सो पहुँचे लाहूतको, खोवे कुल की लाज ॥

कबीर-वचन ।

कहैं कबीर सुनो हो पीरा । तुम लाहूत करो तागीरा ॥
तुम भूले सो मरम न पाया । दे फरमान तुम्हें भरमाया ॥
फिर फिर आवे फिर फिर जाई । बद अमली किसने फरमाई ॥
लाहूत मुकाम बीचको भाई । बिन तहँकीक असल ठहराई ॥
तुम ऐसे उनके बहुतेरे । लै फरमान जाव तुम डेरे ॥

१ नाम । २ इसका वर्णन ग्रन्थ सारमें देखो । ३ स्थान । ४ जांच ।

साखी–खोजत खोजत खोजियाँ, हुवा सो गूना गून ॥
खोजत खोजत ना मिला, तब हार कहा बेचून ॥
बेचूँन जग राँचिया, साई नूर निनार ॥
आखिर केरे वक्त में, किसकी करो दिदार ॥

रमैनी ।

तुम लाहूत रचे हो भाई । अगम गम्य तुम कैसे पाई ॥
यह तो एक आदि बिसरामा । आगे पाँच आदि निज धामा ॥
तहँते हम फरमाँ ले आये । सब बंदफेलको अमल मिटाये ॥
उन फरमान जो हम को दीना । तिनका नाम बेचून तुम लीना ॥
साखी–साहब का घर दूर है, जासु असल फरमान ॥
उनको कहो जो पीर तुम, सोइ अमर अस्थान ॥

मुहम्मद वचन-रमैनी ।

कहै मुहम्मद सुनो कबीरा । तुम कैसे पायो अस्थीरा ॥
लाहूत मेटि जो अगम बतायो । खुद खुदाय हमहूँ नहिं पायो ॥
हम जानैं खुद आपै आही । तुम कुदरत कर थापो ताही ॥
हम तो अर्श हाजिरी आये । तुम तो कुदरतसे ठहराये ॥
तुम्हरे कहे भरम मोहि आयो । खुद खुदाय तुम दूर बतायो ॥
आप सुनाओ खुदकी बानी । आलम दुनियाँ कहो बखानी ॥
लाहूत मुकाम हम निजकर जाना । सो तो तुम कुदरत कर ठाना ॥
हलकी मुलकी बासरी भाई । तीन हुक्म अल्ला फरमाई ॥
साखी–साई मुरशिद पीर है, साँचा जिस फरमान ॥
हलकी मुलकी बासरी, तीन हुकुम कर मान ॥

कबीर वचन-रमैनी ।

सुनो मुहम्मद कहूं खुदवाणी । खुद खोदायकी कहुँ निशानी ॥
कादिर थे तब कुदरत नाहीं । कुदरत थी कादिरके माहीं ॥

ख्वार सभीको चीन्हो भाई । असल रूहको देउँ बताई ॥
असल रूहकी दीदार जो पावे । पावे निज मुसलमान कहावे ॥
हो आवाज जहां परदः पोशी । है वह मर्द कि है वह जोशी ॥
जब लग तख्त नजर नहिं आवे। दिल विश्वास कौन विधि पावे ॥
जब खुद की खबर न पावे । तब लग कुदरत भ्रम ठहरावे ॥
हाल माशूक नजर जो आवे । एक निगाह दीदार जो पावे ॥
चार वेद अक्षर निरमाई । चार अंश ताके सुत भाई ॥
एकअंश चौभाग जो कीना । ताते एक गुप्त कर लीना ॥
एक अंशते गुप्त छिपाई । तीन अंश संसार पठाई ॥
अंशहि अंश भेद नहिं दीना । यह अचरज अक्षरने कीना ॥
जो तुम कहा हमारा मानो । तो हम तुमते निर्णय ठानो ॥
साखी-यह प्रपञ्च बेचूनका, तुमते कहा न भेव ॥
आप सो रत होइ बैठा, तुम चार करत हो सेव ॥

मुहम्मद वचन ।

कहैं मुहम्मद सुन खुद अहदी। इलम लद्दुन्नी कहु बुनियादी ॥
जबनहिं पिण्ड ब्रह्माण्ड अस्थूला । तब ना हतो सृष्टिको मूला ॥
आदनकी कहिय उतपानी । आदि अन्त और मध्य निशानी॥
साखी-बुजरुग हकीकत सब कहो, किस विधि भया प्रकाश ॥
जब हम जाने आदिको, तो हमहूँ बांधे आश ॥

कबीर वचन ।

सुनो मुहम्मद सांचे पीरा । समरथ हुकुम खुद आदि कबीरा॥
अब हम कहैं सुनो चितलायी। आदि अन्त सब कहों बुझायी॥
प्रथमें समरथ आदि अकेला । उनके संग हता नहिं चेला ॥
साखी-वाहिद थे तब आपमें, सकल हतो तेहि माहँ ॥
ज्यों तरुवरके बीजमें, पुष्प पात फल छाहँ ॥

चौपाई।

आठों अंस त्रिदेव समेता। उतपति जगतकीन प्रभु एता॥
तीनो दिन त्रैलोकको राजु। तिन वसपरि जिव भये अकाजू॥
तिन पुनि एक जुक्ति चितदीना। प्रथम ज्ञान चार जो कीना॥
प्रथम क्षुद्र जो ज्ञान उपजाई। ध्यान अंशको तौन पठाई॥
दूसर ज्ञान वाचा है भाई। राज अंशको तौन पठाई॥
तीसर ज्ञान जो अनुभव कीना। धर्म राय को लेखा दीना॥
चौथे ब्रह्मज्ञान उपजाई। माय अंश सो ध्यान लगाई॥
पंचवा ज्ञान सहज की डोरी। सब जीवनकी बंदी छोरी॥
जहाँसे चार ज्ञानजो आवा। सोई कला निरंजन पावा॥
निरंजन भये राज अधिकारी। तिनके चार अंश सेवकारी॥
चार ज्ञानते चारो वेदा। तिनते चारो भये कतेबा॥
मूल कुरान वेद की बानी। सो कुरान तुम जगमें आनी॥
हक्क कुरान जो तुमको दीना। हद्द हुक्म तुम आपन कीना॥
चार कतेब के चारो अंशा। तिनके कहो भिन्न भिन बंशा॥
वेद पढावत ब्रह्मा आये। ऋग वेद को नाम लखाये॥
दूसर यजुरवेदकी बानी। राजनीति सो कीन बखानी॥
तीसर सामवेदकी बानी। यज्ञ होम तिन कीन बखानी॥
चौथ अथर्वन गुप्त छपाये। तौन हुक्म तुम जगमें आये॥
ऐके मूल कुरानमें चारी। चार बीर तुम हो सरदारी॥
जब्बूर किताब दाऊदने पाई। नासूत मोकाम रहै ठहराई॥
तौरेत किताब मूसाने पाई। मलकूत मोकाम रहै ठहराई॥
इंजील किताब ईसाने पाई। जबरूत मोकाम रहे ठहराई॥
फुरकान किताब नबीतुम पाई। लाहूतमोकाम रहे लौलाई॥
कुरान बेहदको भरम न पावै। बिनदेखे विश्वास क्या आवै॥

चार मोकाम किताब है चारी। पंचये नाम अचिंतसँवारी ॥
तहँते आइ रूह बारहहजारी। तहां अचिंत गुप्त व्योहारी ॥
साखी—पीर औलिया थाकिया, यह सब उरले तीर ॥
समरथका घर दूर है, तिनको खोजो पीर ॥

*मारफत।

चौपाई।

औवलमोकाम नासूत ठेकाना। दुजा मोकाम मलकूतजो जाना ॥
सेउम मोकाम जबरूत ठेकाना। चहारुममोकामलाहूतजोजाना ॥
पंचयें मोकाम हाहूत अस्थाना। छठे मोकाम सोइं जो माना ॥
हफतुम मोकाम बानी अस्थाना। अठयें मोकाम अंकूरठेकाना ॥
नवयें मुकाम आहूत निशानी। दसयें मोकाम पुरुषरजधानी ॥

बेतुक।

औवल शरी अत १। तरीकत् २। हकीकत् ३। मारफत् ४।
मरौवत् ५। ध्यान डोरहिअत् ६। जुलफकार चंद्र गेटा ७।
हुकुमसुरतद ८। देयना कासो यही अंत् ९। सचपावेसमरथकाय
१०। अंकार ओंकार कलिमा नवी सच्चुपावे देखा हद बेहद

मुहम्मद वचन।

तुम कब्बीर भेद अधिकाये। खुदसमरथकी खबरि जोल्याये ॥
अब तुम को हम बूझैं अंतू। सो कहिये खुद अहदी संतू ॥
को तुम आहु कहांते आये। क्यों तुम अपनो बर्ण छिपाये ॥
सात सुरति समरथ निरमाई। यह अस्थान रहो की जाई ॥
यती मारफत कहु दुरवेशा। हम मानैं तुमरो उपदेशा ॥
सात सुरति केहि माहि समाई। जिव बोधे सो कह चलिजाई ॥
समरथ गम तुम साँच कबीरा। समरथ भेद कहो मति धीरा ॥

---

*इस विषय में लिखे हुये दश मुकामों का वर्णन पुस्तकके अन्तमें देखो।

साखी–मेरे शंका बाढिया, थाके बेद कुरान ॥
वाहिद कैसे पाइये, समरथको मकान॥

सत्यकवीर वचन।

सुनो मुहम्द कहों बुझाई । जो खुद आदि अस्थान है भाई ॥
जोजो हुकुम समरथ फरमाई । सो सो हुक्म हम आनि चलाई ॥
सुर नर मुनिको टेरि सुनाये । तुमको बहुत बार समुझाये ॥
तुमपर मोह अक्षरने डारा । तेहि कारण आये संसारा ॥
सोलह असंख जुग जबै सिराई। सोलह असंख उतपति मिटिजाई
सात सुरति तब लोकहि जाई । जिव बोधो तेहि माह समाई ॥
सात शुन्य तजि ते अस्थाना । ते सब मिटे होय घमसाना ॥
बेद कतेबकि छोडो आशा । वेदकतेव अक्षर प्रकाशा ॥
तीन बार तुम जग में आये। फिर फिर अक्षरने भरमाये ॥
अक्षर चीन्हिके छोडो भाई। तीन अंश अक्षर निरमाई ॥
ब्रह्मकि सृष्टि आपको कीना । जीव वृष्टि तीरथ व्रत दीना ॥
माया वृष्टि ईश्वरी जानो । सबमें आतम एक समानो ॥
साखी–खोजो खुद समरत्थको, जिन किया सब फरमान ॥
पीर मुहम्मद तहँ चलो, सोई अमर अस्थान ॥

मुहम्दवचन।

पीर मुहम्द मुख तब मोरा। कछु नहिं चलै तुमारो जोरा ॥
अक्षर हुक्मको मेटनहारा। चार वेद जिन कीन पसारा ॥

कबीर बचन

सुनिये सखुन मुहम्म पीरा। हम खुद अहदी आदि कबीरा॥
मेटो अक्षरको बिस्तारा । मेटो निरंजन सकल पसारा॥
मेटो अंचित्तकी रजधानी । मेटो ब्रह्मा बेद निशानी ॥
चौदह जमको बांधि नचावों । मृत अंधा मगहर ले आवों॥

धर्मरायते झगर पसारा। निरंजन बांधि रसातल डारा॥
बेद कतेबको अमल मिटावों। घर घर सार शब्द फैलावौं॥
समरथ हुक्म चलै सब माही। ब्यापै सत्य असत्य उठिजाही॥

मुहम्मद वचन।

पीर मुहम्मद बोले बानी। अगम भेद काहू नहिं जानी॥
सुना कान नहिं आखिन देखा। बिन देखे को करे बिवेखा॥
जो नहिं देखो अपने नैना। कैसे मानो गुरुको बैना॥
जो तुम खुद अहदी है आये। हुक्म हजूर फरमान ले आये॥
जौन राहसे तुम चलिआवो। सोई राह मोकहँ बतलावो॥
हंसनको अस्थान चिन्हावो। समरथको मोहि लोक देखावो॥

साखी—हंसनको अस्थान लखि, तब मानो परमान॥
जो समरथको हुक्म है, सो मेरे परबान॥

कबीर वचन।

सुनो मुहम्मद कहों बुझाई। साहेब तुमकोदेउँ बताई॥
चलै सैल को दोनो पीरा। एक मुहम्मद एक कबीरा॥

मोकाम् १।

भूमिते छत्तिस सहस ऊँचाई। मानसरोवर तहाँ कहाई॥
तहँ नासुत आहि मोकामा। नबी कबीर पहुँच तेहि धामा॥
तहँ दाऊद पयंबर होई। जब्बूर किताब पढै तहँ सोई॥
तहाँ सलामालेक सोई कीना। दस्तावोस उनहु उठी लीना॥

मोकाम

तहवाँते पुनि कीन पयाना। चौबिस सहस वैकुंठ प्रमाना॥
तहवाँ पहुंच बैठे ऋषि बासा। देव सबै बैठे तेहि पासा॥
वह बैकुंठ विष्णु अस्थाना। मलकूत मोकाम मूसाको जाना॥
मूसा पैगम्बर पढै किताबा। उसका नाम तौरेत किताबा॥
सलामालेक तहाँ हम कीना। दस्ताबोस उनहु उठि लीना॥

मोकाम ३ ।

वैकुंठ ते आगे लायो डोरी । सुमेरते सुन्य अठारह कोरी ॥
येतो अधर सुन्य अस्थाना । जबरूत मोकाम ईसाको जाना ॥
ईसा पैगम्बर पढै किताबा । उसका नाम इंजील किताबा ॥
सलामालेक तहँा हम कीना । दस्ता बोस उनहु उठि लीना ॥
तहँवा बैठि विस्वभर राई । वही पीर तो वही खुदाई ॥
उहँते अधर सून्य है भाई । ताकी शोभा कही न जाई ॥

मोकाम । ४

महाशून्यको लागी डोरी । ग्यारह पालँग तहँा ते सोरी ॥
लाहूत मोकाम कहावै सोई । जो देखे बहुते सुख होई ॥
मुस्तफा पैगंबर बैठे तहँा । कुरकान किताब पढतथे जहँा ॥
सलामालेक तहँा हम कीना । दस्ताबोस उनहु उठि लीना ॥
देखतहौ मुहम्मद अस्थाना । तुम बेचून कहो यही ठेकाना ॥
चारो फिरिश्ते सलामालेक कीना । तब हम आगेका पग दीना ॥

मोकाम । ५

तहँते चले अचिंत ठेकाना । एक असंख्य सुन्य परमाना ॥
हाहूत मोकामको वही ठेकाना । आगे है सोहं बंधाना ॥

मोकाम । ६

तीन असंख्य शून्य परमानी । बाहुत मोकाम सो कहो बखानी ॥
नवी कवीर चले तेहि आगे । मूल सुरति बैठे अनुरागे ॥

मोकाम । ७

पांच असंख सुन्न विच आही । सात मोकाम कहत है ताही ॥

मोकाम । ८

इच्छा सुरतिके पहुँचे द्वीपा । चार असंख है लोक समीपा ॥
ताको नाम राहूत मोकामा । नबी कबीर पँहुचे तेहि ठामा ॥

मोकाम । ९

तहँते सहज द्वीप परमाना । दोय असंख तहँाते जाना ॥
ताहि मोकाम नाम आहूता । सोभा ताकी देख बहूता ॥

मोकाम । •

साखी-पहुँचे जायके लोक जहँ, सन्त असंख दस लाख ॥
सो मोकाम जाहूतका, दसस मोकाम यह भाख ॥

चौपाई ।

सलामा लेक तहँा हमकीना । दस्ताबोस उनहु उठिलीना ॥
तहँते अमरलोकको छोरा । नबी कबीर पहुंच तेहि ठौरा ॥
अमरलोकके हंस सब आये । तिनकी सोभा कही न जाये
भरि भरि अंक मिले तहँ आये । देखि मुहम्मद रहे भुलाये ॥
सब मिलि हंस गये पुनि तहँवा । साहेब तखत पै बैठे जहँवा ॥
जगर मगर छतर उजिराया । आम धनी का कहो बिहारा ॥
असंख भानु पुरुष उजियारा । अमरलोक को कहो विस्तारा ॥
सकल हंस तहँ दरशन पाई । तिनकी सोभा बरनि न जाई ॥
तहँवा जाय बंदगी कीना । नबी भये जो बहुत अधीना ॥

मुहम्मदवचन ।

चूक हमार बकस कर दीजै । जो तुम कहो सोई हम कीजै ॥

पुरुषवचन ।

कहु मुक्तामनि बेगि तुम आये । दूसर कौन सँग ले आये ॥

मुक्तामनिवचन ।

तब हम बचन पुरुषसे कीना । दोउ कर जोर बंदगी कीना ॥
तुम जो राज निरञ्जन दीना । तापर हुकुम अक्षरको कीना ॥
दोऊ अंश दोउ दीन चलाये । तामें सृष्टी पकडि भुलाये ॥
तामें एक सो हम ले आये । सो तो तुम्हरे कदम दिखाये ॥

नबी मुहम्मद बन्दगी कीना। दर्शन पाय भये लौलीना॥
तहँते फिर मृत्यु लोकचलिआये। निजमान कहे पानहु पाये॥
तुम आपना कौल भरि देहो। पीछे पान जीवको पैहो॥
साखी-शब्द भरोसे नामके, दिया नबीको पान॥
तब हम साँचे मानि हैं, जब फिर मिलोगे आन॥

कबीरवचन- चौपाई।

तुम अपनो फरमान चलाई। खुद को भेद तुम धरो छिपाई॥
जो यह भेद तुम प्रकट करिहो। तो तुम कोल के बारह परिहो॥
चारो कलमा प्रकट भाखो। पचवाँ कलमा गुप्त जो राखो॥
पचवाँ कलमा इल्म फकीरी। जाके पढ कुफ्र हो दूरी॥
हम काशीको जात हैं भाई। तबलो तुम अपनो कौल बजाई॥
तुम पर दाया समरथ केरी। पांचों कलमा दिलमें फेरी॥
साखी-हम काशी को जात हैं, तुम मक्के अस्थान॥
हम रामानन्द गुरु करें, तुम देओ जगत फरमान॥
फरमान जगतको दीजिये, उलटी अदल चलाय॥
तुम कलमाका हुक्म ले, निर्भय निशान बजाय॥

इति श्रीबोधसागरे कबीरधर्मदास सम्वादे मुहम्मद
बोध वर्णनोनाम नवमस्तरंगः।

अथ ग्रन्थसागर।

यद्यपि साधारणतः देखनेमें यह ग्रंथ भी मुसलमानी धर्म के प्रवर्तक मुहम्मदको कबीर साहिबके बोध देनेका देख पडता है तथापि इसका भी अर्थ आध्यात्मिक है क्यों कि, मुहम्मद साहब के जीवन चरित्र में लिखा है, कि इनके माता पिता

दोनोंही ईश्वरविमुख मूर्तिपूजक थे उन्हीसे उनकी उत्पत्ति हुई थी। इसका आशय यह है कि, प्रकृतिपुरुषजब संसारमुख होते हैं। तब ही अन्तःकरण बिशिष्ट होकर चैतन्य जीव नाम धारी होताहै। अर्थात् मुहम्मदसे आशय है अन्तःकरण विशिष्ट चैतन्य अर्थात् जीवसे ॥

फिर मुहम्मद साहबके उत्पन्न होतेही उनकी माताकी मृत्यु होगयीथी और पिता तो प्रथमही मरचुकाथा इसकारण उनके जन्म लेनेके पश्चात् उनकी फूफूने उनका पोषण पालनकियाथा उसीने अपने गोद में उन्हे लियाथा इसका आशय यह है कि, जब जीव अन्तःकरण विशिष्ट होताहै तब पुरुष प्रकृतिका तो अभाव होजाता है अर्थात् स्वरूपविस्मृति होती हैं और देहकी प्राप्ति होती है और देहही द्वारा अन्तःकरण बडा होता है।

आगे चल कर मुहम्मदसाहबने चौदह विवाह किये है सो जीवका चौदह इन्द्रियों के साथ अहंभाव करना है।

आगे चल कर चालीस वर्षकी अवस्थामें मुहम्मद साहबको पैगम्बरी मिलीहै सो जब यहजीव पाँच ज्ञानेन्द्री, पांच कर्मेन्द्री, पच्चीस प्रकृति और पंचप्राणका विचार करके उससे आपको अलग जानने लगता है तब यह मोक्षअधिकारी होताहै यही पैगम्बरी मिलना है।

पैगम्बरी मिलनें पर मुहम्मद साहबने जिहाद करके काफिरों को मारना आरम्भ किया था। और काफिरोंके उत्पात करनें पर मक्का छोडकर मदीनाको गये थे। सो जब यह जीव अधिकारी होकर विषयमुख इन्द्रियों को साहिब मुख होनेंके लिये उनका निरोध करता है तब इन्द्रियाँ बहुत उत्पात मचाती हैं तब जीव प्रवृत्तिरूप मक्कानगरको छोडकर निवृत्तिरूप मदीनामें जाताहै।

अर्थात् प्रवृत्तिसे उदासीन होकर निवृत्ति को धारण करता है। और आसुरी सम्पत्ति रूप काफिरों को दैवी सम्पत्ति रूप फौज की सहायतासे मारता है।

इससे भी आगे बढकर मुहम्मद साहब मेआराज को जाते हैं। इस मेआराजके विषयमें अनेक मतभेद हैं। जिसका वर्णन स्वामी प्रमानन्दजीने कवीरमन्शूरमें बहुत उत्तम रीतिसे कियाहै पाठकोंके जाननेके लिये उर्दू कवीर मन्शूरसे अनुवाद करके यहां लिखताहूँ। स्वामी प्रमानन्दजीने प्रमाणके लिये मुसलमानीकिताबोंके अरबी प्रमाण दियेहैं किन्तु उन प्रमाणोंका हिन्दी पाठकोंको कुछ उपयोग न होनेसे केवल उनका आशय दिखा दिया है।

मुहम्मद साहबके मेआराजका वर्णन।

मुहम्मद साहबके मेआराजके विषयमें मुसलमानोंके भिन्न २ मतहै। जो उनके हदीस और किताबोंसे प्रगटहै।

तारीख मुहम्मदी में लिखाहै कि, जब मुहम्मद साहबको पैगम्बरी करते बारह वर्ष बीत गये अर्थात् उनकी बावनवर्षकी अवस्था हुई तब एक रातको-जिबराईल और मेकाईल जो फिरिश्तों के मुखियों में से हैं मुहम्मद साहब के पास आये और उनका सीना (कलेजा) चीर कर उसमें से सब पाप और बुरे संकल्पों को धोकर शुद्ध कर दिया और जब उनका हृदय (अंतःकरण) शुद्ध होगया तब उन्हें एक ऐसे जानवर पर जिसका शिर तो मनुष्योंका था और नीचेका धड बिच्छी के समान था सवार कराकर खुदाके पास लेगये जिबराईल ने तो रिकाब और मेकाईलने उसका बाग पकडा। इस प्रकारसे वह रवाना हुए। चलते २ वे सबसे पहले बैतअकसा अर्थात् बडे हैकल अर्थात् एक बडे भारी बृतके निकट पहुँचे। वहाँ बहुतसे फिरिश्ते

मुहम्मद साहबको प्रणाम करनेको आये जहाँ वह बुराक बाँधकर जब भीतर गये तब वहाँ सब पैगम्बरोंकी आत्मा को देखा। फिर एक सीढी आकाशसे उतरी अरबी भाषामें जिसे असआराज कहतेहैं फिर मुहम्मद साहब बुर्राकपर सवार होकर उस सीढी के मार्ग से ऊपर को चढे। जब प्रथम आकाश पर पहुँचे तब वहांका द्वार जिबराईल ने खुलवाया और सब भीतर गये। भीतर पहुँचने पर देखा कि, हजरत आदम बैठे हुए हैं और उनके बाईं ओर नरकका द्वार खुला हुआहै और दाहिनी ओर स्वर्गका। नरककी ओर देख कर हजरत आदम रोते हैं और स्वर्ग की ओर देखकर हँसते हैं। इस प्रकार से प्रत्येक आकाश पर होते हुए जिबराईल मुहम्मद साहब को जब सदरँह के द्वार पर ले गये तब वहाँसे जिबराईल पीछे हो लिये। आगे चल कर एक सुनहले पर्दे के निकट पहुंच कर जिबराईल ने कहा कि इससे आगे हम नहीं जा सकते आप स्वयम् जाइये। फिर वहां से मुहम्मद साहब ने अकेले सत्तर मंजिल पार किया। सत्तर पर्दे पार होकर बुर्राक भी ठहरगया और वहां से एक पक्षी जिसे ज़फ़ ज़फ़ कहते हैं आया और उस पर चढ कर मुहम्मद साहब खुदाके पास गये और वहां उन्होंने खुदा से बहुत कुछ वार्तालाप किया और अपने धर्मके सब नियम उनको वहांहीसे मिले जिसको लेकर वह लौट कर अपने स्थान पर चले आये। इस स्थान पर लिखा है कि यह सब बातें इतनी जल्दी हुई थीं कि, मुहम्मद साहेब के बुर्राक पर सवार होकर जाते समय एक कटोराको धक्का लगा था जो पानी से भरा हुआथा। सो धक्का लगतेही वह टेढा होगयाथा। मुहम्मद साहेब इतनी जल्दी लौटकर आये कि, उस कटोरे का पानी अभीतक गिरने नहीं पायाथा और

इसको उन्होंने आकर सीधा करके शेष पानी को गिरने से बचाया। किन्तु उपरोक्त सत्तर पर्दे जिनको मुहम्मद साहबने अकेलेही पार कियाथा उनमें से एक २ की दूरी इतनीथी कि, पाँचसौ वर्ष तक वेग पूर्वक चलने से पूरा होता था ऐसे सत्तर पर्दोंको मुहम्मद साहब ने पार किया। और इधर लौट कर आने पर क्षण मात्र से अधिक समय नहीं लगा। मुसलमानी धर्ममें इसी वृत्तान्तको मुहम्मद साहबका मेआराज होना कहते हैं। इसी विषयमें मुसलमानी धर्मके बडे२ पण्डितोंमें बहुत मतभेद हैं। कोई तो कहता है कि, मुहम्मद साहबने स्वप्न देखाथा. कोई कहताहै केवल संकल्प से वहाँ पहुँचे थे, कोई कहता है केवल प्रथम भूमिका (बैतुलअकसा) तक गये थे, कोई कहता है कि, अन्तरदृष्टिसे मुहम्मद साहेब वहाँ पहुँचे, कोई कहताहै केवल जिबराईलको देखा खुदाको नहीं देखा, कोई कहताहै पांच-भौतिक शरीर सहितही मुहम्मद साहेब आसमानपर गये और इसी प्रत्यक्षकी दृष्टिसे खुदाको देखा। विस्तार भयसे अधिक मत भेदका लिखना छोडकर यथार्थ आशयकी ओर झुकता हूँ।

पैगम्बरी मिलनेके बारहवें वर्षके पश्चात्मुहम्मद साहबेको मे-आरांज हुआ था उसका आशय है कि, जब मुमुक्षु श्रवण मनन निदिध्यासन द्वारा बारह महावाक्यका विचार करलेताहै तब यह मोक्ष का अधिकारी होता हैं। और ५२वर्षसे आशय हैं ५२ अक्षरसे सो जब यह ५२ अक्षर के वृत से बाहर होता है अर्थात् शब्द जालसे निकलता है तब इस को सच्चे सद्गुरु की शरणकी प्राप्ति होतीहै। जहाँ शुद्ध बुद्धि रूप जिबरा-ईल जो शुद्ध सतोगुण से प्राप्त होती है और शुद्ध संतोष रूप मेकाईल जो रजोगुण की शुद्धता से मिलताहै इसके साथ

होता है। और तमोगुण की शुद्धता से उत्पन्न हुए शौर्य्य (धीरता) रूप बुराकपर सवार होकर गुरुकी शिक्षा द्वारा यह ज्ञान की भूमिकाओंको पूर्ण करता हुआ यथार्थ पद को प्राप्त होता है। और यथार्थ पदको प्राप्त होकर जीवन मुक्त अवस्था से अन्य जीवों को उपदेश देकर काल जालसे छुडाता है।

इस मुहम्मद बोध ग्रन्थ के यथार्थ आशय को पारखी आत्मविद् गुरु अधिकार प्रति अनेक रूपकों में समझातेहैं और इसको आध्यात्मिकही अर्थ से ग्रहण करने के लिये दश मुकामी रेखताका भी प्रमाण है। सो यहां दशमुकामी रेखता लिख देता हूं।

दशमुकामी रेखता।

चला जब लोकको शोक सब त्यागिया हंसको रूप सतगुरु बनायी। भृग ज्यों कीटको पलटि भृङ्ग किया आप समरङ्ग दै ले उड़ायी। छोडि नासुत मलकूतको पहुंचिया विष्णुकी ठाकुरी दीख जायी। इंद्र कुबेर जहाँ रंभको नृत्यहै देव तेतीस कोटि रहायी ॥ १॥ छोडि बैकुंठको हंस आगे चला शुन्यमें ज्योति जगमग जगायी। ज्योति परकाशमें निरखि निस्तत्त्वको आप निर्भय हुआ भय मिटायी। अलख निर्गुण जेहि वेद स्तुतिकरै तीनहू देव को हैं पिताई। भगवान तिनके परे श्वेत मूरति धरे भागको आन तिनको रहायी ॥ २ ॥ चार मुक्काम पर खंड सोरह कहै अंडको छोर ह्यां ते रहायी। अंडके परे स्थान अचिंत को निरखिया हंस जब उहां जायी। सहस औ द्वादशै रूह हैं सङ्गमें करत कल्लोल अनहद बजायी। तासुके बदनकी कौन महिमा कहौं भासती देह अति नूर छायी॥ ३ ॥ महल कंचन बनें मणिक तामें जडे बैठ तहँ कलश अखंड छाजै। आचिंतके

परे स्थान सोहंका हंस छत्तीस तहँवा बिराजै। नूरका महल औ नूरकी भूमि है तहां आनंद सो द्वन्द्व भाजै। करत कल्लोल बहु भांतिसे संग यक हंस सोहंगके समाजै ॥ ४ ॥ हंस जब जात षट चक्रको वेधिके सातमुक्काममें नजर फेरा। सौहंगके परे सुरति इच्छा कही सहसवामन जहँ हंस हेरा। रूपकी राशिते रूप उनको बना नहीं ऊपमा इन्दु जौनिवेरा। सुरतिसे भेटिके शब्दको टेकि चढ़ि देखि मुक्काम अंकूर केरा ॥ ५ ॥ शून्यके बीचमें बिमल बैकुंठ जहाँ सहज अस्थान है गैब केरा। नवो मुक्काम यह हंस जब पहुंचिया पलक बिलंब ह्वाँ कियो डेरा। तहाँसे डोरि मकरतार ज्यों लागिया ताहि चढि हंस गो दै दरेरा॥ भये आनन्दसे फंद सब छोडिया पहुंचिया जहाँ सत्यलोक मेरा ॥ ६ ॥ हंसिनी हंस सब गाय बजायके साजिकै कलश वहि लेन आयें। युगन युग बीछुरे मिलैतुम आइकै प्रेम करि अङ्गसो अँग लाये। पुरुषने दर्श जब दीन्हिया हंसको तपनी बहु जनमकी तब नशाये। पलटिकै रूप जब एकसे कीन्हिया मनहुं तब भानु षोडश उगाये ॥ ७ ॥ पुहुपके द्वीप पीयूष भोजन करै शब्दकी देह जब हंस पायी पुहुपके सेहरा हंस औ हंसिनी सच्चिदानन्द शिर छत्रछायी। दिपैं बहु दामिनी दमक बहु भांति की जहाँ घन शब्दको घमंड लायी। लगे जहाँ बरषने गरज घनघोरिकै उठत तहँ शब्द धुनि अति सोहायी॥॥ ८॥ सुन सोह हंस तहँ यूत्थके यूत्थ है एकही नूर यक रङ्ग रागे। करत बिहार मन भामिनी मुक्तिमें कर्म औभर्म सब दूरि भागे। रङ्क और भूप कोइ परखि आवै नहीं करत कल्लोल बहु भाँति पागे। काम औ क्रोध मद लोभ अभिमान सब छाँड़ि पाखंड सत शब्द लागे ॥ ९ ॥पुरुषके बदनकी कौन महिमा कहौं जगत्में

ऊपमाय कछुनाहिं पायी । चन्द्र औ सूर गण ज्योति लागे नहीं एकही नक्ख परकाश भाई । पान परवान जिन वंशका पाइया पहुंचिया पुरुषके लोक जायी । कहैं कब्बीर यहि भांति सो पाइहौ सत्यकी राह सो प्रकट गायी ॥ १० ॥

देह नासूत रूवरे मलकूत और जीव जबरूत को रूह बखानें ॥
अरबी में लाहूत कहे जेहि निराकार मानि के मंजिल्ल ठानै ॥
आगे हाहूत लाहूत है बाहूत खुद खाविन्द जाहूत जानै ॥
सोई श्री राम पश्चाइ सबै जग नाहि पन्नाह यह अता गानै ॥

इसप्रकार से सत्यके खोजियोंको तो ऐसे ग्रन्थोंका अध्यात्मिक अर्थही ग्रहण करनेयोग्य है । और स्थूल अर्थ तो स्थूल बुद्धिवाले पक्षपातियोंके लियेही छोड देना उचित है।

इति ।



पृष्ठ (६८२) की टिप्पणीमें सूचित किये हुए दश मुकामोंका वर्णन।

प्रथम नासूत का वर्णन।

नासूत मुकाम सुमेरु पर्वतके उत्तर ओर पृथ्वी से छत्तीस सहस्र योजन ऊँचाहै और यहीं पर दयाअंश रहताहै और यह मायाका स्थान है-महामाया इस जगह अपने तेज सहित निवास करती है। और जब कबीरसाहब और मुहम्मदसाहब उस स्थानपर पहुँचे तब वहां हजरत दाऊद को बैठे तथा जबूर नामक पुस्तकको पढते पाया। वहां पहुँचकर कबीर साहबने अस्सलामअलैक कहा-तब हजरत दाऊद अलैकमस्सलाम कहकर उठ खडे हुए-और उनके हाथों को चूमकर बडी आवभगत किया-तब कबीर साहब मुहम्मद साहबको उस स्थानकी विशेषता और गुणोंको बतलाकर आगे चले।

दूसरे मलकूत का वृत्तान्त।

दूसरा स्थान मलकूत है-और यह स्थान नासूत से चौबीस सहस्र योजन ऊँचाई पर है-और पृथ्वीसे साठ सहस्र योजन की ऊँचाई पर है। और इस स्थानको दूसरे शब्दों में वैकुण्ठ कहते हैं, और यह वैकुण्ठ विष्णुका स्थान है-और इसी स्थानपर पाप पुण्यका लेखा लगताहै-और इस विष्णुकी सभामें ब्रह्मा विष्णु शिव इन्द्रादिक समस्त देवतागण उपस्थित रहतेहैं-इस विष्णुहीका नाम धर्म्मरायहै-और आपकी आज्ञासे नरक तथा वैकुण्ठ और योनिका फिरना आदि सब कुछ होता है-और इसी स्थान से विष्णु महाराजका परिभ्रमण समस्त पृथ्वी और आकाशादिमें हुआकरताहै। चित्रगुप्त जी विष्णु के मंत्री सबके पाप पुण्यका लेखा तथा हिसाब रखतेहैं। जब कबीर साहब मुहम्मद साहबको अपने साथ लेकर इस मलकूत पर पहुँचे-तो वहां मूसा को बैठे तौरेत पढता पाया--कबीर साहब नें वहां पहुँचकरमी सलामअलैक किया-मूसा सलामका उत्तर देकर उठे, और उनका हाथ चूमकर बडी आवभगत की तब कबीर साहबने मुहम्मद साहबको इस स्थान के समस्त गुण बतला तथा वहांके वृत्तान्त से विज्ञ कराकर आगे चले।

तीसरे जबरूत का वृत्तान्त।

तीसरा जबरूत है--इस जबरूत स्थान को कबीर साहबने झाँझरी द्वीप कहा है--और यह निर्गुण ब्रह्म अलख निरञ्जनका स्थान है जो तीनों लोकका कर्ता धर्ता है और यह स्थान वैकुण्ठसे अठारह करोड योजन ऊपरको ऊँचा है--यह बड़ा सुन्दर स्थान है--यहांपर चार करोड़ ज्योतिका प्रकाश है--और इस सभामें चारों फरिश्ते उपस्थित रहतेहैं-अर्थात् जिबराईल-इसराफिल इजराईल--और मेकाईल। इन्हीं चारोंको ब्रह्मा विष्णु शिव और यम इत्यादिके नामसे

पुकारते हैं । समस्त आज्ञाएँ इसी स्थानसे प्रचलित हुआ करती हैं--और चारों फिरिश्ते इन्हींके आज्ञाकारी हैं । वेद तथा पुस्तकें सबके प्रचार कर्ता यही हैं और आपहीके आज्ञाकारी तथा अधीन सब हैं । आद्या तथा निरञ्जन इसी राजधानीमें बैठकर तीनों लोकका राज्य करते हैं। जब कबीर साहब रसूल अल्लाहको साथ लेकर पहुँचे तो देखा कि हजरत ईसा वहां बैठे हुए इञ्जील पढरहे हैं । वहां पहुँचकर कबीर साहबने अस्सलामअलैक कहा और हजरत ईसा सलाचका उत्तर देकर उठ खडे हुए और उनके हाथको चूम लिया--तब कबीर साहब मुहम्मद साहबको उन स्थानों के गुणका विवरण बताकर आगे चले ।

चौथे लाहूतका वृत्तान्त ।

चौथा लाहूत है जबरूत और लाहूतके बीचमें ग्यारह पालंगका अन्तर है, और एक पालंग आठ करोड़ योजनका है, । यह लाहूत स्थान अक्षरका है यहां अक्षर और योगमाया रहते हैं यह बड़ा सुन्दर स्थान है । जब कबीर साहब और मोहम्मद साहब इस स्थानपर पहुँचे तब कबीर साहबने मोहम्मद साहबसे कहा कि हे मुहम्मद ! देखो यह तुम्हारा स्थान है--और यहांही वह अक्षर पुरुष जिस को तुम बेचून बेचेरा खुदा कहतेहो रहता है और उस स्थानके गुण दिखलाकर आगेको चले ।

पाँचवे हाहूतका वृत्तान्त ।

पाँचवाँ हाहूत है-- यह हाहूत स्थान एक असंख्य योजन शून्यके ऊपर है--अर्थात् लाहूत और हाहूतके बीचमें एक असंख्य योजन शून्य और अंधकार है--यह हाहूत स्थान अचिन्त पुरुषका है--यहाँ अचिन्त पुरुष सपत्नीक रहता है--और यह स्थान बडाही मनोहर है--अचिन्तके सामने तीन सौ अप्सराएँ नृत्य करती रहती हैं--और यह निःशंक तथा निर्द्वंद्व रहता है कबीर साहब इस स्थान और अचिन्त पुरुषका सब विवरण मुहम्मदसे कह करके आगे को चले।

छठवाँ बाहूत का वृत्तान्त ।

यह बाहूत छठा स्थान है । और बाहूत और हाहूतके बीचमें तीन असंख्य योजन शून्य और अँधेरा है और हाहूतसे बाहूत तीन असंख्य योजनकी उँचाईपर है--यह अत्यन्त मनोहर स्थान है इस स्थान में सोहं पुरुष रहता है--और सोहं पुरुषकी अर्धांगिनीका नाम ओहं है--यह सोहं पुरुष अपनी शक्ति ओहं सहित सिंहासनपर अधिकृत है--और उस स्थान में सदैव सोहंका शब्द सुनाई दिया करताहै । जब कबीर साहब मुहम्मद को लेकर इस स्थानपर पहुँचे तो वहांके समस्त गुणोंका विवरण उन्होंने उनसे किया और फिर आगे चले ।

सातवें साहूत का वृत्तान्त ।

यह साहूत वाहूतसे पाँच असंख्य योजन ऊँचा हैं, और बाहूत और साहूतके बीचमें पाँच असंख्य योजन शून्य और अत्यंत अंधकारहै।यह इच्छाका स्थानहै। इस स्थान की न्दरता तथा यहां की सुखसामग्रीकाभी विशेष विवरण है कबीर साहब मुहम्मद साहबको दिखलाकर आगे चले।

आठवें राहूत का वृत्तान्त।

राहूत साहूतके ऊपर चार असंख्य योजन ऊँचा है। साहूत तथा राहूतके बीच में चार असंख्य योजन शून्य और अत्यंत अंधकार है और इस राहूत स्थानमें अंकुर पुरुष अपनी शक्ति सहित रहता है-यह अत्यंत सुन्दर तथा मनोहर स्थान है। जब कबीर साहब मुहम्मद साहब को लेकर इस स्थानमें पहुँचे तो उसके सब गुण दिखलाकर आगे चले।

नवमें आहूत का वृत्तान्त।

यह राहूत के ऊपर दो असंख्य योजन ऊँचा है। और बीचमें शून्य तथा अंधकार है-इसस्थान में सहज पुरुष रहता हैं-और सत्यपुरुषका सबसे बडा पुत्र यही कहलाता है। यह नवाँ स्थान सबसे सुन्दर और आनन्द पूर्ण कहलाता है। कबीरसाहबने मुहम्मद साहब को वह स्थान दिखलाय और इसका विवरण करके फिर आगे को चले।

दशवें जाहूत का वृत्तान्त।

आहूत और जाहूत के बीचमें दश असंख्य लाख योजनका अन्तर है अर्थात् स्थान जाहूत आहूत के ऊपर दश असंख्य लाख योजन ऊँचा है और यही स्थान सत्यपुरुषका है इसकी सुन्दरताका विवरण किया नहीं जासकता है इसी स्थानसे कबीर साहब सत्यपुरुषकी आज्ञा लेकर पृथ्वीपर आया करते हैं और इसी स्थानके रसूक पाक है और इसी सत्य पुरुषके सत्यलोकमें जब हंस पहुचते हैं तब कालपुरुष उनको नमस्कार करता है और उन हंसका आवागमन फिर कभी नहीं होता। वे हंस सत्यपुरुषकी स्तुति किया करते है और वे सत्यपुरुषके स्वरूपको प्राप्त होजाते हैं: सत्यलोकके आधीन अठासी सहस्र द्वीप है और सब द्वीपों में सत्यगुरुके हंस आनन्द करते है उनके भोजन तथा वस्त्रादिका विवरण नहीं हो सकता हैं।

सत्यकबीराय नमः।

अथ श्रीबोधसागरे

दशमस्तरंगः

श्री ग्रन्थ काफिर बोध।



मंगलाचरण-सोरठा।

वन्दौ श्री सत्य कबीर, कुफर नशावन जगत गुरु ॥
पावों सत मति धारि, टूटे कुफर जँजाल सब ॥

ग्रन्थारम्भः।

कौन सो काफिर कौन दुर्दार। दोऊ शब्दका करो विचार ॥
गुस्सा काफिर मेनी दुर्दार। दोऊ शब्दका यही विचार ॥
हम नहिं काफिर हम हैं फकीर। जाइ बैठे सरवरके तीर ॥
चोरी नारी दरोग सो डरैं। राह सो लेखा सबका करैं ॥
नंगे पायन पृथ्वी फिरै। हाट न लूटै बाट न परै ॥
हमतो(बाबा)किसीका कछुन विगारै। दर्दमन्द दिल दया सवाँरै ॥
दुनिया लोकसो उलटी करै। सत्यनाम सदा उच्चरै ॥
सिक्का देखि न कहिये फकीर। फकीर न कूटे पुरानी लकीर ॥
काफिर सो कुफराना करे। अलह खुदाय सो नाहीं डरे ॥
करे न बन्दगी फिरे दिवाना। गरभ बांधि फिरै गैबाना ॥
बोल कुबोल सेबै विसरावै। खून खराफातको दूरि बहावै ॥
दिल में चोर कमर में कत्ती। लोगन के घर भाजे रत्ती ॥
अलह के नामे बाँटे खाना। सो कहिये सांचे मुसलमाना ॥
मुसलमान मुसावे आप। सिदक सबूरी कलमा पाक ॥
खडी ना छेडे पडी न खाय। सो मुसलमान बिहिश्तको जाय ॥

---

१ क्रोध। २ अभिमान। ३ व्यभिचार। ४ जारी।

कलमा पढै न आवै बिहिस्त। हिरदे रहे पाप की दृष्टि ॥ हिन्दु मुसलमां खुदाके बन्दे ।हमतो योगी(किसी का)नराखेछन्दे । देवी देहरा मसीद मिनार । हमरे तो एक नाम अधार ॥ टाकी ले कौन ऊपर चढै । पाव न दाबें हाथ न गढै॥ तहां न अग्नि पवन का डर । ऐसा अलखपुरुष (जिन्दपीर)का घर चूना पत्थर बनाइया दादाआदम की करनी ॥ हमतो रहें अलेख पुरुष जिन्दा पीर की शरनी ॥ मक्खी जाय बंधनमें परी। छानत छानत ताही गिरी ॥ काजी मुलना करे बिचार । मक्खी किया बडा अहँकार ॥ मक्खी तो गाये भखे। मक्खी तो सुअर भखे॥ मक्खी तो हलाल भखे। मक्खी तो मुर्दार भखे॥ मक्खी जायबिगारे खाना । तहां न चले बादशाह परवाना ॥ कोरा कलमा बहुतेरा बोलै ॥ खैर मिहर का खीसा न खोलै॥ मिहर न बांटे मुर्दार खोरा। खैर न बांटे अल्लहका चोरा ॥ अरस परस बीच समाना। मोम दिल मोम दिल जाना ॥ सिदके सो परि पहिचाना । दर्दमन्द दुरवेश बखाना ॥ रहमत है मुरशिद पीरको । जहमत सूम महसूदको ॥ नेश्चयपरिचे निमाज गुजारै । श्रवणनेत्रको बेर निहारे ॥ मुहम्मद मुहम्मद क्या करें। कुरान कलमा क्या पढ़ै ॥ किधर किधर की राह बतावे। विनु गुरु पीर राह ना पावे॥

साखी-हाजी गाजी दोऊ गुरु, चेला खोजो दस दर्वाजा ॥
अलख पुरुष कहँ मा थनबाओ, इस विधि करैं निमाजा ॥
सभै साचे काजी, सांचे सांचे मुलना वेद कुरान ॥

कहै कबीर आबसो सब आलम उपजाना ॥ हिन्दू कहिये कीमुसल माना॥ राम रहीम बसे एक थाना।मनको जाने सोइ मोलाना ॥ दरको जाने सोई दरवेश। हमतो बाबा नेकी बदी सो न्यारा ॥ दुनिया मति कोइ लावे दोष। हम तो क ँ अकेलेदस्त ॥

ताका साहेब मक्का वस्त । मकवन्तका साहेब अकिल मन्द ॥
अकिलमन्द अकिल सोजाना । मन मुरीद दोस्ती दाना ॥
सहर गदाई कौन यार । सिर खुरदनी कौन यार ॥
बन्दी खाने कौन यार । तख्त बादशाही कौन यार ॥
काया यार सिर खुदनी । दिल यार मार माहीं ॥
जीव यार बन्दी खाने । मंन यार तख्त बादशाही ॥
मनलाल दिललाललालपोतदा । रहमसा ही हमसाहसाहपोतदार ॥

इति कबीर साहब का वचन उचार विचार

अथ खान मुहम्मद अली पादशाहका प्रबोध ।

कलिक कीमोक लिस रसमें की चशमें । खदयर संयम करदम । ओजूद राह चकित करदम ।

औवल- अक्ल पीर है । मन मुरीद है । तन शहीद है असल गदाई है । तकबुर दुशमन है । गुस्सा हराम है । नफस शैतान है । चोरी लानती है । जुवारी पलीदी है । अदब आदि है । आदब कम असल है । राह पीर है । बेराह बेपीर है । सांह बिहिश्त है झूठ दोजख है । मोमदिल पाक है । संगदि-नापाक है । हिर्स हैवान है । बेहिर्स बली है ॥

लाइ लुई हरकत है । अचेतबेगुलाम है । असलजादे को सलाम है । कृतहीन जर्दरू है । दाना जौहरी है । असलकी दोस्ती है । दानो शायर है । बूझ महबूब है । बन्दगी कबूल है । अल्लाह नूर है । आलम हद है । साहिब बेहद है । यकीन मुसलमान है । शील रोजा है । शर्म सुन्नत है । ईमान मुसलमान है । बेईमान बेदीन है । दिल दलील है । बाँग बलेल है । फकीरी सबूरी है । नासबूरी मक्कारी है । दरोग द्वन्द है ।

इति समझौता ।

अथ बन्द ।

प्रथमबोलिये मूल बन्ध । दुजे बोलिये कमर बन्ध । तीजे बोलिये लंगोट बन्ध । पाँचवें बोलिये दानिश बन्ध । छठै बोलिये शस्त्र बन्ध । सातवाँ बोलिये सहस बन्ध । आठवाँ बोलिये अहूठ हाथकी काया । जाका मर्म काहू विरले पाया ॥ मक्के हिर्स मदीने छाया ।औवल पीर हिन्दू कौबल वीर मुसलमान कहाया ॥ मुसलमानकी काटी चोंचनी हिन्दू के छेदे कान । बोलता ब्रह्म नहीं हिन्दू नहीं मुसलमान । दादा आदम ने गाया । बडे बडे पीरन को फरमाया । खुदाने अली पादशाह को चिताया । हिम्मते बन्दा मददे खुदाया । दुआ फकीरा रहम अल्लाह । कदम दर्वेशाँ रद्द बलाय । दादा आदम मामा हौआ । मक्के मदीने में चढा तावा । पहिली रोटी फकीर को रवा । ना देवे रोटी तो टूटे कठवता फूटे तवा । बैठी रहो मामा हौवा । कुफ्र वले अपनी रावा । इतनी सवाल रतनहाजी ने कह्यो । कहै कवीर पीर को जानी । काफिर बोध सम्पूरण वानी ॥

इति श्री काफिरबोध प्रथम मंजिल समाप्त ।

फिरिश्तोंका ब्यान ।

१ औवल फिरिश्ता बसर है । जसे खुदाकी सूरत मूरत नहीं है आदि अन्त नहीं है वैसे बसरकाभी कोई रूप रेख नहीं है । खुदाने यह फिरिश्ता सब । जीवधारीके संग लगादिया है जो हरएकको बतलाता है कि, देख कर चलो ठोकर मत खाओ ॥

२ दुसरा फिरिश्ता समंअ (कान) है उसके द्वारा खुदा उपदेश करता है कि, मकरूह (बुरा) मरगूब (भला) आवाज और दोस्त दुशमन की बात को सुनो और समझो ।

---

१ नेत्रेन्द्री, कर्णेन्द्री ।

३ तीसरा फिरिश्ता शामा (घ्राणेन्द्रिय) है। यह फिरिश्ता सुगन्धि दुर्गन्धि को बतलाता है ।

४ चौथा फिरश्ता लमस (स्पर्शेन्द्रिय) है जो बतलाता है कठिन और कोमल को ।

५ पाँचवा फिरिश्ता जायका (रसेन्द्री) है जो छः प्रकार के रसों का ज्ञान बतलाता है ।

६ छठा फिरिश्ता हाथ है जो हाथ से करने योग्य कामों को सिखाता है।

७ सातवाँ फिरिश्ता पावँ है जो चलने फिरनेको बतलाताहै।

८ आठवाँ फिरिश्ता जबान (जिह्वा) है जो भला और बुरा वचन बोलने को सिखाता है।

९ नवाँ फिरिश्ता आलातनासुल (जनेन्द्रिय) है जो मूत्र त्याग करने और-संसारकी वृद्धि करने का मार्ग बतलाता है।

१० दशवाँ फिरिश्ता मेकअद (गुदेन्द्रिय) है जो शरीर के मलों को बाहर निकालताहै।

११ ग्यारहवाँ फिरिश्ता दिल (मन) है जो इच्छा उत्पन्न करता है और राग द्वेष करता है। दिल वह नहीं है जिसको राक्षस मांसाहारी लोग कबाब बनाकर खाते हैं।

१२ बारवाँ फिरिश्ता इदराक (चित) है जो सर्व पदार्थोंका चिंतन करता है ।

१३ तेरहवाँ फिरिश्ता अहंकार है जो जीवन की रक्षा करता है।

१४ चौदहवाँ फिरिश्ता अक्ल (ज्ञान) है जिसे जिबरईल कहते हैं और जो सबके भेद को जानता है और सबको उपयुक्त मार्ग बतलाता है ।

१५ पन्द्रहवाँ फिरिश्ता शहवत (रजोगुण) है जिसको ब्रह्मा कहते हैं।

१६ सोलहवाँ तमीज (सतोगुण) है जो सत्य असत्य का विचार बतलाताहै इसीको विष्णु कहते हैं।

१७ सतरहवाँ फिरिश्ता गजब (तमोगुण) है जो दुखदाई पदार्थोंसे रक्षा करताहै इसी को शिव कहते हैं।

इसी प्रकार पांच तत्त्व और सर्व प्रकृतियाँ आदि संसारके सर्व वस्तु फिरिश्तो हैं और जिसप्रकार शरीर का राजा जीवहै उसी प्रकार सब जड चैतन्य का स्वामी साहिब हैं जिसके शरणमें जानेसे अटल सुख प्राप्त होताहै।

इति काफिरबोध।

इति श्रीबोधसागरान्तर्गत काफिरबोध नामक दशमस्तरंगः।

ज्ञातव्य।

काफिर बोध पुस्तक के प्रथम मंजिलकी एकही प्रति मेरे पास है। बहुत प्रयत्न करने पर भी उसकी दूसरी प्रति न मिल सकी इस कारण जैसी प्रति थी उसीके अनुसार ही रक्खाहै। इस ग्रन्थ में फारसी और अरबी शब्दों का बहुत प्रयोग किया है किन्तु यह ग्रन्थ लिखा हुआ अशुद्ध हिन्दी अक्षरोंमें मिलाहै और दूसरी प्रति न रहने तथा छपने की शीघ्रता के कारण से कितने शब्द शुद्धरन जान पडने के कारण जो त्रुटियाँ रह गयीहैं उनको दूर करने के लिये प्रयत्न कररहा हुं प्रयत्न सफल होने पर दूसरी आवृत्ति में ठीक कर दिया जायगा।

इति।

इति

श्रीबोधसागरान्तर्गत

ग्रन्थ मुहम्मदबोधः

और

काफिरबोधः

समाप्तः ।



भारतपथिक कबीरपंथी-
स्वामी श्रीयुगलानन्दद्वारासंशोधित।

श्री-सुलतानबोध।

खेमराज श्रीकृष्णदासने
मुम्बई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेसमें
छापकर प्रकाशित किया।

संवत् १९८०, शके १८४५;

सर्वाधिकार रक्षित है.

सत्य नाम।



श्री कबीर साहिब।



अथ श्रीबोधसागरे

एकादशस्तरंगः।

श्रीग्रन्थ मुलतानबोध।



मंगलाचरण-दोहा।

अजर अमर सत नाम है, भंजे शोक तम पुंज ॥
तासु चरण मन रमि रहहु, कमल भौंर जिमि गुंज ॥

धर्मदास वचन-चौपाई।

धर्मदास उठि विन्ती लाये। सतगुरु मोहि कहो समुझाये ॥
कैसे करियें तजिय संसारा। ताको समरथ कहो विचारा ॥
आगे भये बलख के मीरा। माया सुख तजि भये फकीरा ॥
कही विधि तिन तजि पादशाई। सब वृत्तांत कहो समझाई ॥

सतगुरु वचन

कहें कबीर सुनो धर्मदासा। बलख भेद कहूं तुम पासा ॥
बलख शहर एक नगर अनूपा। तहँ मुलतान यक ज्ञान सरूपा ॥
बादशाह शाहन सरदारू। प्रेम प्रीति मन माहिं विचारू ॥
इब्राहीम अद्धम जेहि माना। राज माहिं भक्ती जिन ठाना ॥
विरह उठी शाह मन माही। कारज अपना कीना चाही ॥
मनुषा जनम अमोलक पायी। ऐसे तन पाइ खुदा मिलि जायी ॥
जो यहि अवसर अल्लह न पाया। क्षण महँ विनशि जायगी काया ॥
ऐसी फिकर उठी मन माई। तब षट दर्शन लिये बुलाई ॥

पण्डित साधु सन्यासी आये। जोगी जंगम यती बुलाये॥
ज्ञानी ध्यानी सबके पीरा। काजी मुल्ला सेख फकीरा॥
सब मिलि भेष जुड़े तहँ आयी। तिनसों वचन बूझा अर्थायी॥
तबहि शाह सब टेर सुनायी। अल्लह रूप मुहि देहु दिखायी॥
खुदा मिले कह कौन उपाई। कौन राम अरु कौन खुदाई॥
एक खुदा यक और को होई। काहे भयो एक अस दोई॥
दोऊ दीन मिलि कहो समझायी। दोमें सांच कौन ठहराई॥
दोउ कर जोडि सबन सो कहेऊ। बहुत अधीन आप तहँ भयऊ॥
होय अधीन तब शीस नवायी। सबसे बूझे मन चित लायी॥
सब मिलि कहो खुदाइ सन्देशा। मेरे मनका मेटो अँदेशा॥
साहब बसे कौन से देशा। सो मुहि बात कहो दुरवेशा॥
दोऊ राह यह किनहि चलायी। किन वैकुण्ठ विहिस्त बनायी॥
एती सब मिलि कहो दिवाना। नातो दूर करो कुफराना॥
बिन देखे सबही दिल धरहीं। कान छिदाय अरु खतना करहीं॥
हमरे दिलका मेटो अँदेशा। हम माने तुमरो उपदेशा॥
हिन्दू सबे बैकुण्ठहि धावैं। मुसलमान विहश्त ठहरावैं॥
इनमें कहां खुदा का बासा। विन देखे कीनो विश्वासा॥
किनहु खुदाका घर नहिं पाया। झूठ झूठ सब द्वंद मचाया॥
खुदाकी खबर न कोइ बताही। सबको जडो कोठरी माहीं॥
दोऊ दीन यह किन भरमाया। खुदाकी खबर किनहु नहिं पाया॥
साखी—दोऊ दीन समझावहू, मो मन बहुत अन्देश॥
कौन खुदा दो दीन रचे, बसे कौन सो देश॥
कोपे इब्राहीम तब, ये सब भरम भुलाहिं॥
खुदा भेद कोउ ना कहे, डारो कोठरि माहिं॥

चौपाई ।

चली जो बात दशो दिशि जायी । षट दर्शनको साधु रोकायी ॥
इतनीबात काशी सुनि पाई । तब उठि धाये आप गुसाइ ॥
जिन्दा रूप गुसाई कीना । जाइ शाह को दर्शन दीना ॥
बैठे तख्त आप सुलताना । जिन्दा दुआसलामा कीना ॥
दोआ सलाम हमरी नहिं माना । माया के मद गर्व भुलाना ॥

सुलतान वचन ।

कहे सुलतान सुनो दुरवेशा । जिन्दा रूप कौन को भेशा ॥
कहाँ से आये कहाँ तुम जाओ । कौन काज हमरे घर आओ ॥
हम पूछें जो खुदा की बानी । इल्म अल्लाह की कहो निशानी ॥
कुदरत की कोइ आदि बतावैं । सोई मुर्शिद पीर कहावै ॥
हमरे दिल में विरह बहु आया । खुदा मिलन कोउ नाहिं बताया ॥

जिन्दा वचन ।

जिन्दा कहे सुनो रे भाई । षट दर्शन तुम देहु छुडाई ॥
तब हम तुम सों ज्ञान करावें । संशय तुम्हारो सकल मिटावें ॥
षट दर्शन को छोडि तुम देओ । जो चाहो सो हमसो लेओ ॥
अब जनि शंका मानो भाई । जो पूछो सो देउँ बताई ॥

सुलतान वचन ।

कहे सुलतान सुनो दुरवेशा । कैसे मिटै हमार अँदेशा ॥
ऐसी बात कहो अधिकाई । क्या तुम दुसरे आय खुदाई ॥

जिन्दा वचन ।

तब हम एक कला दिखलायी । भैंसा पास यक साख भरायी ॥
जब दुरवेश भैंसा लगि जायी । भैंसा से यक वचन सुनायी ॥
भैंसा कहै सांचे दुर्वेशा । मानो शाह इनको उपदेशा ॥
यदि दुर्वेश खुदा समजानो । इनसे कर्त्ता और न मानो ॥

सुनिके शाह अचम्भो भयऊ । भैंसा साख सो कैसे भरेऊ ॥
यह तो पीर औलिया आये । भैंसे पास इन साख दिवाये ॥
शाहके दिल परतीति अस आयी। यह दुरवेश खुद आय रहायी॥
षट दर्शन को बन्ध छुडाये । बन्दी छोर कहिकहि सब जाये ॥
साखी—बन्दीछोर कहाइया, शहर बलख मंझार ॥
छूटे बन्ध सब भेष को, धन धन कहे संसार ॥

चौपाई ।

तब सुलतान अपने मन जाना। यह दुर्वेश अविगत ठाना ॥
भैंसा पास इन साख भराहीं । यह तो गति आदम की नाहीं ॥
इती कला जान जब पाये। फिरि जिन्दा से पूछन लाये॥

सुलतान वचन ।

कहे सुलतान सुनो दुवशा । जिन्दा रूप कौनको भेशा ॥
कहाँ से आये कहाँ तुम जाओ । इतनी सनद कही समुझाओ ॥
तुमही मुर्शिद पीर हमारा । हम अपने दिल कीन विचारा ॥
साखी—कहाँ से आये जिन्द जी, फेर कहाँ तुम जाव ॥
हिन्दु तुरक में कौन हो, मोहि कही समझाव ॥

जिन्दा वचन—चौपाई ।

कहे दुवश सुनो रे भाई । जिन्दा रूप खुदाको आई ॥
अल्लाह आप सकल घटमाहीं । दोऊ दीन दोउ राह चलाहीं ॥
हम दोजखतजि विहिश्त को जाये। सौंपन एक चीज तोहि आये॥
तुम हो दीन दुनी सुलताना । राखो मियाँ सुई सहिदाना ॥
जब तुम आओगे बिहिश्तके माहीं । तब हम सुई लेब तुम पाहीं
यही काज तुमरे घर आये । मियाँ सुई धरो तुव ठाय ॥
दीन दुनी के बादशाह कहाओ । इतनी सनद हमारी लाओ ॥
सुई देव जब विहिश्त मँझारा । तब हम मानें सांच तुम्हारा ॥
हँसकर शाह सुई कर लीना । सहस्र सुई का कौल तब दीना॥

सुलतान वचन।

जाओ विहिश्त मानो विश्वासा। सहस्र सुई लेना हम पासा॥

सतगुर वचन।

इतनी गोष्ठि शाह सो कीना। तब तहाँ से पयाना दीना॥
एक सुई उन हम सो लीना। सहस्र सुईका कौल तब दीना॥
साखी—इतना कहि हम उठि चले, चानक शाह लगाय॥
नीमशाम के वक्त में, जुडी अदालत आय॥

चौपाई

सबमिलि आय जुडे दरिखाना। बैठे आय तहां सुलताना॥
शाह के हाथ सुई जब देखा। तब वजीर मन कीन विवेखा॥
हाथ जोडिकै विन्ती लावा। कैसे सुई हाथ में आवा॥

वजीर बचन

कैसे सुई हाथमें लीना। कारन कौन कहो हम चीना॥

सुलतान वचन।

कहे सुलतान सुनो दीवाना। बन्दा अल्लाह दिया सहिदाना॥
दुरवेश एक यहां चलि आया। जिन या सुई दीन हम पाया॥
कहा दुरवेश विहिश्त तुम आव। तब या सुई लेब तहि ठाँव॥
ऐसे वचन कह्यो दुर्वेशा। सुई हम देन कही तेहि देशा॥
एक सुई हम उनसे लीना। सहस्र सुईका कौल हम दीना॥
इतना वचन कहे सुलताने। सुनत वचन विन्ती तिनठाने॥

दीवान वचन।

दीवान कहे सुनो हो साई। सुई विहिस्त कौन विधिजाई॥
गाम परगना औ ठकुराई। सबही धरा रहे यहि ठाई॥
तात मातु सुत सुन्दर दारा। तन धन धाम सकल परिवारा॥

---

१ दीवान।

अंत समय ये काम न आवै । आपुचिन्हे तब जिव सुख पावै॥
जहँ लगि जग में दृष्टि दिखाहीं। सो सब विनशि जाय क्षणमाहीं॥
जतन करे बहुत सुख पावे । सो तन जले गडे मिटि जावे॥
ऐसे कहि वजीर शिर नायो। कैसे सुई संग लै जायो॥
समझि देखु अपने दिलमाहीं । सुई संग कौन विधि जाहीं॥

सुलतान वचन।

तब सुलतान वचन अस कहई। सुनो वजीर मता यक आहई॥
इतना लशकर संगलै जायब ।हस्ती चार सो सुई भरायब॥

वजीर वचन।

हस्ती संग चले नहिं शाहा । खोज करो तुम दिलके माहा॥
हस्ती घोडा माल खजाना। यह सब संग चले न निदाना॥

सुलतान वचन।

शाह तबै अस वचन सुनावें । बैठिसुखपालविहिश्तकोजावे॥
लेवँ बाँस में सुई भरायी । यहि विधि सुई संग ममजायी॥

वजीर वचन।

तब दिवान कर जोरि सुनावे । यह सुखपालकबर लगि जावे॥
आगे कस तुम करहू साँई ।सो मोहिवचन कहो समझाई॥

सुलतान वचन।

आगे हम घोड चढि जायब। लेइ जीन में सुई भरायब॥
अहो दिवान ऐसेई करिहौं। ले दरवेश के आगे धरिहौं॥

कबीर वचन।

सुना दिवान तबै हंसि दीना ।दोइ कर जोरिके विन्ती कीना॥
दादा बाबा तुम्हर रहैया । घोडे चढि कोऊ ना गैया॥

साखी–इतने में संग नहिं चले, सुनहु शाह चित लाय॥
यह बजूद दिन चार है, सो भी संग न जाय॥

चौपाई

मनमें चकित शाह तब भयऊ । झूठीमाया हम चित दयऊ ॥
सुई संग चले नहीं जाही । झूठी राज पाट सब शाही ॥
सहस्र सुई का का परसंगा । एकै सुई चले नहिं संगा ॥
अबतो खाना हम तब खावें । जब जिन्दा* दर्शन पावें ॥
इतना ज्ञान शाह घट आवा । जिन्दा दरशको सुरति लगावा ॥
इबराहीम ऐसि मति ठाना । राज माँहि भक्ती जिन जाना ॥
साखी--जिन्दा जिन्दा रट लगी, हिरदय रहा समाय ॥
जो जिन्दा अबकी मिले, पूछू सब घर पाय ॥

चौपाई।

ऐसी रटना शाह तब लावा । जिन्दा मिलन भयो उरभावा ॥
बहुत दिवस रट लागी ऐसी । आगे कहूँ भयी गति जैसी ॥
शाह कीन मन माहँ बिचारा । जिन्दा मिले सो कौन प्रकारा ॥
सब सिद्धन को लाउ बुलायी । उनसे पूछो मति अस भाई ॥
जोई सिद्ध अजमत बतलावें । उनसे खबर जिन्दाकी पावें ॥
जबे शाह ऐसी मन ठानी । लिये बुलाय सिद्ध सब ध्यानी ॥
साखी–सब सिद्धनको टेरिके, शाह किये सन्मान ॥
देउ करामत सिद्ध मोहिं, तब मेरो मन मान ॥

चौपाई।

सन्मुख शाह सिद्ध सब आनी । तबही शाह कहे अस बानी ॥

सुलतान वचन।

अधिक प्यारे तुमहौ अल्लः को । करामातदिखलाओअब हमको
ना मैं तुम्हको बांधि झुलाऊँ । ना तो तुम्हको छुरी मराऊँ ॥

सिद्ध ववन।

तब बोले सिद्ध चौरासी । हम हर हरि के आहिं उपासी ॥
निशि दिन राम नाम गुण गावें । करामात ढिग हम नहिं जावें ॥
यह सुनि शाह बहुत रिसियाना । हुकम कीन सब बन्दीखाना ॥

सुलतान वचन ।

तुम काफिर अल्लाह ते दूजा । भूत प्रेत चित लाये पूजा ॥
चक्की ढिग इनको बैठाओ । निशि दिन इनसे नाज दराओ ॥
जो नहीं करामात तोहि होई । क्यों कर सिद्ध कहाओ सोई ॥

सतगुरु वचन ।

बैठे सिद्ध सब चाक चलावे । चित विस्मय सब हरिगुण गावें ॥
त्रास देखि मुहि आयी दाया । ततछिन शाहद्वार चलि आया ॥
सोटा मारा चक्की माहीं । घूमहु सतगुरु दया कराहीं ॥
बिदा सिद्ध भये हम भयगुती । देख्यो आय शाहके जपती ॥
कहा साह सों तिन्ह कर जोरी । चक्की सब आपहिं चलि दौरी ॥

सुलतान वचन ।

सुनि के शाह कैफ दिल आयी । कौन शख्श यह चक्कि चलायी ॥
वेगहि ढूँढि लाओ यहि वारा । चक्कि चलायो सो अल्लह प्यारा ॥

सतगुरु वचन ।

ढूंढत नगर थके दिल जबहीं । नहिं पाये व्याकुल चित तबहीं ॥
जबहिं शाह घर लगन विचारा । तब हम जीवदया उर धारा ॥
तुरतहिं जाय तहां पशु धारा । शाहके महलन चढे गोहारा ॥
महल पर देखत फिरों चहुँ खूंटा । करों पुकार हेरानो ऊंटा ॥
सुनि के शाह क्रोधकरि धाये । कौन हमारे महलपर आये ॥
कहो तुम कौन कहां से आवा । कौन काज महल नपर धावा ॥
तब हम कहा ऊंट यक छूटा । ढूँढत फिरूं मैं अपनो ऊंटा ॥
बहुत अधीन ऊँट हम भायो । खोजत ऊंट महल पर आयो ॥
सुनिके शाह तबे हंसि दीन्हा । कैसे ऊंट महल पर चीन्हा ॥
जँगल माहिं तेहि खोजो जाओ । कैसे ऊंट महल पर आओ ॥
तब हम कहा सुनो तुम ज्ञाना । चढे तख्त अल्लहकिन जाना ॥
ऐसी बूझ करो मन माहीं । सत्य वचन धरो मन ठाहीं ॥

साखी-तख्त चढे किन पाइया, सुनो शाह सुलतान ॥
हरदम साहब याद करु,रचा जिन सकल जहान॥
महल न आवे ऊंट हमारा। तख्त ऊपर नहिं अल्लाह निहारा॥
अल्लाह तख्त पर कैसे पावे। जहँ लगि घट महँ गर्व रहावे ॥
जब तुम छोडो राज शरीरा। अल्लाह लखो तुम अपनो पीरा॥
छोडो मान गुमान रे भाई। अल्लाह रूप तब ही मिलि जाई ॥
सुनत शाह सन्मुख जब आवा। तब जिन्दा से पूछन लावा ॥

सुलतान वचन।

कौन रूप कौन नाम तुम्हारा। कहो अल्लाह मिले कौन बिचारा॥

जिन्दा वचन।

सांचे दिलसे सुरति लगाओ। प्रेम प्रीति लौलीन रहाओ ॥
सुख संपति की करो न आंशा। निशि दिन दीया प्रेम प्रकाशा॥
मन अस्थिर करि सुरति लगाओ। तबहि दरश अल्लाह को पाओ ॥
कहे कबीर खोजे सो पावे। खोजत खोजत अलख लखावे॥
साखी-प्रेम प्रीति करि खोजिये, हियमें आवे ज्ञान ॥
अलख अल्लाहकी खोजमें, जागत भये सुलतान ॥
जिन ढुंढा तिन पाइया, गहरे पानी पैठि ॥
जो बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठि ॥

चौपाई।

जब कीन मन शाह अन्देशा। नहिं तहँ ऊँट नहीं दुवेशा ॥
ऐसे बहुत दिन बीता भाई। काल कला घट आन समाई ॥
बहुरि एक दिन बलख मँझारा। शाहके महलनमें पगु धारा ॥
नौरोजा खेले सुलताना। गिलम बिछायबहुबिधिजाना॥
महलन माहीं पहुँचे जायी। देखत फिरे महल चौपायी ॥
इब्राहीम अधम सुलताना। हमको देखत बहु रिसियान ॥

सुलतान वचन ।

कहे शाह तुम कौन है भाये । केहि कारण तुम महलन आये ॥

जिन्दा वचन ।

हम परदेशी दूर दिशारा । देखत फिरहिं सराय बसोरा ॥

सुलतान वचन ।

शाह कहे यह महल हमारा । कहाँ सराय जो करइ बसारा ॥
जेहि महल हीरा जडा अपारा। तापर धुनी तुम कैसे बारा ॥
अब तुम जाओ शहर बज़ारा। तहाँ जाइ करो सराय बसारा ॥

जिन्दा वचन ।

कहे दुर्वेश सुनो तुम शाहा। करि विचार परखो दिल माहा ॥
महल तुमारा तुम कहँ पावा । करो खोज यह किन निर्मावा ॥
महल तुम्हारो होय न भाई । तुम भी मुसाफिर बसो सराई ॥
सुनो शाह तुमचतुर सयाना । सुरति निरति बूझो तुम ज्ञाना ॥
बहुत बादशाह तुम आगे भयऊ। महल न संग काहुके गयऊ ॥
दादा बाबा तुम्हरा रहिया । महल काहुके संग न गैया ॥
जो तुम थापा महलहमारा । अन्त काल सब छुटे घर बारा ॥
यह जग सकल सराय बसेरा। इनमें नाहिं कोउ केहि केरा ॥
जहां के ताहां छूटहिं धामा । यह सबही दिनचार मुकामा ॥
हरदम साहिबको पहिचानो । महल सराय एक करि जानो ॥
ज्ञान दृष्टि दिलमें जब आवै । राज छोडि साहिब गुण गावै ॥
साखी--ज्ञान² दृष्टि दिल आवई, सब तजि होय फकीर ॥
कहे कबीर सुलतानसे, ज्ञानक लागे तीर ॥

---

१ गुज़ारा, निर्वाह ।

२ इस साखी के आगे एक प्रति में नीचे लिखे पद हैं। किन्तु यहाँ इनका मेल न मिलने से नोट में लिखा है ।

चौपाई।

यक दिन शाह जु चले शिकारा । चुनि चुनि साथ लीन्ह असवारा
छोड़े बाज पक्षी गहि आने । देखत शाह बहुत सुख माने ॥
बहुविधि मारग करत कलोला । जहँ तँह फिरे शिकारिन टोला ॥
बहुत समय बीति जब गयऊ । एक शिकार हाथ नहिं अयऊ ॥

चौपाई।

ज्ञान दृष्टि जब दिलमें आही । छोडो राज पाट बादशाही ॥
होय फकीर जंगलमे बासा । छोडी राज तख्तकी आसा ॥
शाह जो बैठे जंगलमें जाई । नगर की सब परजा चलि आई ॥
काजी पण्डित शेख मुलाना । महंत महावत गुलाम नफराना ॥
सेठ सेनापति परजा आई । सबही धरे शाह की पाई ॥

प्रजा वचन ।

ऐसी बात न करहु गुसाई । सबही राज भ्रष्ट होय जाई ॥
जो तुम तजो तख्त औ राजू । सबपरजा का होय अकाजू ॥

सुलतान वचन ।

नाहीं तख्त निकट हम जावें । नहिं अपने शिर भार चढावें ॥
यह बादशाही हमसे नहिं होवे । कौन तख्त चढि दोजख जोवे ॥
हम छोडा तख्त बादशाही । फिरि संशय महँ हम नहिं जाहीं ॥
बिना भक्ति मुक्ति किन पायी । राज करै सो दोजख जायी ॥
हमको आय मिले यक सांई । वहि साहब मुझको फरमाई ॥
मैं अपराधी उन नहिं चीन्हा अध । बिच छाँडि उनहमको दीन्हा ॥
अबतो करौं मै कौन उपाई । सांइ मुझको कस मिलिहै आई ॥

परजा वचन ।

अब तुम चलो महल के माहीं । हम सब सँग तुम होहु गुसाहीं ॥
तुमको छाँडि एको नहीं जैहैं । सब मिलि संग पयाना दैहैं ॥
सब मिलि लाये महल मँझारा । शाह के मनमें शोच अपारा ॥
कैसे के जिन्दा मैं पाऊं । कैसेके मैं जिव मुक्ताऊं ॥
झुठे झूठ मिल सब संसारा । दोजख कुंड में नावन हारा ॥

साखी– बेर बेर हमको मिले, नाम जिन्दा सो आहि ॥
अभरापन यक सुलतान है, किसविधि मिलेंगे आहि ॥

तबै शाह बहुत रिसियाना। खोजु शिकार हुकम फरमाना॥
तबै शिकारी दुहुँ दिशिधावैं। पावें न शिकार मनहि पछतावैं॥
यहि विच लीला अस भइ भाई। सुनु धर्मनि तुम चित्त लगाई॥
हरिन एक जो कनक रंग देखा। हीरा रतन मणि जडे विशेखा॥
देखि सरूप शाह ललचाई। यहि मिरगा कहँ घेरो भाई॥
आज्ञा पाइ चले असवारा। घेरयो हिरण सेन मंझारा॥
कहे शाह जो मिरगा जाई। तुमसे मिरगा लेहौं भाई॥
सेना सब मिलि रोंकत भयऊ। मिरगा भागि शाह तर गयऊ॥
शाह सब से तब कहे पुकारी। मिरगा मारि लाउँ यहि बारी॥
मिरगा संग सुलतान अकेला। नहिं कोइ सेना नहिं कोइ चेला॥
छिन में मिरगा देखि लुपाना। तेहि पीछे धावहि सुलताना॥
लागी प्यास शाह को भारी। महा भयानक बनहि मँझारी॥
वट का वृक्ष तहाँ यक देखा। शीतल छाया बहुत विशेखा॥
मिला फकीर एक तहँ वासा। कुत्ता दोय रहे उन पासा॥
शीतलकलशा पानिहि भरिया। जापर ठिलियामठका धरिया॥
खोजत नीर शाह चलि आये। दुआ सलाम करि वचन सुनाये॥

सुलतान वचन।

कहे सुलतान प्यास मुहि भारी। जात जान तुम लेहुउबारी॥

दुर्वेश वचन।

हम फकीर दुवेर्श कहावैं। सुरति होय तो भरोपियावैं॥
पियो शाह जल लियो निवासा। जिन्दे कीना अजब तमाशा॥

---

१ दूर से आहू उसे आया नजर। पहुँचा उसपर शाह घोडा मार कर॥
होके वह अपने सवारों से जुदा। पीछे दो फरसंग तक उसके गया॥
जाते जाते हो गया आहू खडा। बाफहिसत आबिन अद्धम से कहा॥
तुझको इस खातिर नहीं पदैा किया। वहशियों पर ता करे जौरोजका॥
है गरज ईजाद से तेरे कुछ और। कर जरा तू दिल में अपने आप गौर॥
बात यह कहकर वह गायव होगया। नक्श उसका शाह के दिलपर हुआ॥

साखी–गाकर काढी अगिनसे, मिश्रीघृतहि मिलाय ॥
न्यामत धरी रिकाबमें, कुत्तासे कहे खाय ॥

चौपाई ।

कुत्ता न्यामत खाय न भाई । मारे दुरवेश कुत्ता के ताई ॥
ऐसो चरित कीन दुर्वेशा । तब शाहके मनमें भयोअंदेशा ॥

सुलतान वचन ।

कहे शाह तुम सुनो दिवाना । यह पशु जीवन्यामत कहजाना ॥

जिंदा वचन ।

कहे फकीर सुनो बेनादाना । जैसा दिया तैसही खाना ॥
जौसि करे करतूत कमाई । तैसि देह धरि भुगते भाई ॥
यामें फेर फार नहिं होई । जो बोवे लुनिहे वह सोई ॥

सुलतान वचन ।

दोय कर जोरिके विन्ती कीन्हा । साहब तुमरी गति हम चीन्हा ॥
वानी अगम कहो समझाई । आगे कौन हते यह साई ॥

दुर्वेश वचन ।

तब दुर्वेश कहे समझायी । सुनो शाह तुम मन चितलायी ॥
बलख शहर यक नगर रहाई । तहँके हैं यह दोनो राई ॥
इब्राहीम अहै यक राजा । एक बाप अरु दूजो आजा ॥
राज पाय कछु भक्ति न कीना । ताते जन्म श्वान को लीना ॥

---

१ यहां जो शाह इब्राहीम अद्धम साहेबके बाप दादे को बलखका बादशाह लिखा है यह बात इतिहास और विचार द्वारा एकदम निर्मूल ठहरताहै क्यों, कि बलखके बादशाह इब्राहीम के बाप दादे नहीं थे वरन इसके उलटा उनके पिता एक महान संत थे जो परम विरागमान और एकांतवास करने वाले थे । शाह इब्राहीम की उत्पत्ति की कथा बहुतही रोचक और आश्चर्य दायक है । यहां स्थान भाव से नहीं दे सकते गुरु की कृपा होगी तो कबीर साहब के जीवन चरित्र के सहित सुलतान चरित्र भी बृहत स्वरूप में लिखेंगे । यहां दोनों कुत्तोको बलख के बादशाह और शाह इब्राहीम

सुलतान वचन।

तब सुलतान कहे सुनु साई। एक बात और कहो समझाई॥
दोय खूंटे दोय श्वान बंधाये। तीजा खूंटा क्यों खालि रहाये॥

दुर्वेश वचन।

कहे दुर्वेश सुनो रे भाई। याकी गतिहि कहूँ समझाई॥
इब्राहीम नाम जेहि होई। बलख शहर का राजा सोई॥
राज माहिं बहुत सुख करिहैं। भाव भक्ति नाहीं मन धरिहैं॥
विना बन्दगी जिन छूटे देही। वे पुनि जनम श्वान को लेहीं॥
इसमें जहू आनि के ताहीं। तब ये तीनों रहें एक ठाहीं॥
इतनी सुन दुर्वशहि बाता। शाह के मन में लागी घाता॥

सुलतान वचन।

सुनि सुलतान अचम्भा भयऊ। तब दुर्वेश हि पूछन लयऊ॥
श्वान योनि कस छूटे साई। ताका भेद कहो समझाई॥

दुर्वेश वचन।

कहे दुर्वेश भक्ति जो करई। सो नर श्वान देह ना धरई॥
करे बन्दगी साहिब केरी। दया मिहिर की दशा जा होरी॥
प्रेम प्रीति परमारथ नीका। माया मोह जाने सब फीका॥
सब सुख नामहि से लौलावे। सो जिव श्वान जनम नहिं पावे॥

सुलतान वचन।

शाह कहे जो लेइ बचाई। सो दुर्वेश साँच है भाई॥
सो दुर्वेश खुदा का बन्दा। श्वान योनि का काटे फन्दा॥

अद्धम को बाप दादा बतलाना बहुत ही भूल है इस हेतुसे जाना जाता है कि, इस पुस्तक में भी उत्तरोत्तर मिला वट होती गयी है और मिलावट करने वाले भी साधारण विचार के जान पडते हैं। ऐसी ऐसी मिलाव और भूलके कारण कबीरपंथी साहित्य की निन्दा होती है। किन्तु बुद्धिमानों को विचार पूर्वकही उसे ग्रहण त्याग करना चाहिये।

मन में शाह तब ऐसा जाना । यह दुर्वेश है खुदा समाना ॥
बार बार मोहि आनि चिताई । सोइ दुर्वेश आप है साँई ॥
तब अपने दिल कीन्ह विचारा । इनसे कारज होय हमारा ॥
जो यह कहे सोई चित दीजे । इनका वचन मान शिर लीजे ॥
इतना शाह मन करत अन्देशा । नहिं वहँ कुत्ता नहिं दुर्वेशा ॥
तबहि शाह मन कीन विचारा । निश्चय है यह सिर्जन हारा ॥
साखी–कहे शाह अबकी मिले, पुरवे मनकी आस ॥
कदमें शिरै छुआवहूँ, पलक न छाडूँ पास ॥

चौपाई ।

बन ते शाह नगर में जाई । मन जिन्दा में रहा समाई ॥

जिन्दा वचन ।

गुप्त रूप तब शब्द उचारा । इब्राहिम सुनु वचन हमारा ॥
नाहक जिव तुम मारि उडाई । तैसा हाल तुम्हारा भाई ॥
जाहि समय इजराइल[१] ऐहैं । महा भयंकर रूप दिखैहैं ॥
हनिहैं मुगदर धरिहैं चोटी । उठै अगिन तब बोटी बोटी ॥
ताहि समय पुनि करिहो रोरा । काम न आवे सेन करोरा ॥
मारत पंछी दरद न आई । एक दिन ऐसा तुम पर भाई ॥
बैन सुनत मुरछित मन माहीं । गुप्त भये पछताने ताहीं ॥
कहे शाह खोजो तेहि जायी । जिन ऐसी मुहि बात सुनायी ॥
खोजि थके पुनि मुहि नहिं पाये । मुरछित शाह भवन चलि आये ॥
तबहि शाह मन ज्ञान समाना । जिन्दा वचन सांच कर माना ॥
राज पाट सुख सम्पति देहा । यह सब दीखत स्वप्न सनेहा ॥
ज्ञान दृष्टि दिलमें जब आही । छोडेउ तख्त तबे बादशाही ॥

---

१ मुसलमानी धर्मके विश्वास के अनुसार इजराइल एक फिरिश्ता है जो सब प्राणियोंके आत्मा को शरीर से अलग करता है तब मृत्यु होती है ।

होय फकीर जगलकियों वासा । राज काज की छाडी आसा ॥
सबही लोग नगर के आये । आइ शाह के लागे पाये ॥
क़ाज़ी वज़ीरऔ शेखमुलाना । महन्त महावत नफर गुलामा ॥
लागे सबही शाह के पाई । सबही मिलि के विन्ती लाई ॥
ऐसी बात न कीजे साई । तुम विन यह परजा दुख पाई ॥
जो तुम तख्त न बैठो राजा । सब परजा को होत अकाजा ॥
राजा से परजा सुख पावे । जहां तहां आनन्द रहावे ॥

सुलतान वचन ।

कहे सुलतान सुनो रे भाई । हमतो तख्त के निकट न जाई ॥
ना हम पावँ तख्त पर लावें । ना अपने शिर भार चढावें ॥
अब हम तख्त न बैठें आई । बैठे तख्त सो नरकहिं जाई ॥
अब हम राज तजी बादशाही । यम की मारसही नहिं जाही ॥
भक्ति विना जिव मुक्ति न पावे । राज करे सो नरकहिं जावे ॥
हमको आज मिले यक साई । सो साहिब ऐसी फरमाई ॥
मैं अपराधी उन्हें न चीन्हा । अधविच छोडि सो मोको दीना ॥
अब हम करिहैं कौन उपाई । वह अवसर मुझको कब आई ॥

प्रजा वचन ।

प्रजा कहे सुनो हो साईं । अब तुम चलो महल के माई ॥
जो तुम राज छाडि बन जैहो । तो सब संग तुम्हारे ऐहों ॥
साखी--यहां रहन को छोडि के, तुम सँग करिहैं प्यान ॥
ऐसे वचन प्रजा कहि, लाये गृह सुलतान ॥

चौपाइ ।

जब आये शाह महल मँझारा । उठी बिरह मन माह अपारा ॥
अब मैं किस बिधि जिन्दा पाऊँ । उनबिनु होय न मोर बचाऊ ॥
यह सब लोक अहै संसारा । नरक कुंड में डारानहारा ॥

ऐसी करुणा भयि दिल माहीं । जिन्दा महल मिले केहिं ठाहीं ॥
भयी शाह मन विरह अपारा । जिन्दा जिन्दा करइ पुकारा ॥
साखी—उन मनमें मुझको मिले, नाम न दिया बताय ॥
इब्राहीम सुलतानको, भयो मिलन को भाय ॥

चौपाई ।

मूर्छित शाह भवन चलि आवा । मनमें जिन्दा आनि बसावा ॥
थोडे दिन विरहा अधिकाई । फिरतो धरम जाल फैलाई ॥
माहिं पुनि राज तहँ सुख पाये । माया मोह देखि ललचाये ॥
गया ज्ञान सुखे में लपटाना । कालशाह घट आनि समाना ॥
उरझे शाह स्वाद सुख रंगा । देखि रंग मन बहुत उमंगा ॥
पुनि कछु दिवस जो ऐसे वीता । विसरे शाह अल्लाह की चिन्ता ॥
ऐसी चाल देखि हम राही । राज न छोडें लोभ मनमाही ॥
तब हम रूप जो कीन खवासा । जेहि ते तख्त की छाडे आशा ॥
जैसा जिव तैसा तन धारा । कोइ विधि जिय उतारूँ पारा ॥
चतुर सहेली रूप अपारा । शोभा अंग अंग अधि कारा ॥
होय खवास बाग में जायी । फूल लाय रचि सेज़ विछायी ॥
बहु विधि फूलन सेज विछावें । जहां शाह पौढन नित जावें ॥
ऐसहि करत बहुत दिन गयऊ । तब हम एक अचम्भा कियऊ ॥
एक दिवस चित ऐसी आयी । ताहि सेज हम पौढे जायी ॥
रूप खवासिन तहँ हम कीना । घडी एक पौढी सुख लीना ॥
आये महल सेज ढिग शाहा । पौढि सहेली करे सुख लाहा ॥
इब्राहीम देखत रिसियाना । मनमाहीं बहुते खिसियाना ॥
हमरी सेज आई पौढाना । हमरी त्रास तनिक नहिं माना ॥
हांक मारि तिहि टेरि जगायी । देखत शाह मन क्रोध समायी ॥
शाह कहे क्यों पौढी नारी । बढ्यो क्रोध तब ताजन मारी ॥

*छन्द–हुकुम कीन शाह तन छीन लाव ताजन मारिये ॥
ताहि पीछे शीश उतारो पकडि भुजा फटकारिये ॥
मारन लागेउ शाह तेही खन हम कौतुक किन्हे ॥
हँसो सहेली रोवे नहीं त्रास अतिशय तेहि दीन्हे ॥
सोरठा–बूझे तेहि सुलतान, मैं मारी तैं क्यों हसी ॥
कहो साँची सहि दान, कहो सत ना कुम्हलाय मुख ॥

चौपाई ।

बहुत क्रोध करि मारा जबही । बहुतै हँसी सहेली तबही ॥
हँसत सुलतान अचम्भा कीना । निकट बुलाय पूछि तब लीना ॥
निकट बुलाय आप सुलताना । बखश्यो चूक कर्‌यो जिवदाना ॥

सुलतानवचन ।

यह तुम मोहि कहो समझायी । मारत तोहि हँसी क्यो आयी ॥
सच सच बात कहो निःशंका । तुम जनि मानो हमारी शंका ॥

सहेलीवचन–चौपाई ।

तबहि सहेली करे बखाना । सुनो शाह तुम चतुर सुजाना ॥
एक घडी सुख हम जो लीना । ता कारण इतना दुख दीना ॥

---

* इस छन्द और उसके नीचेके सोरठाका पुरानी प्रतियोंमें गन्ध भी नहीं है। वरन् आगेसे जो चौपाई चली हैं उसका ऊपरकी चौपाइके साथ सम्बन्ध है । यह छन्द और सोरठा किसी महात्माने वैराग के जोशमें आकर लिखमारा है किन्तु कविताकी कैसी मिट्टी खराबकी है उसकी बात पाठक छन्द और सोरठा से समझ जायँगे । देखिये सोरठाके प्रथम दोनो चरण तेरह २ मात्रा से पूर्ण हैं और तीसरे चरण में भी १३ मात्रा है और चौथे में पन्द्रह। कहाँ तक कहै इसी प्रकारसे उत्तरोत्तर भट्टाचार्य्योंने ग्रन्थोंके विगाडनेमें ऐसा भागलियाहै कि; जिस्से कबीरपन्थकी साहित्य मृतप्राय होरहीहै । मुझे सब ग्रन्थों के शोधने में कैसी २ कठिनाइयाँ उठानी पडती है मैंही जानताहूँ तिस पर भी मुझे कहाँ तक सफलता हुई है पाठक स्वयम् समझ सकते हैं । वर्तमान में यद्यपि कुछ कुछ विद्याकी ओर झुकाव कबीर पंथियोंकी होरही है तथापि अभी तक दो चारी को छोड कर कोई भी ऐसा कबीरपन्थी नहीं है जो अपना कलंक और अपना विचार कबीर साहब कबीर पंथी साहित्यके के मत्थे न थोपताहो ॥

सदा सर्वदा जो सुख करई। तापर मार किती सो परई ॥
कहा कहूँ मोहि रही न जायी। ताकरण मोहि हाँसी आयी ॥
उमर भरे सुख कीना ऐसा। ताका हाल होयगा कैसा ॥
या कारण हँसी हम शाहा। कीजे जो तुम्हारे दिल चाहा ॥
राज करइ बहुते सुख पावे। तन छूटे चौरासी जावे ॥
चौराशीमें है कष्ट अपारा। बिना नाम नाहिं होय उबारा ॥
आखिर खाक होय तन तेरा। वचन मानि ले यह अब मेरा ॥
कहा तख्त शज्या सुख पाओ। राह खुदा में चित्त लगाओ ॥
देह मिलेगी खाक तुम्हारी। चतुर सहेली कहे बिचारी ॥
साँची राह गहो तुम शाहा। जन्म पाय कछु लागो लाहा ॥
सतगुरु मिले तो भेद बतावे। जाते जीव मुक्ति घर पावै ॥
तहां जाय जिव करे अनन्दा। जनम जनम का मिटे सब फन्दा ॥
साखी*सद्गुरु भेद जो पावई, होय मुक्ति घर बास ॥
जन्म मरन फन्दा मिटे, तब सुख पावे दास ॥

चौपाई।

वचन सुन्यो जब शाह सुजाना। तब कछु दिल में उपज्यो ज्ञाना ॥
तेरा वचन सही सुनु नारी। सब सुख छाँडि अल्लाह चित धारी ॥
शाह विचार कीन मन तबहीं। निकसि जाउँ जंगल बिच अबहीं ॥
कहे सहेली सुनु सुलताना। दिलमें धरो अल्लाह को ध्यान ॥
जंगल बडा जेरी जिन देही। हवा हिसं तजु निज मति एही ॥
नेकी करो बदी तुम छाँडो। दया मिहर दिल अपने माडो ॥
परमारथ पर सब कछु वारो। पाक ज़ात अल्लाह चित धारो ॥
सुनत वचन लागा चितघाऊ। शाह वचन सुनि लागे पाऊ ॥
कहे सहेली ज्ञान अपारा। जो दिल धरो तो उतरो पारा ॥

*यह साखी भी पुरानी प्रतियोंमें नहीं है।

सुनि कर शाह अचम्मा भयऊ। ऐसो वचन कबहीं नहिं कहेऊ॥
भयो ज्ञान शाह सुनि वानी। काल कला फिर आनि समानी॥
अरुझे शाह स्वाद सुख पायी। भयो मगन मन अति ललचायी॥
साखी–सखी सहेली सँग लिये, करत रंग अरु राग॥
बिसरे ज्ञान विचार सब, मोह बान उर लाग॥

चौपाई।

एक दिन शाह सेजहीं सोया। तोशक झूल बिछौना जोया॥
देह उष्ण छेइ अवसर ताही। नींद न आवे बहुत सिसाही॥
कोई सखि पंखा पवन डुरावे। कोइ चन्दन घसि अंग लगावे॥
तबहू नींद न आवे शाहा। बहु व्याकुल अति तन भइ दाहा॥
एक चरित्र तहां हम कीना। सखी रूप धरि दर्शन दीना॥
सुबुधि सखी जोरे दोइ पाना। सुनिये एक अरज सुलताना॥
कहूँ वचन परमारथ जानो। सुनत क्रोध जो दिल नाहिं आनो॥
यह तन पाय बहुत सुख कीना। कबहू धनी नहीं दिल दीना॥
जिन साहिब यह देह बनावा। तख्त सेज सुख राज करावा॥
कोठा कोट अमीरी भारी। गज औ तुरं हरष संग नारी॥
ऐसा साहिब क्यों बिसराये। राग रंग चित अति हरषाये॥
जब वह साहिब कोप कराई। तेहि समय को होय सहाई॥
साखी–साहिब रीझे जेहि समय, देइ बिहिश्त को वास॥
मालिक मेटे पलक में, करइ राज सुख नाश॥

चौपाई।

आखिर देह मिलेगी खाका। साहिब नेह करि होऊ पाका॥
वचन सुनत चित गद्दबर भयऊ। आंसु बहुत चक्षु ते गयऊ॥

---

१ इस चौपाईसे लेकर आगे जिस चौपाई के अन्त में इसी प्रकार का फूल दिया है। वहाँ तक पुरानीप्रतियोंमें नहीं है।

तबहि शाह दिल अपने जाना । नारी में अस होय न ज्ञाना ॥
यह तो मुर्शिद मालिक मेरा । धरचो रूप इन नारी केरा ॥
तबहि शाह दिल माहि विचारा । हम कारण इन यह तन धारा ॥
जो यह कहे मानि शिर लीजे । जाते कारज अपना कीजे ॥
अब मैं वचन मानि शिर लेऊँ । चरण कमल में मस्तक देऊँ ॥
हम पुनि गुप्त भये तेहि थाना । देखत शाह बहुत अकुलाना ॥
कहे शाह कही अस बाता । घाव अचानक किये मुहि जाता ॥
कछु दिन शाह विरहमें रहेऊ । बहुरि शाहदिल मोह सो गहेऊ ॥
तब दिन एक श्वान यक आवा । जाके शीस माहि बड घावा ॥
कीन माथ देह भरि जाही । कल बल करि व्याकुल तन ताही ॥
श्वान बिकल डोले चहुँओरा । आयो शाह ढिग तबही दोरा ॥
सखी सहेली मारन धायी । शाह श्वान कहँ लीन बुलायी ॥
कहे श्वान सुनु शाह सुजाना । हमहूँ रहे बडे सुलताना ॥
सुख सम्पति पुनि तिरिया रंगा । जीव सतावे बहुत अस अंगा ॥
सोना रूप कटक गज बाजा । अंत समय कोइ आवे न काजा ॥
साखी–मातु पिता सुत बाँधव, औरो दुलहिनि नारि ॥
अंत समय सब बिछुरई, यह शोभा दिन चारि ॥

चौपाई ।

प्यासे जल नागे पट दीजै । भूके नाज मिहर दिल कीजै ॥
जैसी परी आपकहँ जानो । तैसी सकल जीव पहिचानो ॥
हवा हिर्स तन साधो भाई । साधो पीर मिटै दुचिताई ॥
इतना कही श्वान उठि धाया । सखी सहेली मोह लगाया ॥
पुनि हम कहा गैबकी बानी । सुनहि शाह सह सखी सयानी ॥

आकाश बानी ।

यह नर नरकहि फेर बनाया । तुम तो बहुत नरक मन लाया ॥
सखी सहेली काम न आवे । जबही धरि यम आनि सतावे ॥

तात मात सुत नारि खज़ाना । काम न आवे सब बिलगाना ॥
झूँठे करैं खुशामद तेरा । बाँधे यम तब देख घनेरा ॥
उठि अकुलाय शाह चित लागा । देखे नहीं उपजे अनुरागा ॥
दया मिहर घट आन समाना । छोडे जीव घात अभिमाना ॥
पीर शाह के घटहि समायी । भूखे नंगे सब दीन बुलायी ॥
मनमां कहे करो सो पीरा । जिन दिन्ह मोही चेत शरीरा ॥
प्रेम विरह निशिदिन चित लागा । अकह नामसुमिरन अनुरागा ॥
जेहि दिवस छूटे मम जामा । झूठा सुख नहिं आवे कामा ॥
यक दिन शाह किये असवारी । बलखे शहर देखा निरुवारी ॥
कहवाँ देखों पीर सुजाना । जिन मुहि कहा भेद निर्वाना ॥
डेरा सहित सखी रंग सैना । चले बेगि चित नाहि न चैना ॥
बैठा एक ऊंट तजि प्राना । पहुँचे आप तहाँ सुलताना ॥
देखि ऊँट दिल भये उदासा । रोवे बहुत विकल धरि स्वासा ॥
ऐसी गति यक दिवस हमारी । अपने मनमें यही विचारी ॥
माया मोह अहै जंजाला । दिना चार का झूठा ख्याला ॥
इब्राहीम कह्यो गोहराई । जाइ सवें अपने घर भाई ॥
*छंद–गजसे उतरी ठाढे भये सबदिये भूषण डारिहो ॥
चोला पहिर शिर ताज दे तब चले निर्धार हो ॥
सेना सकल विलखित वदन सब करहीं शोर सहेलियाँ ॥
मम खबर लय को सखी शिर कूटि मरहिं सहेलियाँ ॥
सोरठा–घेरि राह सब लोग, कोइ न छोडहिं शाहको ॥
ऐसे सबको सोग, पुत्र मरे जिमि विकल जग ॥

---

*पुरानी प्रतियोंमें समस्त ग्रन्थभरमें छन्दका गन्धभी नहींहै किन्तु नयी प्रतियोंमें ये बेतुकी छन्द कई मिलतेहैं । इसिप्रकार से कई सोरठे और दोहे (साखी) की भीपायाहै । पुरानी प्रतियोंमें तो वह हैही नहीं हैं किन्तु नई प्रतियोंमें एकदम बेतुक हैं ।

छन्द–कहे शाहको समझ दिल हमरी खबर को लेइगा ॥
सब माहि दाता सबनको सो सबन भक्षण देइगा॥
माँ के रहे शिकंम[1] में तहाँ को खबर जग लेत है ॥
जल थल है घट सकल पूरण जो जहाँ तहँ देत है ॥
सोरठा–साझ कहे भोरे एक हन, सुनत दिन बीति गये ॥[2]
शाहदिये नहि चैन, पिछले पहर उठि चले॥

चौपाई।

निकलत शाह कोइ नहिं जाना। उठि चल्यो जंगल कहँ सुलताना॥
नंगे पावँ पनही नहिं लीना। ऐसे शाह धनी दिल दीना॥
स्वाद सलाह तजी सुख गेहा। राजपाट जान्यो सब खेहा॥
साखी–सोलहसै सहेलियाँ, तुरी अठारह लख॥
साई तेरे कारणे, छोडा शहरबलख॥[3]

चौपाई।

सकल छोडि के भये फकीरा। लागे विरह बान गंभीरा॥
पिव कारण तज्यो सब आशा। जगत नेह तजि भये उदासा॥
शाह निपट बहुतहि सुकुमारा। तिन सुख तजि गह्यो दुःखपारा॥
क्षुधा लगे कोइ जांचे नाहीं। गहि संतोष रहे मन माहीं॥
छन्द–पाँव छाले पडि गये चलि पंथ पग थहरावई॥
कोइ संग आगे पाछे नाहीं धूप लगे कुम्हलावई॥
अन्न बिना दिन तीन बीते हरष शोक नहिं चित गहे॥
शाह निशि दिन अति बिरागी नाम अबिचल पद चहे॥

---

१ पेट। २ वर्तमान के अथवा इस के थोडेदिन प्रथमके परम भक्त महात्माओंके विद्वत्ताके नमूने के लिये यह सोरठा जैसाका तैसा रक्खाहो ।

३ पुरानी प्रतियों में इसी साखी से पुस्तक की समाप्ति होती है किन्तु इसके प्रथम बहुत कुछ विषय है सो इस पुस्तक में आगे आवेगा इस नोट में. इस बिषय में बिशेष नहीं लिखा जासकाता ग्रन्थके अन्त में "ग्रन्थ विवेचन" नामक हेडिंगके नीचे लिखा जायगा।

सोरठा–तब साहब कछु दीन, रूखा सूखा टूकडा ॥
शीस नायके लीन, खरी कसौटी नामकी ॥

चौपाई।

कछु भायो कछु औरहि दीना। मनमें नाहिं गुनावन कीना ॥
जो मुख पांचो अमृत पावत । सो मुख सूखा टुकडा खावत॥
आसन वासन अभूषण नाना । सो सब तजे भूरि मनमाना ॥
जेहि लागी तिन ऐसी कीन्हा । कहे कबीर प्रेम मन चीन्हा ॥
प्रेम गली अति साँकरि भाई । राई दशवां भाग रहाई ॥
मन अहि रावत किस विधि जावे ।विरले संत कोइ मारग पावे॥
साखी–प्रेम बन्ध अति दुर्लभ, सब कोइ सके न जाय ॥
चढना मोम तुरंग पर, चलना पावक माय ॥
छन्द–मिही सुई को नाकों जिमि तिमि इश्क मारग ठानिया॥
ताही ते कोउ झीनि होइ के प्रेम अगम गम जानिया ॥
जिन करि फना मरो आपको सो लहें सुखको धामहो ॥
कहें कबीर आप जहां तहां नहिं मिलत अराम हो॥
सोरठा–मन महँ शाह उदास, कबहुंक दरश मैं पाइहौं ॥
पुरवहिं मोरी आस, प्रगट रूप जब देखिहौं ॥
जबहि शाह घट विरह समायी ।दोय कर जोरि के बिन्ती लायी
दीन दयाल दया अब कीजे । अपना दर्शन मोको दीजे ॥
शब्द स्वरूपरहिरूप छिपाओ । प्रकटरूप मुहिदरश दिखाओ
जब हम लगन शाह घट चीन्हा। तब हम रूप प्रकट तहँ कीन्हा॥

१ पुरानी प्रतियों में यह चौपाई इस प्रकार है ।
नारि रूप तुम लेउ छिपाई । पुरुष रूप धरि दरश दिखाई ॥
और इसका सम्बन्ध उस कथासे है जहाँ सहेली बादशाहके सेजपर सोगयी है और उसे मार पडा है। पर जब सखीने बादशाहको समझाया है तब बादशाह अपने मन में विचारने लगा है कि ।

धन्यो स्वरूप अंग उजियारा। जगमग ज्योति तेज चमकारा ॥
उठत सुगन्ध अंग बहुताई। परिमल बास महेके सब ठाई ॥
बहुत कान्ति दीसे उजियारा। देखि शाह भये हर्ष अपारा ॥
तबही शाह चरण लपटाये। दोइ कर जोरिके विन्तीलाये ॥
धन्य भाग मुहि दर्शन दीना। पतित जीव पावन करि लीना ॥
लगे शाह सतगुरु के चरना। अब मुहि राखो साइब शरना ॥
धन्य धन्य तुम आपु गुसाई। अपना भेद कहो समझाई ॥
कहँ तुम रहो कहाते आये। वह सब गम्य कहो समझाये ॥
साहिब अपना नाम बताओ। अपना जानि जीव मुकताओ ॥
अबतो यह कला जानि हम पायी। साहिब हमको दरश दिखायी ॥
तुमबिनु दया करे को ऐसा। जनम मरनका मेटे संसा ॥
अब मुहि मुर्शिद भेद बताओ। तुम साहिब हम बन्दा आओ ॥

कबीर वचन।

कहे कबीर सुनो चित लाये। अमर लोकते हम चलि आये ॥
नाम कबीर हमारा होई। हंस उबारन आये सोई ॥

चौपाइ।

कहै सहेली ज्ञान अपारा। जो दिल धारो तो उतरो पारा ॥
तबै शाह दिल अपने जाना। नारीमें अस होय न ज्ञाना ॥
यहतो है खुद साहिब मेरा। धरा रूप इन ख्वासिन केरा ॥
तबे शाह दिल माहि विचारा। हम कारन इतना तन धारा ॥
जो यह कहे मानि सो लीजै। जाते काज आपनो कीजै ॥
जो मैं वचन मानि शिर लेऊँ। चरण कमल में मस्तक देऊँ ॥
जबै शाह घट प्रेम समायी। दोय कर जोरि उन विन्ती लायी ॥
धन्य भाग मुहि दर्शन दीना। पतित जीव पावन करि लीना ॥
शाह लगे सतगुरु के चरना। अब मुहि साहिब राखो शरणा ॥
दीन दयाल दया अब कीजे। अपना दर्शन मोकहँ दीजे ॥
नारि रूप तुम लेहु छिपायी। पुरुष रूप धरि दरश दिखायी ॥
इसके आगे जो पुरानी प्रतियों में आयी है सो यहाँ भी वही बात आयीहै ।

जो जिव माने शब्द हमारा । सो जिव उतरे भौजल पारा ॥
तबही शाह भये आधीना । शिर लेइ चरण कमल में दीना ॥
चरण पखारि चरणामृत लीन्हा। प्रेम भाव सतगुरु कहँ चीन्हा ॥

सुलतान वचन ।

अब कीजे मम साहिब काजा । जाते नहिं छेडे यम राजा ॥
सोई नाम मुहि देहु बतायी । जाते जीव अमर घर पायी ॥

कबीर वचन ।

कहैं कबीर मुक्ति तब पावे । सुरति निरति ले शब्द समावे ॥
उन्मुनि ध्यान रहो लौ लाई । अजपा जपो सदा दिल माई ॥
निशि दिन मनुवा अस्थिर राखो।नाम अमीरस रसना चाखो ॥
नाम प्रताप मुक्ति जिव पावे । जनम मरणको दुःख मिटावे ॥
गहो नाम सत्यलोक सिधावो। तहां जाय बहुते सुख पावो ॥
वहि घर हंसा करई आनन्दा । काटे कर्म कालको फन्दा ॥
बहुविधि शोभा रूप अनूपा । षोडश रवि सो हँसको रूपा ॥
किया चहो तुम अपनो काजो * ।यम तृण तोरि आरती साजो ॥
सहज चौका करि दीनो पाना । यमका बन्धन हृदय उठाना ॥
अमर अंक जो परवाना पावे । काल कला तजि लोक सिधावे ॥
प्रथम पान परवाना लेई । पीछे सार शब्द तेहि देई ॥
तब सतगुरुने अलख लखाया । करि परतीति परम पद पाया ॥
ऐसी रहनी गहे जो कोई । सत गुरु पद पावे नर सोई ॥
तन मन धनका मोह बिसारे । सो हंसा सत्य लोक सिधारे ॥
सोरठा–शाह किये तन खाक, अपने पिव के कारने ॥
खाक मिली भये पाक, आदमते भये औलिया ॥

---

*इस आधी चौपाई तक तो पुरानी प्रति के अनुसार है। इसके प्रथम जो गडबड है वह वहँ टिप्पणियों द्वारा दिखलायीं चुकाहूँ । अब यहां से जो गडबड है सो नवीन प्रति की पंक्ति पूरी हो जानेपर ऐसी फूटके चिन्ह के साथ उसे भी देदूँगा ॥

सुनो धर्मदास सुजान, शाह भये जीवन मुक्त॥
पद पाये निर्वान, शब्द परखि करनी किये॥

चौपाई।

धरमदास चित अति हर्षाये। प्रभुलीला तुव वरणि न जाये॥
शाह काज धारे प्रभु रूपा। सखी नाम धर कला अनूपा॥
अमितकला जीवनसुखदाता। भव बूडत राखे शठ त्राता॥
अधम उधारण नाम तुम्हारा। बहुत जीव कीने भव पारा॥
महा नेह तुव चरण लगावा। यश रह्यो और परम पद पावा॥
साखी—सत्य कबीर समरथ धनी, दोऊ दीन के ईश॥
सुयश सुन्यो सुलतान को, धर्मनि नायो शीश॥

नबीन प्रतियोंमें पुस्तक यहां आकर समाप्त होतीहै किन्तु पुरानी प्रतियोंमें ७३२—२८ पृष्ठके पंक्ति की आधी चौपाई "किया चहो तुम आपनो काजो" के आगे की बाणी उपर्युक्त नबीन प्रतिसे एकदम बिरुद्ध नीचे लिखे अनुसार है।

और नवीन प्रतिसे पुरानी प्रतिके अंतके एक समान न मिलनेका कारण उसे पृष्ठकी टिप्पणीमें दे दिया है। और विशेष वृत्तान्त पुस्तककी समाप्तिमें देंगे।

चौपाई[1]।

किया चहो तुम आपना काजू। तुम्हारो राज छोडि दो आजू॥
सतगुरु नाम गहो विश्वासा। जाते मिटत कालको त्रासा॥
यहि सुनि शाह तख्त तब छाडा। प्रकटै ज्ञान हिया गुण बाडा॥
तब सतगुरुने अलख लखाया। करी प्रतीति परम पद पाया॥
साखी—सोलह से सहेलियां, तुरी अठारह लख॥
साई केरे कारणे, छोडा शहरबलख॥

इति

---

१ यह सखी एक स्थानमें औरभी आगयीहै।

ग्रन्थ विवेचन।

इस ग्रंथकी कई प्रतियाँ मेरे पास उपस्थित हैं जिनमेंसे कोई पुरानी सौबर्षसे अधिक की लिखी हुईभी हैं किन्तु पुरानी प्रति की अपेक्षा उत्तरोत्तर २ जैसे२नवीन पुस्तक लिखी गयीहै सबमें कुछ वृद्धि और प्रसंगका उलट फेर और छन्दोभंग का समावेश होता गयाहै। नवीन प्रतियोंके अन्तमें कई पुस्तकोंमें किसी किसी महात्माओंने अपना नाम लिखकर अपने को पुस्तकका कर्ता सिद्ध करना चाहाहै। चाहा तो सब कुछहै किन्तु लिखते लिखते दोहा और सोरठा भी शुद्ध नहीं लिख सकेहैं। सबसे जो पुरानी प्रति मेरे पास मौजूद है वह नवीन सब प्रतियों से अधिक शुद्ध औरछोटी है और उसका आरम्भभी "बलख शहर एक नगर अनूपा" से होताहै ठीक उसके उलटा नवीन प्रतियोंका आरम्भ "धर्मदास उठि विन्ती लाई" से होताहै। इसी प्रकारसे पुरानी प्रतियोंकी अपेक्षा नवीन प्रतियों के मध्य मध्यमें अधिक कथाएँ इतनी मिलाई गयीहै कि, पुस्तक डेवढी होगयीहै। इतनीही नहीं है कि विषय बढाया गया है किन्तु साथही साथ थोडे २ वचन किसीमें एक दोहा किसीमें एक छंद (जो सब अशुद्ध हैं) बढाकर बढानेवाले महाशय ग्रंथके कर्ता बन गयेहैं। यद्यपि मैंने इस पुस्तक को सब प्रतियोंके अनुसार ठीक कर दियाहै तथापि जहां २ विषयोंको उलट फेर अथवा घटाव बढाव हुआहै वहां टिप्पणी देदी है। इस ग्रंथकी पुरानी प्रतिमें कबीर पंथकी अन्य ग्रंथों के समान किसी कर्ताका नाम तो है नहीं किन्तु नवीन प्रतियोंमें कई कर्ताओंका नामहै इससे किसी एक कर्ताका नाम निश्चय करनेमें अशक्ति होकर मैंने किसीका नाम

नहीं दिया है और यथार्थ में हैही यही बात कि कबीरपंथ की जैसी और पुस्तकों में कर्ता का नाम नहीं है किन्तु वह कबीरपंथी पुस्तक कहलातीहैं और कबीर साहब तथा धर्म-दास साहबके सम्बाद में लिखी गयीहैं ॥

इस पुस्तकके अतिरिक्त और भी निर्भयज्ञान आदि अनेक पुस्तकों में सुलतान इब्राहीम अद्धम के विषय में बहुत कुछ बात आयी है जिनमें परस्पर बहुतही भेद हैं और कितने विषय ऐसे हैं जो एक मेंहैं और दूसरे में नहीं हैं। इसकारण शाह इब्राही-म अद्धम साहेब का वृत्तान्त गद्यमें संक्षेप लिखदेताहूँ क्योंकि वि-स्तारसे लिखने केलिये एक स्वतंत्र पुस्तक लिखने का विचार है।

सुलतान शाह इब्राहीम अद्धम साहिबका संक्षेप चरित्र।

उत्पत्ति।

इस सुलतान इब्राहीम शाहके पिताका नाम अद्धम शाह था। आप संसार त्यागी फकीर थे। अपनी फकीरी और तपस्यामें पूरे थे। बस्ती से सदा अलग रहते थे। प्रारब्धि से जो कन्द, मूल, फल अथवा नाज मिल जाता था उसी पर अपना समय बिताते थे किन्तु कभी एक स्थान मे जमकर नहीं रहते थे। कभी उनने घर नहीं बांधा। कहा भी है कि,

साखी–बहता पानी निर्मला, बन्धा गन्दा होय।
साधू जन रमते भले, दाग न लागे कोय॥

कुछ समय तक तो ऐसेही निःसंग फिरते रहे। फिरते फिरते एक बार बलख शहर में पहुंचे। ठहरने के लियेतो शहरसे दूर उन्होंने जंगल में निश्चय किया किन्तु नित्य शहर में फिरने के

लिये जाया करते। एक दिन संयोगसे बलख के बादशाहकी लड़की को देख लिया। अब तो ज्ञानध्यान सब वैरागभूल गया। उस शाहजादी पर उनका मन ऐसा आसक्त हुआ कि, उसी के विरह में दिन रात फिरने लगे। अन्तमें उसके मिलने का कोई उपाय न देखकर स्वयम् उन्होंने बादशाहके पास जाकर अपने विवाहकेलिये प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना को सुनकर बादशाह तो सन्न होगया। वह शोचने लगा कि, ऐसे फकीर भीख मांगते को कन्या देकर उसे दुख सागर में डुबाना है। बादशाहने ऐसा मनही मन विचार तो किया किन्तु आस्तिक होने के कारण से दुर्वेश की बददुआ (शाप) से डरकर कुछ बोल नहीं सका और उसने दूसरे दिन फिर उन्हे आनेको कहा। उनके चले जाने पर बादशाह और वजीर ने परस्पर विचार करके अद्धमशाह को टाल देने का उपाय निश्चय किया और जब नियत समय पर अद्धमशाह बादशाहके पास पहुंचे तब वजीरने उनसे कहा कि, शाहजादीने अपने विवाह के लिये यह प्रतिज्ञा कीहै कि, नमूने के अनुसार जो कोई दूसरा मोती ले आवेगा उसीके साथ वह ब्याह करेगी। अद्धमशाहनें वजीर को बहुत कुछ समझाया बुझाया गिडगिडाये रोये कल्पे किन्तु वजीर ने एकभी न मानी। अन्तमें वजीरसे शपथपूर्वक वचन लेकर वह मोतीकी खोज करने को निकले और दोवर्षतक देश २ नगर २ ग्राम २ भटकते फिरे अन्तमें यह सुनकर कि मोती खारे समुद्रमें उत्पन्न होताहै खारे समुद्रके किनारे पहुंचे वहां पहुंचकर उन्होंने अपने खप्परसे पानी भरकर रेतमें फेकना आरम्भ किया, इस प्रकारसे पानी फेंकते फेंकते जब उन्हे चालीस दिन बीत गये तब परम दयालु सत्यपुरुषकी आज्ञासे सद्गुरु उनके निकट समुद्र तटपर पहुंचे। वहां पहुंचकर सद्गुरुनें अद्धमशाहसे पूछा कि,

हे भाई! तू यह क्या कररहा है ? समुद्रके पानीको उलचनेसे तुझे क्या लाभ है ? अद्धमशाह तो अपने काममें ऐसे मग्न थे कि, उन्हे कुछभी सुधि नहीं हुई कि, कौन मुझसे क्या पूछताहै। जब सद्गुरुने कईबार पूछा और निकट जाकर उन्हे सचेत करके कहा कि, तुझे जो चाहिये मुझसे कह तेरेही लिये सत्यपुरुषने मुझे तेरे पास भेजा है। सद्गुरुकी इतनी बातको सुनकर अद्धमशाहको कुछ चेत हुआ और उन्होंने अपना सब वृतान्त आदिसे अन्ततक सुनाकर सद्गुरुसे कहा कि, यदि सत्यपुरुषने कृपा की है और आप मेरे दुखको दूर करनेके लिये आये हैं तब मुझको व पाहो मानी जैसा शाहजादीने मांगा है दीजिये। अद्धमशाहकी ऐसी इच्छाको सुनकर सद्गुरुने उन्हे समझाया कि, तू उस सच्चे साहिबका भजन कर जिसने तुझे और शाहजादी दोनोंको उत्पन्न कियाहै। सद्गुरुने बहुत कुछ ज्ञान और विवेक वैरागका अद्धमशाहको उपदेश किया किन्तु उन्होंने एक भी नहीं माना बरन उलटकर उनने उत्तर दिया कि, मैं तो मोतीका मिलना और शाहजादीसे विवाह करनाही परम भजन समझता हूँ मुझ दूसरेसे कुछ सम्बन्ध नहीं है" ?

फिरसद्गुरुने कहा समुद्रका पानी तू क्यों उलचताहै? तब अद्धमशाहने उत्तर दिया कि, इसी प्रकार से उलचते उलचते समुद्रको सुखा दूंगा और समुद्र के सुखनेपर मोती लेकर जाऊंगा तब शाहजादीसे विवाह करूंगा। सद्गुरुने हंसकर कहा कि, भला यह कब सम्भव है कि, तेरे उलचनेसे समुद्र सूख जाय और तू मोती पावे अद्धमशाहने उत्तर दिया कि, समुद्र सूखे या न सूखे जबतक दममें दम है तबतक मैं अपने कामसे पीछा न फिरूंगा। इतना कहकर उनने कहा यदि सत्य पुरुषने आपको मेरा दुख दूर करनेको

भेजा है तो आप मुझे उसी जोडके मोती दीजिये । जब सद्गुरुने देखा कि, अद्धमशाह अपने निश्चयसे नहीं टलताहै औरउसको मोतीके सिवाय दूसरा कुछ नहीं सूझता है तब सद्गुरुने कहा कि, हे अद्धमशाह ! आंख बन्द कर । सद्गुरु की आज्ञाको पाकर अद्धमशाह आंख बन्द करके अन्तरमें सद्गुरुका ध्यान करने लगे । उधर तो वह ध्यानमें मस्त थे इधर सद्गुरुकी आज्ञा पाकर समुद्रने लहर मारा और हजारों सीप रेतमें डाल गया । लहरके हट जानेपर जब अद्धमशाहने आंख खोली तब क्या देखा कि, सहस्रों मोतीके सीपोंका ढेर लगा है मोतियोंका ढेर तो पड़ा है किन्तु सद्गुरुका पता नहीं है । फिर तो अद्धमशाहने मोती देखना आरम्भ किया । देखते २ वह ऐसे आश्चर्यमें फंसे कि, उन्हे यह निश्चय करना कठिन होगया कि, किसको लेवें और किसको न लेवें । अन्तमें चालीस बडे२मोती चुनकर अपने कमरमें रक्षापूर्वक बांधकर रवाना हुए । चलते२कुछ दिनोंमें जब बलखमें पहुंचे तब सीधे धडधडाते हुए बादशाहकी कचहरीमें पहुंचे । उस समय बादशाहकी कचहरी लगी हुई थी। इनके पहुंचतेही बादशाह और वजीर दोनोंकी दृष्टि उनपर पड़ी । देखतेही वजीर आग बगोला बन गया । वजीरके क्रोध करनेका कारण यह था कि, जिस समय अद्धमशाह और वजीरसे इस बात की प्रतिज्ञा हुईथी कि मोती लेकर आनेपर शाहजादीसे उनका विवाह करा दिया जायगा उसी समय वजीरने अद्धमशाहसे ऐसी प्रतिज्ञा ली थी कि, यदि मोती तुम न ला सको तो बलख शहरमें फिर

दुबारा नहीं आना। और यदि आओ तो तुम्हारी गर्दन मारी जाय। वजीरको अद्धमशाहसे ऐसी प्रतिज्ञा लेनेका यह आशय था कि, अद्धमशाह जैसे फकीरको न मोती मिलेगा न वह फिर आयगा और न उसका विवाह शाहजादीसे होगा। यही कारण था कि, अद्धमशाहको देखतेही वजीरने क्रोध करके कहा कि, ओ अद्धम! तू अपनी प्रतिज्ञाको भूल कर फिर यहां आयाहै? इस कारण प्रतिज्ञाके अनुसार तेरा शिर धडसे अलग किया जायगा। वजीरके अहंकार भरे वचनको सुनकर अद्धमशाहने कहा ओ बेखबर तुझे क्या खबरहै कि, प्रभुने तेरे नमूनेके मोतीसे भी बढकर बहुमूल्य इतने मोती मुझको दियेहैं कि, जितना तेरे संकल्प में भी नहीं आ सकता है। प्रभुने तो बहुत दिये थे किन्तु मैंने चालीस चुनकर लेलियेहैं। अद्धमशाहने इतना कहकर अपनी झोलीसे चालीसों मोती निकालकर बादशाहके मसनदपर गिनके पंक्ति लगाकर रख दिये। मोतियोंके निकलतेही चारों ओर उसके प्रकाश फैल गया। जौहरियों और परखियोंसे आश्चर्यमें आकर अवाक रहने के अतिरिक्त कुछ न बन पडा। बादशाहकी तो बुद्धिही ठिकाने न रही वह शोचने लगा कि, अब तो अवश्य शाहजादीका विवाह इसके साथ करदेना पडेगा। अन्तमें बादशाहने तो यह निश्चय किया कि, अब शाहजादी का विवाह उसी फकीरसे कर देना अच्छा है किन्तु राजदर्बार का काम है। राजनीतिके नियमानुसार बादशाह एकान्तमें जाकर अपने वजीर और-दरिबारोंसे इस विषयमें विचार करने लगाकि, शाहजादीको अद्धमशाहसे विवाहना चाहिये कि नहीं, उस समय उसी वजीरने जिसने प्रथम बार प्रतिज्ञा कराकर अद्धमशाहको मोती लानेकेलिये भेजा

था उस समय भी विघ्न डालनेके लिये कहना आरम्भ किया ॥

पूछी फिर शाहने वजीरोंसे सलाह ।
सब सगीरों कबीरोंसे सलाह ॥
जो कि औवलमें हुआ था नेशजन ।
फिर हुआ इस प्रकारका वह बेखकुन ॥
उक्दसे माना हुआ फिर वह वजीर ।
क्योंकि था हर अमरमें शहका मशीर ॥
हीला व हुज्जत व्याँ करने लगा ।
नुक्ता औ ऐब इनके अयाँ करने लगा ॥
कुबह कुछ इसने किये ऐसे बयाँ ।
होगया खामोश वह शाहे जहाँ ॥

इसवजीरफित्नेंजोनेफिरकहा । आपघरमेंहूजियेरोनकाफ़िजा ॥
अहदओपैमाँमुझसेहैदुवेंशका । आपअन्देशानकीजेकुछजरा ॥
सौंपिये यह काममेरीरायपर । लाइयेदिलमेंनकुछखौफोखतर ॥
याद रखिये आपयहमेरीहदीस । इसकेहैताबाकोईजिन्नखबीज ॥
कअरसेदरियाकेगोतामारकर । लादियेहैंइसनेयह नादिरगोहर ॥
यहकरामतपरनहीं इसकीदलील। हैबनावटइसकीऐशाहेजलील ॥
ऐसेमरवादीदवरनःयहफकीर । लाताक्योंकरऐशहेआफाका गीर ॥
हैनजरबन्दोमें भी यहदस्तगाह । गुर्देःनानको बना देतेहैं माह ॥
योंकियाहैइसनेयहमकरोदगल । पासइसकेहैकोईसिफलीअमल ॥
संगरेजाजिससेआतेहोंनजर । खल्ककीआँखोंमेंताविन्दःगोहर ॥
यह जोयोंरोशनतरअज खुर्शैदहैं । यहबनावटहीके मरवारीदहैं ॥
मोतियोंमेंयहदरखशानीकहाँ । यहचमकयहनूरअफशानीकहाँ ॥
अबकुछइसकोनसमझेजन्नबद । नूरताविन्दःहैमर्दुमकीखेरद ॥
मुझको आताहै नजरउसनूरसे । मकरवहीलाइसगदाकादूरसे ॥

सादिकोबरहकरैयहकौलेलबीब । हैब्यानेआदमी सिहरेअजीब ॥
बादशाहसुनकरयहतकरीरेवजीर । होगयादामेतवहुममेंअसीर ॥
करकेआखिरकारतफवीजेवजीर । बाजशाहघरमेंहुआरौनकपजीर ॥
कहगया उससेकितूमुखतारहै । नेकवबद्काइसकेतुझपरबारहै ॥
लेकबदअहदी है इन्दुल्लाहबद । है नतीजा ऐ खेरदआगाह बद ॥
कीजियोकुछतदबीरऐसीवजीर । तंगजिससेहोनयहमर्दे फकीर ॥
घरमेंअपनेबादशाहदाखिलहुआरहगयाउसकावजीरऔरवहगदा ॥

इस प्रकारसे बादशाहको समझा बुझाकर वजीरने महलमें भेजदिया । अब अद्धमशाह और वजीर रह गये तब वजीरने अद्धमशाहसे कहा–

उसको धमकाकर लगा कहने वजीर ।
क्या हुआहै तुझको ऐं मरद् कफकीर ॥

तूजो यों गुस्ताखेकरतोहकलाम । बरमलालेताहैशहजादीकानाम ॥
तुझकोहकुछअक्कभी ऐ बेहया । शहजादीवहहैतूमुफलिस गदा ॥
नाम शहजादीका गरतूने लिया । होगाहरहरबन्दतेराजुदा ॥
काटकर तेगोंसे मैंतेरीजुबाँ । दारपरखींचूंगा तुझको बेगुमाँ ॥
जिस्तगरचाहे तोइश्तगफार कर । इसख्यालेखामसेअपनेगुजर ॥

वजीरकी धमकी और विश्वासघातकी बातको सुनकर अद्धमशाह बहुतही दुःखी हुए और फिर अपनेको सँभालकर वजीरसे कहने लगे–

जबसुनीअद्धमनेउसकीगुफ्तगू । बोलाऐबदअहदनासंजीदःखू ॥
भूलताहैउसखुदायपाकको । जिसने यह रुत्बः दियाहै खाकको ॥
तूनेवहजामिनदियाथादरम्याँ । जिससेकायमैंहजमीनोआसमाँ ॥
आलिमो दामा व दारायजहाँकादिरे मुतलक शहे शाहनशाहाँ ॥

गुलजार इब्राहीमसे ।

क्याहुएवहअहदोंपैमा ऐ वजीर । कौलो एकरारेईमाँऐवजीर॥
अहदकरतेहैंवफाअपनाकरीम। किज्बवबदअहदीहैकिरदारेलईम ॥
कदउसकागरमुझसेकरनानथा । अहदक्योंतूनेकियाऐवेवफा ॥

अद्धमशाहने वजीरसे कहा यदि तुझको अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनीही नहीं थी तो तूने मुझसे प्रतिज्ञा करके और मुझसे प्रतिज्ञा कराके दो वर्ष तक मुझे क्यों भटकाया। देख तूने ईश्वरको साक्षी रखकर प्रतिज्ञा की और करायी थी अब विश्वासघात मत कर इस विश्वासघातका फल अच्छा न होगा। देखो आज उच्च पदवी को पहुंचा है तो फकीरों और दीन दुखियोंको इस प्रकार दुःख देताहै, विचार कर। किसीका अभिमान आजतक नहीं रहाहै। इस संसारमें आकर मायाके चमक दमकमें पडकर जिस जिसने गर्व किया है सबका गर्व टूटा है किसीका गर्वभी रहा नहीं है। अब तू विश्वासघात मत कर और जिस प्रकार मैंने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की है उसी प्रकार तू भी अपना वचन रख। इसीप्रकारसे परस्पर अनेक प्रकारकी नोक झोंककी बातें होनेके पश्चात् वजीर बहुत क्रोधित हुआ और उसने अपने नौकरोंको आज्ञा दी कि, अद्धमशाहको इतना मारो कि, यह जीता न बचे। फिर क्या था वजीरकी आज्ञाको पाकर निर्दयी नौकर चारों ओरसे टूट पडे। किसीने लकडी उठायी तो किसीने कोडा लिया। संक्षेपतः यह कि, जिसको जो मिला उसने वही ले लिया और चारों ओरसे अद्धमशाहके ऊपर मार पडने लगी। अन्तमे जब वह एकदम अचेत होगये श्वासोच्छ्वास की क्रिया रुक गयी जब मारनेवालोंने समझ लिया कि, वह मरगया है तब वजीरकी आज्ञासे वस्तीसे दूर जंगलमें डाल आये।

इधर अद्धमशाहकी यह गति हुई उधर बादशाहकी बेटीके

हृदयमें शूल उठा और उस दर्दने थोडीही देरमें ऐसा बल पकडा कि,हजारों वैद्य और उपाय करनेवालोंके रहते हुएभी शाहजादीको कुछ आराम नहीं हुआ। तीन चार घडीमें वह मरगयी।अब क्या था बलख शहर में हाहाकार मचगया।शोकने आकर समस्त नगर में निवास किया।यदि उस समयके शोकका वर्णन लिखने लगू जाऊं तो एक दूसरी और बडी पुस्तक बन जाये इस कारण संक्षेपमें लिखना यह है कि,बादशाहको सिवाय इस शाहजादीके दूसरी संतान न होनेके कारण सर्वत्र शोकही शोक फैल गया।संक्षेपतः यह कि शाहजादीकी मृतकको लेकर कब्रकी अन्तिम क्रिया करके सबलोग लौटकर चले आये।

इधर अद्धमशाहकी आयु शेष रहनेके कारण सद्गुरुकी कृपासें दिनभर अचेत पडे रहनेके पश्चात् दोघडी दिन रहते वह सचेत हुए सचेत होतेही शिर उठाकर देखा तो जंगलके सिवाय कुछ नहीं दीख पडा न तो शाही महलहै, न वजीरका दर्बार, न उनके मोती। इस प्रकारसे चारों ओर शून्यही शून्य देखकर अद्धमशाह प्रथम तो आश्चर्यमें आये किन्तु उनका आश्चर्य जाता रहा और इश्कका जोश फिर अन्तःकरणमें उठा। फिर तो अद्धमशाह सीधा शहरको पहुंचे। शहरमें पहुंचकर उनने चारों ओर शोक फैला हुआ देखकर जिससे पूछते वही कहता कि,शाहजादी मरगयी। प्रथम तो उन्हे लोगोंके कहनका विश्वास नहा हुआ किन्तु जब शाही महलके द्वारपर पहुंचे और वहांभी लोगोंको शोकमें विकल देखा और चारों ओरसे हाय! हाय! की ध्वनि सुनी तब उन्हे विश्वास हुआ कि, सच मुच शाहजादीका परलोकवास हो गया। इस बातके निश्चय होतेही उनके

हृदयपर ऐसा आघात लगा कि, जहां खडेथे वहाँ ही वह अचेत होकर गिरगये और उसी अवस्थामें उससमय तक पडेरहे जब तक बादशाह शाहजादीकी अंतिम क्रिया करके कब्रस्थानसे फिर कर आये। बादशाहके कबरसे लौटकर एकबार फिरभी रोने पीटने और हाय बोय करनेकी वह धूम मची कि, जिसका वर्णन करना कठिन है। उसी हाय बोय शोककी चिल्लाहाटमें अद्धम शाहको चेतआया चेत आतेही उससमयकी सभा देखकर पागल विक्षिप्त चित्तके समान होकर वहाँसे वह चल पडे।एक तो अंधेरी रात दूसरे शोकसे कातर अद्धमशाह आधीराततक तो जंगलमें इधरउधर भटकते और ठोकर खाते रहे किन्तु आधीरातके पश्चात् प्रभु कृपासे भटकतेरशाही कब्रस्थानके निकट पहुँच गये। वहाँ जानेपर उनके हृदयको कुछ धैर्यसा हुआ और कुछ चेतनाभीआयी फिर तो एक वृक्षकी आडमें खडे होकर उन्होंने कब्रके रक्षकोंको ध्यान पूर्वक देखना आरंभ किया । संयोगवश दिनभरके थके हुए पहरेवाले ऐसी निद्रामें अचेत हुए कि, उन्हे किसी बातकी सुधि न रही ।पहेरेवालोंको बेसुध देखकर इश्ककी तरंगमें अद्धमने एक ओरसे कनात फाड दिया और अन्दर पहुंचकर वह चोरोंके समान धीरे धीरे कबरतक पहुंचे। कब्रके निकट पहुंच कर वह प्रथमतो कब्रसे लपटकर थोडीदेरके लिये अचेत होगये फिर चेत आनेपर उन्हे यह विचार आया कि, एकवार माशूकका दीदार कर लेना चाहिये ।दीपक तो चारों ओर जलही रहेथे उसी प्रकाशमें उन्होंने कबरकी मिट्टी अलग करके तावूतसे शाहजादीकी मृतक को बाहर निकाला और दीपकके सामने उसे लिटाकर उसके मुखको एकटक देखने लगे देखते देखते उनके हृदयमें ऐसा तरंग उठा कि इसे अपने पर्णकुटीतक

लेजाना चाहिये। बस। फिर क्या था कब्रकी मिट्टीको ज्योंका त्यों करके वह शाहजादीकी लाश उठाकर अपनी कुटीपर पहुँचे सद्गुरुकी ऐसी कृपा हुई कि,जबतक यह अपनी कुटीतक नहीं पहुंच गये तबतक किसी पहरेदारने करवटभी नहीं ली। अद्धमशाहने अपनी कुटीमें शाहजादीकी लाशको दीवारके सहारे बैठा दिया और जंगली लकडियोंको जलाकर उसीके प्रकाशमें उस मृतकको सम्बोधन करके कहने लगा।

होगयी आतश जब वहां शोआले जन।
बैठा उसके रूबरू यह खिस्तःतन॥
रोशनीमें आगके वह नीमजा।
देखता था हुस्न रूए दिलस्ताँ॥
बादिले पुरदर्द चश्मे अश्कबार।
देखता था उस परीरू की बहार॥
गोरे तनपर वह उसके पैठा कफन।
जामये शबनममें गोया यासमन॥
चिहरेका आलम कफनमें जो कि था।
बिद् कबदे चांदनीमें वह मजा॥
करके उसकी लाशको अद्धम खिताब।
यों लगा कहने जेराहे इजतराब॥
ऐबुते संगीं दिले ना आशना।
क्यों क्या मुझको बलामें मुबतिला?॥
क्यों दिखाकर दफ़तन अपनी फबन।
रंजमें डालाथा ऐ नाजुक बदन॥
दर्द व गममें अपने करके मुबतला।
एक मुद्दत तक मुझे रुसवा किया॥

मुझसे क्यों चाहेथी वह नादिर गोहर।
दो बरसतक क्यों रखाथा बहू पर॥
अहद गर तुझको वफ़ा करना न था।
मुझको जिन्दः छोडकर मरना न था॥
तुझमें कुछ बूए वफादारी नहीं।
यार होकर शवये यारी नहीं॥
तुझको गर दुनियांसे करना था सफर।
साथ लेना था मुझको ऐ सीम्बर॥
रूह तेरी बाग जन्नतको गयी।
देगयी इस रख्त जांको बेकली॥
हाल की मेरी खबर भी है तुझे।
कल नहीं पडती किसी करवट मुझे॥
बाग़ जन्नतमें किया तूने वतन।
मैं रहा बहरे अलम में गोते ज़न॥
हैफ़ है सद हैफ दीदारे हबीब।
बाद मरनेके हुआ मुझको नसीब॥
वाह ऐ चर्ख़ सितमगर वाहवाः।
तूने जालिम क्या सितम मुझपर किया॥
जीस्त में माना रहा दीदार से।
बाद मरनेके मिलाया यारसे॥
देखलेती यह भी मेरी बेकली।
जोबरआती सब तमन्नाये दिली॥
इसको भी शायद था कुछ मेरा कलक़।
होगयी जो दमके दम में जांबहक़॥
खागयी इसको गमें पिनहानः इश्क़।

आतशे उल्फत तुफे सोजान इश्क ॥
कत्ल जालिम तूने दोनों को किया।
इस परी रूसे जुदा मुझको किया ॥
जान इसकी तो हुई तनसे बदर।
जिन्दगी में मैं हूं मुर्दा से बतर ॥
यह तो मर कर हिज्रके गमसे छुटी।
तलमलाहट मुझको है अबतक वही ॥
वहशिया की तरह अपना माजरा।
कह रहा था उस परीरू से गदा ॥
वा जबाने हाल वह देती जवाब।
इश्कहै आ सौतरहके पेच ओ ताब ॥
मुझसे अपने दर्द गम कहता है क्या॥
मरगयी मैं तू तो जिन्दाभी रहा ॥
इससे बरतर क्या है दर्द ओ रंज इश्क।
जीती मैंने बाजिये शतरंज इश्क ॥
जीको अपने करदिया उसमें फना।
मुझस तू कहता है क्या यह माजरा ॥
देखकर अद्धम के यह रंजो महन।
हो गया बहरे तरद्दुम मौजजन ॥
देख कर उसमर्दके दिलका कलक।
जोश में आयी इनायतहाय हक ॥
कुदरते हक ने किया असबाब जमा।
जिससे यह दोनों हुए अहबाब ॥

इसप्रकार से अद्धमशाह शाहजादी के मृतकसे अपने विरह की बातें करता और रोता जाता था उसकी ऐसी दशाको देखकर

साहिबका कृपासागर लहराया । फिर क्या देर थी सब सामग्री इकट्ठी होगयी । अर्थात् ।

भूलकर जुल्मतसे रह को कारवाँ। कुदरते हक्कसे वहाँवारिदहुआ ॥

अंधेरी रात के कारण कोई व्यापारी काफला राह भूल कर इसी बन में आकर उतरा । जाडेकी ऋतुके कारण जब काफलेके आदमी आगकी खोज करने लगे तब दूरसे आगके प्रकाश को देखकर एक आदमी अद्धमशाहकी कुटीपरभी पहुँचा ।

कारवाँमेंसे कोईमरदे खुदा । देखकर बनमें उजाला आगका ॥
दिलमें अपने पुख्तः करके गुमाँ । खानए दुर्वेश है शायद यहाँ ।
आग लेने को वहां आया चला।ताकरे वह अपनी कुछ हाजतरवा॥
मुतसिलहुजरेकेजबपहुँचावहमर्द । रंगअद्धमका हुआदहशतसेजर्द

उसकी आहट पाकर अद्धम तो मारे डरके घबरा गये और कुटीके कोनेमें बने हुए गुफामें छिपगये । इधर तो यह हुआ, उधर वह आदमी जब कुटीमें आया तो भीतरके दृश्यको देखकर एकदम घबरा गया । अद्धमशाहने समझा था कि, कबरके रक्षकोंको सब हाल मालूम होगया है इससे उन्हींमेंसे कोई मुझे पकड़ने आया है और उस आदमीको मालूम हुआ कि,न जाने यह क्या चला है कि, शून्यस्थान घरमें कफनसे ढकी हुई मृतक देह बैठी हुई है और सामने आग जलरही है किसी जीवित पुरुष का पता नहीं है । वह अपने मनहीमन बहुत डर गया और पिछले पावँ फिरकर अपनी मंडलीमें गया । वहां जाकर उसने अपने सरदारको सब देखी हुई बातें एक एक करके सुनायीं जिसको सुनकर लोग बडे आश्चर्यमें आये । कुछ देरतक शोच विचार करके मण्डलीके सरदारने काफलेके साथके वद्य और अन्य कई मनुष्योंको साथ लेकर अद्धमशाहकी कुटीपर जाने-

का विचार किया । और प्रथम मनुष्यको जो वह सब दृश्य देखकर आयाथा आगे करके कुटीपर जा पहुंचा ॥

थाक़जायकारउनमेंएकतबीब । हाज़िरकोदानावहुशियारोलबीब ॥
लेकेसाथउसकोअमीरेकारवाँ । सुनतेही इस बातकेपहुंचावहां ॥
थी जहां रौनक फ़िज़ा वह हूरज़ाद ॥
पहुंचे यह दोनों वहां मानिन्द बाद ॥
बेतअम्मुलबेतवक़ुफ़केदवाँ । यह गयेवहरोशनथीआतशजहां ॥
जाके देखा फिर हक़ीक़तहैवही । जिसतरहकहताथावहमरदेरही॥
देखकरउस हालको शुसदर रहे । लबगुज़ाँ हैरत जदा मुज़तररहे॥
आइनेसाँ शक्लजब आयीनज़र । होगये हैरानदोनों देख कर॥
बोला आखिरवह हकीमें नुक्तेदाँ। रंगमेंमुर्देके यह रौनक कहाँ ॥

वहां जाकर उन्होंने सब दृश्य वेसेही ठीक ठीक देखा जैसा उपर्युक्त मनुष्य ने कहा था । प्रथम तो वैद्य सहित वह व्यापारी आश्चर्यमें आया किन्तु थोडी देर तक शाहजादीकी ओर ध्यान पूर्वक देखनेपर वैद्यने जब कहा कि,यहऔरत मरी नहीं है किन्तु सकते के रोग से ग्रसित हो अचेत होगयी है तब तो उपरोक्त (काफलेके) सर्द्दार और भी अधिक आश्चर्य में आया उसने वैद्य से कहा क्या यह (शाहजादी) अच्छी भी हो सकती है ? वैद्य ने उत्तर दिया अभी अच्छा करताहूं । पश्चात् वैद्यने अपने पाससे नशतर निकाल कर शाहजादीके हाथ की रग को नशतर से छेदा जिससे रक्त बहने लगा। थोडी देर तक लोहू निकलता रहा और जब दूषित रक्त शरीरसे निकल गया तब शाहजादी सचेत होगयी ।

सचेत होतेही शाहजादीने जैसेही आँख खोली अपने सामने दो अपरिचित मनुष्योंको खडे देखकर लज्जा और आश्चर्यमें

आकर घूँघट तानने लगी। तब तो अपने शरीर पर कफन देख कर भय और आश्चर्य में आई। फिर जब इधर उधर दृष्टि डालकर घरकी दशाको देखने लगी तब तो आश्चर्य, भय, लज्जा और व्याकुलता तथा शादी रोबद सबही उसके सन्मुख आकर खडे होगये। एक दो क्षण तक तो पत्थरकी मूर्तिके समान चुप बैठी रही फिर चकित दृष्टिसे सन्मुखके खडे आदमियोंसे शील और लज्जा पूर्ण वाणीसे इस प्रकार बात चीत करने लगी॥

शर्मसे सरको किया फरो।
पूछा उसने तुम बताओ कौन हो ?॥
मैं कहाँ हूँ और है यह किसका मकाँ।
घरसे मुझको कौन लाया है यहाँ॥
है कहाँ वह ताज व तख्ते जरनिगार।
जामे लालो कूजेहाए आबदार॥
ख्वानए जरबफ्तपोश अपना कहाँ।
मखमलो दीवारका फर्श अपना कहाँ॥

शाहजादीने कहा, कि मेरे राजमहलसे उठाकर क्यों औरकिस प्रकारसे मुझे यहाँ जंगलमें कफन पहिना कर किसने बैठाया है? इसका वृत्तान्त मुझसे कहो। शाहजादीकी बातों को सुनकर हकीम और व्यापारीने उत्तर दिया कि, हम लोगोंको इन बातोंकी कोई भी खबर नहीं है कि, तुम कौन हो ? तुम्हारा घर कहाँ है ? और यह घर किसका है ? तुम्हे कफन किसने पहिनाया है ? और यहां लाकर किसने बैठाया है ? हमारा कारवाँ अँधेरेके कारण मार्ग भूलकर इस ओर आ निकाला था। हमारे साथका एक आदमी आगको ढूँढ़ता ढूँढता यहाँ आया और तुम्हें

मृतकके समान किन्तु बैठी हुयी देखकर उसने डर कर पीछे पाँव जाकर हमको समाचार दिया। जिससे आश्चर्यमें आकर कौतूहल वश हम यहाँ तुम्हें देखनेको आये। यहाँ आकर हमारे हकीम साहिबने तुम्हें देखकर कहा कि तुम मरी नहीं हो किन्तु सकतेकी बीमारीमें अचेत होगयीहो। फिर उन्होंने तुम्हारी दवा करके अच्छा किया है जिससे अब तुम बात चीत करने को समर्थ हुयी हो। इतना कह कर व्यापारीने कहा इसके अतिरिक्त और हम कुछ नहीं जानते अब तुम अपना वृतान्त सच्चा सच्चा हमसे वर्णन करो कि,तुम कौन हो?तुम्हारे माता पिता का नाम ग्राम क्या है? औ तुम्हारे ऊपर क्या २ बीतीहै? ॥

कर ब्याँ किस गुलिसताँ का गुलहै तू।
पाचीहै किस बोस्ताँ में रंग व बू॥

इधरतो यह बातें होरही थीं उधर तहखानेमें बैठे हुए अद्धमशाह कबरके पहरे दारोंके भ्रमसे भयके मारे डरते हुए बडी सावधानी से कान लगाकर बाहरकी बातें सुन रहेथे। जब उन्होंने शाहजादीको बात करते सुन लिया तब उनकी और ही दशा होगई। अब बाहर निकलकर शाहजादीके पास जानेको बार बार वह साहस करने लगे। फिर तो गारके द्वारसे उन्होंने मुहँ निकाल कर दोनों आदमियोंको बडे ध्यानसे देखकर जब निश्चयकर लिया कि,वे कबरके पहरेदार नहींहैं तब एकदम बाहर निकल आये। बाहर निकलकर उन्होंनें कुटीके बाहर अन्धेरेमें खडा होकर शाहजादी और व्यापारीकी बात चीत सुनने लगे। और जब उन आदमियोंके रूप रंग और शारीरक लक्षणों से यह बात निश्चय होगई कि, वे न तो जासूस हैं न कोई बुरे आदमीहैं तब आनन्दके समुद्रमें गोते खाते हुए एकदम कुटीके भीतर

जाकर खडे होगये और उपरोक्त दोनों नवागत पुरुषोंको देश कालके आचारके अनुसार नमस्कार आदि करके शाहजादीकी ओर देखते हुए खडे होगये।

इनको वहाँ आता देखकर उनके वेष और स्वरूप परसे उन लोगोंने निश्चय किया कि, इस पर्णकुटीका स्वामी यही है। ऐसा निश्चय करतेही वहां और शाहजादीके पूर्ण वृत्तान्त जाननेकी पूरी इच्छा व आशा उनके हृदयमें निश्चय होगयी। उनलोगोने अनुमानसे यहभी निश्चय कर लिया कि, हो नहो यह इस स्त्रीके ऊपर आशिक है जिससे प्रेममें पागल होकर इसके मृतक कहींसे यहां उठालायाहै अब क्षण२में उनकी उत्कण्ठा बढनेलगी जिससे अधिक समय तक न ठहरकर व्यापारी और हकीमने अद्धमशाहसे पूछा कि, ऐ बन्दः खुदा सच कहना तू कौन है? और यह अनूपम शोभामयी सुन्दरी कौन है। तू इसें यहां कहासे और किस प्रकारसे लायाहै? सब वृत्तान्त सत्य२कहदे। उनकी बातको सुनकर अद्धमशाहनें आदिसे अन्त तक शाहजादीपर आशिक होना, वजीरका मोती मांगना, दोवर्षतक संसार में भटककर मोती लाना, फिर वजीरकी प्रतिज्ञा भंग करके उन्हे मारकर फेकवा देना, चेत आनेपर शाहजादीकी मृत्युका समाचार पाकर कबरस्थानमें जाकर पहरे वालोंकी आंख बचाकर कब्र खोदकर लाश बाहर निकालकर लाना आदि सब वृत्तान्त कह सुनाया। अद्धमशाहके आश्चर्यमय वृत्तान्तको सुनकर उन दोनोंके सहित शाहजादी भी चकित होगयी। अपने लिये अद्धमशाहके महानकष्ट उठानेकी बात और उसके सचे प्रेमके वृत्तान्तको सुनकर शाहजादीभी मनही मन उनपर आशिक होगयी।

इश्कने अद्धमके वह तासीरकी ।
वह परीरू उस पैं आशिक हो गयीं ॥
देखकर एहवाल अद्धमका तबाह ।
चश्म नम गमसे हुई वह रश्केमाह ॥
गुजरी जोजो उसपै थी तकलीफ औ दर्द॥
सुनके दुखतर होगयी दहशतशे जर्द ॥
देखकर अद्धमको यों पजमुर्दे हाल ।
अया दिलमें उसपरीरूके ख्याल ॥
मेरी खातिर इसनें यह रंजो बला ।
लेके सरपर कर दिया जीको फिदा ॥
खींचकर क्या २ अजीत औ बला ।
मिहनतो तकलीफो रंजै लादवा ॥
बादमरनेकेभी यह आशुफतः हाल ।
लाश मेरी कब्रसे लाया निकाल ॥
इसके बायस फिर खुदानेंदी हयात ।
जीस्तका मेरी सबबहै इसकी जात ॥
गर न होता मुझपै आशिक यह जवां।
कब्रमेंसे क्यों यह फिर लाता यहाँ।
रूकके दम यकदममें मैं होती फना॥
जिस्म होता तमए मूरो मारका ॥
थी यह इस दुर्वेशकी तासीरइश्क ।
मुर्दा जिन्दाहो है यहतदबीरइश्क ॥
जीस्तदुनियाकीहै बसख्वाबोख्याल ।
इस जहाँकी इश्क पर तु खाक डाल ॥
तालिबेदुनिया नहो अब जीनहार ।

दिलसे करतूभी फकीरीअखतियार ॥
हैयहजबतक यहजिन्दगीमुस्तआर ।
करइसे मसरूफ यादे किर्दगार ॥
लज्जते दुनियायहूँ से दरगुजर ।
यादहकमें बांध चुस्त अपनी कमर ॥
दमजो बाकी है न इनको यों गँवा ।
सीख इस दुर्वेश से राहेखुदा ॥
जीतेजी तू आपको मुर्दाबना ।
खाकमें इसजिस्म खाकीको मिला ॥
करइसी दुर्वेशसे अपना निकाह ॥
दोनों आलममें हो ता तुझको फलाह॥

शाहजादी मनहीमन अद्धमशाहके साथ रहकर अपना जीवन व्यतीत करने का प्रण कर रहीथी इतनेमें व्यापारीने अद्धमशाह और शाहजादी दोनोंको सम्बोधन करके कहा कि, तुम दोनों के वृतान्त ज्ञात हुए। तुम दोनोंकी दशा ऐसीहै कि, परमात्माने दोनोंको परस्पर एक दूसरेके प्राण रक्षा का कारण बना दियाहै, अब तुमलोग यह कहो कि, तुम्हारी इच्छा क्याहै ? अब तुमलोग क्या करना चाहते हो ?। यदि तुम्हे हमारे साथ चलना हो तो संध्याको अपना कारवाँ यहांसे जानेवालाहै हमारे साथ चले चलो तुम्हे किसीप्रकारसे दुख न होगा। हम अपनी शक्ति अनुसार तुम्हारी सेवासे कदापि नहीं चूकेंगे। यदि हमारे साथ चलना स्वीकार न हो तो जो तुम्हारी इच्छा हो सो प्रकट करो।

सौदागरकी बातको सुनकर परम कृतज्ञता प्रकट करते हुए अद्धमशाहने कहा कि, यदि मेरा रोम २ जिह्वा बनजावे तब भी तुम्हारी भलाईका पुरस्कार मुझसे नहीं दिया जा सकता। तुम्हारी

हीकृपासे शाहजादी फिर जीवित होकर मेरे जीवनका कारण बनी है तुम्हारे इस पुण्यका फल परमात्मा तुम्हे देगा किन्तु जबतक मेरे शरीर में प्राण है तबतक मैं तुम्हारा कृतज्ञ रहूंगा। अब मुझे सिवाय शाहजादीसे विवाह करनेके किसी प्रकारकी और इच्छा नहींहै। यदि यह स्वीकार करले तो धर्मानुसार तुम दोनों अपने सन्मुख साक्षी बनकर हम दोनोंका सम्बन्ध जोड़दो।

अद्धमशाहकी बातको सुनकर व्यापारीने शाहजादीको कहा कि,हे शाहजादी! यदि अद्धमशाह न होता तो तू कब्रकी कब्रमें मर-करसंसारसे चलबसी होती। इसके अतिरिक्त उसने तेरे लिये कैसे २ कष्ट उठाये हैं अब उचित है कि, तूभी उसे स्वीकार करले। इसप्रकारसे अनेक बातोंके समझानेपर शाहजादीने उत्तर दिया कि, आप लोगोंकी मैं बहुत कृतज्ञ हूँ आप लोगोंकी आज्ञा कदापि उल्लंघन नहीं कर सकती किन्तु अद्धमशाह इस बातका प्रण करे कि, वह कभी मुझसे अलग न होगा और न कभी मेरी आज्ञासे बाहर जायगा तब मैं इसको स्वीकार करूंगी और मेरे विवाह का यही मुहर होगा।

शाहजादीकी बातको सुनकर अद्धमशाह आनन्दके मारे उछल पड़े और शपथ पूर्वक शाहजादीके कहे अनुसार प्रतिज्ञा करके शाहजादीके उत्तरकी प्रतीक्षा करने लगे। फिर शाहजादीने व्यापारी और हकीमसे कहा कि शरअ (मुसलमानी-

---

१ मुसलमानी धर्मानुसार विवाह करने के समय वरकी ओरसे कन्याके लिये मुहर की रीति पूरीकी जातीहै। जिसमें वर अपनी प्रतिज्ञाके साथ २ नियतरुपया या अशरफी का दस्तोवेज अपनी स्त्रीकेनामसे लिखदेताहै कि, वह आजसे उसके इतने रुपये का ऋणी हुआ प्रथम तो कभी वह उसे स्त्रीको छोडहीगा नहीं यदि किसी कारण वश उसे छोडना चाहें तो अमुक रकम देकरकेही छुटकार पासकेगा जब तक वह ऋण उसका न चुकादे तब तक वह उसको कदापि नहीं छोड सकता इसीका नाम मुहर है शाहजादीने अपना मुहर यही मांगा कि, यावज्जीवन अद्धमशाह छोडकरकहीं न जावे।

धर्मशास्त्र) के अनुसार विवाहके लिये दो साक्षीकी आवश्यकताहै सो तुम दोनों हमारे विवाहके साक्षी हो जाओ जिसमें लोक परलोकमें हम पापके भागी न होवें तब मैं विवाहको स्वीकार करूंगी । उन दोनोंने शाहजादीके बचनको मानकर साक्षी बनना स्वीकार किया और दोनोंकी गाठ जोड़ (पाणि ग्रहण) करा दिया । पश्चात् वे दोनों तो अपने कारवानमें चले गये और अद्धमशाह शाहजादीको पाकर परम आनन्दित हो अपनी पर्णकुटीमें बास करने लगे ॥

दोनोंमें परस्पर ऐसा प्रेम हुआ कि, कोई किसीके वियोग को क्षणमात्र के लिये भी सह नहीं सकता था । जङ्गलके फल फूल पत्ते और कन्द मूलपर वे अपना दिन बिताते और स्वर्गसेभी बढ़के आनन्दको मनाते थे ॥

कुछ दिनोंके पश्चात् शाहजादी गर्भवती हुयी और समय पूरा होनेपर परम सुन्दर पुत्रको प्रसव किया । उसी पुत्रका नाम अद्धमशाहने इब्राहीम रक्खा । किताबोंमें लिखाहै कि; अद्धमशाहके संगके प्रतापसे शाहजादी भी सर्वशुभ गुणोंसे सम्पन्न महान् तपस्विनी और भजनानन्दी होगयी थी । जिस समय उसे गर्भ स्थित हुआ था उस समय समस्त बन नाना प्रकारके फल फूल और मेवोंसे सम्पन्न होगया था । सदा वसन्त ऋतुकाही आनन्द वहाँ दीखने लग गया था । नाना प्रकारके पशु पक्षियों ने आकर वहाँ बास किया था । जिससे वह वन कानन बनबनकर स्वर्गके समान सुखदाई हो रहा था । इब्राहीमके जन्म लेनेपर उनकी आकृति सम्पूर्ण रूपसे हजरत इब्राहीम खली लुल्लासे मिलती थी इसी कारणसे उनका भी नाम इब्राहीम रक्खा । जिस समय शाह-इब्राहीम का जन्म हुआ वह एक सो एकसठ (१६१)हिजरीथी।

माता पिताने बड़े प्रेमसे इब्राहीमको पालना आरम्भ किया दो वर्षके पश्चात् उनको अन्न प्राशन कराया ॥

दोबरसपूरेकाजबवहहोगया। औरगिज़ाफिलजुमलेवहखानेलगा।
गैंबसेआनेलगेनादिरतआम।कुदरते एजिदसेउसकोबिलदवाम॥
उसकीवक्तसेलगेअशजारपर। अच्छी अच्छीवजअकेशीरींसमर
कुदरतेहकसेहुआवहदश्तोबर। गुलशनोंगुलजारपरभीफौकतर॥

आखिरकार देखते देखते बालक इब्राहीम सात बरसके होगये। अब अद्धमशाहको इसबातकी चिन्ता हुई कि बालकको विद्या अभ्यास कराना चाहिये सबसे पहले जैसा मुसलमानोंमें रीतिहै बालकको कुरान पढ़ाना आरम्भ किया। जब कुछ दिनों तक घरमेंही पढ़ाकर देख लिया तब एक दिन बालकको गोदमें लेकर अद्धमशाह शहरमें गये वहां ढूंढ़ते ढूंढ़ते एक सज्जन मोलवी साहेब मिले जिनके यहां इब्राहीमके पढ़नेको ठीक करके उनसे कह दिया कि, सबेरे मैं इब्राहीमको यहां रख जाया करूँगा और शामको आकर लेजाया करूँगा ।

अलगरज हर सुबह वह मर्दनेको।
लाता उस मुकतबमें इब्राहीमको ॥
उलफते कलबीसे अपने बिलदवाम।
फिर उन्हें लेनेको आता वक्त शाम ॥
था यही हररोज अद्धमका शआर।
आते जाते शहरमें बिलइज़्तरार ॥
थी जेबस शफकत उन्हे बेइन्तहा।
तनहा आना जाना दिलपर शाकथा ॥

(इब्राहीम अद्धमका बादशाह बनना ॥)

जबसे बलखके बादशाहकी इकलौती बेटीका उससे वियोग हुआ तबसे बादशाह बहुत उदास और दुखी रहने लगा।

उसका चित्त संसारसे उदास हुआ वह सदा दुर्वेश फकीर और ईश्वरके भक्तोंके संगमें रहने लगा। जहां किसी महात्माका समाचार पाता वहीं उनके दर्शनको चला जाता और अपनी शान्ति केलिये उनसे प्रार्थना करता। दूसरी आदत उसकी सदासे यह थी कि, जब कभी वह शहरमें निकलता तब मदरसे और मुकतबोंमें जाकर लड़कोंका पढ़ना सुनता और उन्हें मिठाई वगैरह देकर खुश करता और शिक्षकों को भी इनाम देकर लड़कोंको छुट्टी दिलाता। इसके अतिरिक्त एक संतने भी उसे कहाथा कि, मुकतबके लडकों को खुश रखनेसें तेरी मुराद कभी न कभी पूरी होजायगी। सो एक दिन बादशाहकी सवारी संयोगसे उसी मुकतबके पाससें निकली जिसमें इब्राहीम अद्धम पढ़तेथे। जिस समय बादशाहकी सवारी मुकतबके पास पहुँची उस समय बादशाहके कानमें बहुत मीठा और रीतिके अनुसार कुरान पढ़ते हुए किसी बच्चका शब्द सुनपडा। बादशाहने एकदम सवारी रोकली और कुछ देरतक वहाँही खडा खडा सुनता रहा। फिर तो उस शब्द पर इतना मोहित हुआ कि, सवारीसे उतरकर मुकतब मे पहुंचा।

गुज़रा उस मुकतबके आगे नागहाँ। मसहफ इब्राहीम पढता था जहाँ॥
बादशाहने जब सुनी उसकी सदा। दिलपै उसके कुछ असर पैदा हुआ
करके उसजा अपने घोडेंको खडा। पढना इब्राहीमका सुनतारहा॥

मुखरिजे इलफाज उसके महवशद।
सुनके अश अश कर गया हर जीखरद॥
था हमेशासे तरीका शाहका।
जिसजगह मुकतब सरेरह देखता॥
सुनता पढना जाके हरेक तिफलका।
करता फिर इनआम हरयकको अता॥

आता पढना जिसका खातिरमें पसन्द।
उसको देता नक्द औरों से दो चन्द॥
देके जर उस्ताद को शाहे निको।
छुट्टी दिलवाता था फिर हर तिफलको॥

अपने सदा की आदतके अनुसार बादशाहने मुकतबके हर एक लडके का पढना सुना और सबको इनाम भी दिया। परन्तु जब इब्राहीम की बारी आयी तब उस छोटेसे बच्चे का शुद्ध शुद्ध पढना, उसकी अदब के साथ बात चीत और उसके रंग रूप को देखकर बादशाह एकदम आश्चर्य सागर में गोता खाने लगा। उसके हृदयमें उस बच्चे का इतना प्रेम प्रवाह उमड चला कि वह हैरतमें पड गया। आखिर अपने प्रेम प्रवाह को रोक नहीं सका एक दम इब्राहीम को गोदमें उठाकर प्यार करने लगा। यद्यपि बादशाही रोब दाब से यह बात कदापि मुमकिन नहीं थी तथापि अन्तर्गत हृदयमें किसी अन-जानी शक्तिने ऐसा काम किया कि बादशाह अपना पद एक दम भूल गया, और इब्राहीम को उठाकर गले लगा लिया। इब्राहीम के हृदय में भी खून ने जोश मारा वह भी बादशाह के हृदय से चिपटगया। अब बादशाहके हृदय पर और भी बडा भारी प्रभाव पडा।

जुज्वकोहै जुज्वसे पैवस्तगी।
खून को है खून से दिलबस्तगी॥
दाब शाही से यह बिलकुल दूर था।
लेकवह इस अमरमें मजबूर था॥
दिलको अपने जब्रगो उसने किया॥
जोश उलफतपर न उससे रुकसका॥

जुज्वकोहै गर्चे जायद इजतरार ।
कलको भी बेजुज्वके कबहोकरार ॥
गो नहीं जाहिर का पैगामों सलाम ।
जुज्व कलमें है मगर पिनहाँ कलाम॥
दिलको हरेकके खलिशहै जो यहाँ।
है अनासिरकीकशिशयह ऐ जवाँ॥
जज्व अपने जुज्वको करतेहैं कल ।
उस कशिशकाहै बदनमें शोरोगुल ॥
हरबशरको है जो दिलमें इजतराब ।
खींचतीहै उसको पिनहानीतनाब॥
रिश्तए उलफसे रहताहै बंधा ।
जुज्व अपने कुलके साथ ऐ बाखुदा॥
जुज्व तनकोहै जो कुलके साथरब्त ।
है कशिशसे उसकी तेरी अक्लखब्त ॥
अपनी गुलफतसे तुझे है यह गुमाँ ।
मुझको जोफे कल्ब और मांदा है अयाँ ॥

बादशाह दिल भरके इब्राहीमको प्यार करलेने पर जैसे ही गौर से उसकी ओर देखने लगा वैसेही उसे अपनी लडकी कीं याद आयी। लडकी की याद आतेही उसकी सूरत बादशाह के सामने आखडी हुई। अब बादशाह देखताहै तो इब्राहीमकी और उसकी लडकी की शकल में बाल बराबर भी भेद नहीं है। कहते हैं कि, उस समय बादशाह इतना रोया कि, उसका चेहरा लाल होगया और आगे के कपडे आंसु से भीग गये। फिर जब मन कुछ ठहरा तब बादशाहने मुल्लाजीसे पूछा कि,–यह लडका कहां रहता है ? इसका बाप कौन है ? यह

यहां कितने दिनोंसे पढने आया है ? मुल्लाजीने बादशाहके प्रश्नोंका यथा योग्य उत्तर दे दिया।

दस्त बस्तः यों मुअलिमने कहा। बाप इसका है फ़कीरे बेनवा॥
रहताहैसहरामें आबादीसेदूर। अहल दुनियासेनिहायतहैनफूर ॥
अद्धम उसका है लकबऐनेकपै । इसपेसरका नाम इब्राहीम है॥
एक बरस गुजराकिपढनेको यहां। आताहैयहतिफ्लऐशाहेजहाँ॥
सुबहको लाताहै बाप इसका यहां। शाम कोलेजाताहैआकरवहाँ।
है जेबस दुर्वेशव ह साफ़ी निहाद। है मुझे हदसे ज्यादा एतकाद॥
जसतनअल्लाहइसेबहरेसबाब । यादकरवाताहूं रब्बानी किताब॥

मुल्लाजीकी जबानी अद्धमशाहका नाम सुनतेही बादशाह चौंक उठा। उसे पहलेकी सब बातेंः—अद्धमशाहका शाहजादी पर आशिक होना, उसका मोती लाना, वजीरका उसे धक्का देकर निकाल देना, उसका छातीपर मुक्का मारना और शाहजादीका मरजाना इत्यादि—याद आगयीं। तब बादशाहने अपने मनमें अनुमान किया कि, हो न हो इसमें जरूर कोई छिपा हुआ भेद है। नहीं तो इस बालकके ऊपर मेरा इतना प्रेम क्यों होता ? दूसरे इसका रूप मेरी बेटीसे पूरा पूरा मिल रहाहै। सो इसमें अवश्य कुछ भेद छिपा हुआहै। इसलिये इस बालकको अपने महलमें लेचलकर बादशाह बेगमको दिखलावें जिसमें उसके हृदयमें कुछ संतोषहो। इतना सोचकर बादशाह इब्राहीमको गोदमें लिये हुए उठ खडा हुआ और मुल्लाजीसे कहा कि, जब इस लडके का बाप आवै तब उसे मेरेपास भेज देना वहीं से वह अपना लडका लेजायगा। फिर मुल्लाजीको बहुत कुछ इनआम देकर रवाना होगया।

महलमें पहुंचकर बादशाहने बेगमको बुलाकर इब्राहीमको उस

की गोदमें रखदिया।बेगमने जैसेही इब्राहीमको गौर करके देखा वैसेही लडकीकी शकल देखकर एकदम बेहोश होकर गिरपडी। फिरतो महलमें धूम मचगयी। बेगमको होशमें लानेके सैकडों उपाय कियेगये। जब वह होशमें आयी तब इब्राहीमको गोदमें लेकर बार बार बलाएँ लेने और नाना प्रकार के संकल्प विकल्प मनमें करने लगी।

गोदमेंफिर उसकोलेकरनागहाँ।सांस ठंढीभरके करती थी ब्याँ॥
ऐ मेरे लखते जिगरके हम शबीह। ऐ मेरे नूरे बसरके हम शबीह
ऐ मेरे रशके कमरकेहमसिफत।ऐ मेरे गुल बर्ग तरके हम सिफत॥
ऐ मेरे उस गुलबदनके हम अनाँ।ऐ मेरे शीरी दहनके हम निशाँ॥
ऐ मेरे उस लाबुते चींके करीं। ऐ मेरे आहुए मिराकीके करीं॥
ऐ मेरे ताबिन्दः अख्तरकीशबीह।ऐ मेरे मेहरे मनौवर की शबीह॥
ऐमेरे नादीदः दुनियाके मिसाल।ऐमेरे फरजन्द जेबाके मिसाल॥
ऐ मेरे युसुफकेहमतजोंतराश।ऐ मेरे लैलाकेहम वज अवकमाश॥
ऐ मेरे जाने जहांके हम अनाँ। ऐ मेरे गुंचः देहाँके हम अनाँ॥
ऐ मेरे उस मूकभरके हम कमर।ऐ मेरे याकूत लबके हम गोहर॥

देताहै हर जुज्व तेरा बे गुमाँ।
युसुफे गुम गश्तः मेरे का निशाँ॥
है जो हर हर जुज्व तेरा बिलएकीं।
यादगार लैलीय महमल नशी॥

इस प्रकार अनेक तरहसे बेटीका स्मरण करलेनेके पश्चात् बेगम ने इब्राहीम से पूछा कि, तेरी मां और बापका नाम क्या है? इब्राहीमने बापका नाम अद्धमशाह और मां का नाम वही बतलाया जो बादशाह की लड़कीका नाम था।

शाहकी दुखतरका जो कुछ नामथा।वहीइब्राहीमने मांका लिया॥

और वतायानामअद्धम बापका।दश्तमें अपनीकहीरहनेंकी जा ॥

अद्धम शाहके नाम को बलख निवासी स्त्री पुरुष बच्चे से वृढे तक सभी जानतेथे। क्यों कि वह शाहजादी पर आशिक था। और शाहजादीका मरजानाभी अद्धम शाहकेही शापका फल लागान मान रखाथा। यही कारण है कि, अद्धमशाहको सव लोग महात्मा सिद्ध समझते थे। इब्राहीमके मुखसें बादशाहजादी और अद्धम दोनोंका नाम सुनकर लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। बादशाह और बेगमके अन्तःकरणमें न जानें कितनी कल्पनाएँ अतीथीं और कितनी आशा और निराशा उनके चारों ओर फिररहीथीं। आखिर बादशाह बेगमने अपने हाथसें इब्राहीमको स्नान कराकर अच्छे २ कपडे पहानाया और उत्तम उत्तम पदार्थ उसे खानेको दिया। फिर बादशाह इब्राहीमको बेगमके पास छोडकर अपने खानगी स्थानमें जा बैठा और इस भेद पर विचार करनेलगा। अन्तमें बादशाहने निश्चय किया कि, अद्धमशाहसें इसका वृत्तान्त पूछनाचाहिये वह संसार त्यागी फकीर है वह कदापि झूठ नहीं बोलेगा।

बादशाहके दिलमें आया यों ख्याल ॥
पूछिये अद्धमसे उस दुखतर का हाल ॥
फर्कउसकीरास्तगोयीमें नहीं।जो कहेगा वह सचहै बिल यकीं ॥
मर्द हकहै पाय बन्दे रास्ती। झूठ हार्गिज न बोलेगा कभी ॥

इतना विचार कर बादशाह ने दरवान को बुलाकर हुक्म दिया कि अगर कोई लड़का लेने आवे तो उसें द्वारपर मत रोकना बल्कि उसे सीधा मेरे पास पहुँचाना।उसको प्रतिष्ठापूर्वक ले आना,खबरदार उसकें मनमें किसीप्रकारसे बुरा न लगने पावे इतना हुक्म देकर बादशाह अद्धमशाहकी इन्तजारी करने लगा।

उधर अपने नियत समय पर जब अद्धमशाह इब्राहीमको लेनेके लिये मुकतबमें आया तब उसे मालूम हुआकि, इब्राहीमको बादशाह अपने महल में ले गयाहै और कहगयाहै कि अद्धमशाह वहाँही से उसको लेजावे। उसे किसी प्रकार डरना नहीं चाहिये जिस समय वह आयेगा उसी समय अपना लडका लेजायगा। यह सुनतेही अद्धमशाहने बेकरारहोकर सीधे बादशाहकी ड्योढ़ी पर जा खडा हुआ और दरवानसे कहाकि, बादशाहसे जाकर कहदेकि, इब्राहीमका बाप उसे घर लेजाने आयाहै। जल्दी उसे बाहर भेजदो।

जैसेही अद्धमशाहके आनेकीखबर बादशाहको पहुंची वैसेही बादशाहनेउसे अन्दर अपने पास बुलालिया और बडी प्रतिष्ठा केसाथ उच्चासन पर बैठाकर ईश्वरका शपथ देकर उनसे पूछाकि

सचबता: तुझकोसौगन्देखुदा। नामहैइसतिफलकीमादरकाक्या॥
हैवहकिसकीदुखतरेआलीगोहर। रास्तकहदेकौनहैउसकापदर॥

बादशहको बातको सुनकर अद्धम शाहने कहा "ऐ बादशाह वह वही तुम्हारी लडकी है जिसपर मैं आशिक हुआथा"।

सुनकरअद्धमनेकहाऐबादशाह। हैवहदुखतरआपकीबेइश्तवाह॥
मादरइसकीहैवहीरशकेकमर। जिसपैमैंआशिकहुआथादेखकर॥
नामभीउसकादियाउसकोबता।दुखतरेसुलतानकाजोकुछनामथा॥

अद्धमकी बातको सुनकर बादशाहके आश्चर्यका पारावार नहीं रहा उसने आश्चर्य मुद्रासे अद्धमशाहसे कहा कि मेरी बेटी को मरे हुए तो मुद्दत होगयी। उसको हम लोगोंने कब्रमें गाडदिया उसकी तो हड्डी तक गलगयी होगी।वह अब तुम्हारे घरमें कहांसे आगयी? क्या कोई आजतक मरकरके भी जियाहै।

बादशाहकी बातको सुनकर अद्धमशाहने शाहजादी केजीने और विवाह होने आदिका सब वृत्तान्त कह सुनाया।

जबकहाअद्धमनेऐआलमपनाह । मुबतलासकतेमेंथीवहरश्कमाह॥
खल्कउसदुखतरकोमुर्दाजानकर । कब्रमेंचुपरखकेआयीअपनेघर॥
कब्रमेंउसकोकियाथादफनजब। एकपहरभरसेंसिवागुजरीथीतब ॥
मिट्टीजोडालीथींउसन्दूकपर । जिसकेअन्दरथीवहमाहेसीमवर ॥
कुदते हक्सें हवाका रास्ता । रहगयाथा कब्रकें अन्दर खुला ॥
था जिलाना बसकि मन्जूरे खुदा। इस सबब सें कब्रमें रखना रहा॥
मुझको जज्वे इश्कमें आयी तरंग । कब्रपर उलक गया मैंवेदरंग ॥
पासवान कब्र सोते देखकर ।लाश दुखतर को किया मैंनेबदर॥
लाशको मैंने निकालाकब्रसे ।फिरकिया हमवार मिट्टी डालक॥
मैं वलेमुर्दाहोउसकोजानकर ।रखकें उसकीलाशकोबलायसर ॥
जल्दतरउस दश्तोबरमें लेगया । थीजहां ऐ शह मेरीरह नकीजा॥
करकें रौशन आग मैं बैठा वहां । बा हजारों दर्द व अन्दोहो फिगां
देखताथा हुस्नकी उसकें बहार ।और रोताथा निहायत जारजार॥
कुदरते हक्सें हुआ बारिद वहां ऐन उस हालतके अन्दर कारवाँ॥
देखकर आतशको रौशनएकजवां । आगलैंनके लिये आयावहाँ॥

पास वाने कब्र उसको जानकर ।

फर्त दहशतसे हुआ दिलमें मुनतशिर ॥

दश्तमें मुर्दे को तनहा देखकर । होगया दहशतसे लरजाँ वह बशर
कारवाँमें जाके दी उसने खबर । उसमें था मर्द तबीबे पुर हुनर॥

साथ लेकर उसको मीरे कारवां।

सुनतेही उस बातके आया वहां ॥

देखकर दुखतरको उसने योंकहा। हैयहसकतेकेमर्जमें मुबतला ॥

कहकेबिसमिल्लाह नशतर को लिया।

उससे की झट पट रगे कुफान वा ॥

जबकिनिकलाउसकेतनमेसेलहू । होगयीहुशियारवहफर्खुन्दःखू॥

करदियाआंखो कोउसनेअपनेवा । पूछाउनदोनोंसेक्याहैमाजरा।
कौन हो तुम और यह किसकाहै मकां ।
घर से मुझको कौन लाया है यहाँ ॥
मैं भी आखिर सुनके उनका मकाल ।
अन्दर आया करने को दरियाफ्त हाल ॥
देखकर जिन्दा मैं उसको ऐ शहा ।
लाया सिजदए शुक्र यजदांका बजा ॥
पूछा मुझसे फिर उन्होंने माजरा ।
मिन व अन एहवाल मैने कह दिया ॥
मेरा और दुखतरका एजाबो कबूल । होगया पेशे गवा हानँ अदूल॥
फिर हुआ जो लुफवहन आमेंखुदा। पैदा इब्राहीमयह उससेहुआ॥
माजराहै यहबेला कम और कास्त ।
जो कहा मैंने यहहै सब रास्त रास्त ॥

अद्धमशाहके द्वारा अपनी बेटीका सब वृतान्त सुनकर बादशाह मारे खुशीके उछलपड़ा। वह उसी समय उठकर महलमें गया और बादशाह बेगमसें सब वृत्तान्त कहसुनाया। बेगमने बेटीके मिलने की खुशीमें दान पुण्य खैरात करना आरम्भ कर दिया।उधर बादशाह नें शाहाजादीके बचपनकी सखी सहेहेलियों और उसको दूधपिलानेवाली बुढियों को पालकी पर सवार करा करा कर शाहजादीकी जांच करनेको भेज दिया। तब तक आप अद्धमशाह को बातोंमें फंसा रखा।

थोडीदेरमें जांच करनें वालियों ने आकर बादशाहसे कहा कि,सच मुच वही शाह ज़ादीहै। फिर तोबादशाहने बेगमको साथ लेकर उसी समय बेटी से मिलनें के लिये जंगलमें जानें की तैयारी की । आगे आगे बेगमोंके सुहाफ और पीछे सब

दरबारियों सहित बादशाहकी सवारी रवाना हुई । जब अद्धम-शाहकी कुटीके निकट सवारी पहुँची तब बादशाह नीचे उतर पडा और बेगम को साथ लेकर पाय प्यादे झोपडी की ओर चला । बादशाहने देखा कि, एक टूटी फूटी झोपडीमें सैकडों जगह से फटे हुए कपडे पहनी हुई घास की टूटी चटाईपर बैठी हुई शाहजादी निमाज पढ रहीहै। जब वह निमाज पढचुकी तब लौंडियों ने हाथ जोडकर कहा कि, आपके पिता और माता आपसे मिलने को आये हैं। दासीकी बात सुनतेही शाहजादी दौडकर माता पिताके पग पर गिरपडी । फिर दोनों ने उसे उठाकर गले लगाया और शकुन के आंसू बहाकर उसे शाही महल में अपने साथ ले जाने की इच्छा प्रकट की । शाहजादी ने कहा आपकी आज्ञा मेरे शिर पर है किन्तु पतिकी आज्ञा विना मैं यहां से एक पग भी आगे नहीं बढ सकती॥ बादशाहने अद्धमशाह से आज्ञा दिलादी । फिर तो उसके वस्त्र फकीरी वेष को उतार कर शाहाना कपडोंसे उसे सजाया और बेगम ने अपनी पालकीमें साथही बैठाया। वैसेही अद्धमशाह और बादशाह एक ही सवारीमें बैठ कर शाहीमहल को रवाना हुए । बादशाहने महलमें पहुँच कर उत्सव करने की आज्ञा दी ॥

राह हकमें माल व जर बिलकुल दिया ।
इस कदर खैरात की बेइन्तहा ॥

इस प्रकार खूब धूम धामके साथ आनन्द मनाया गया ॥ चौथे दिन अद्धमशाहने बादशाहसे कहाकि, फकीरों का एकान्तमें रहनाही अच्छा है इसलिये मुझें तो जंगलमें ही जाने दीजिये । अगर आप चाहे तो मेरी स्त्री और मेरा लडका आपकी सेवामें रहेगा। बादशाह ने बहुत प्रकार से समझा

कर अद्धमशाह को अपने पास रखना चाहा किन्तु उन्होंनें एकभी नहीं माना आखिर मजबूरीसे बादशाहने उन्हें बिदा किया। अद्धमशाह अपनी उसी कुटीमें जाकर रहने लगे जब उनका जी चाहता तब आकर अपने लडके और स्त्रीको देख जाते। कहते हैं कि, जबतक जीते रहे तबतक उनकी यही रीति रही।

बादशाहनें अपने घर लाकर इब्राहीमको पढाने के लिये अच्छे अच्छे शिक्षक सबप्रकार की विद्या और गुणसे पूर्ण देश देशसे बुलाकर रखा। "होन हार विरवानके होत चीकने पात" के अनुसार इब्राहीमकी बुद्धि ऐसी तीव्रथी कि शिक्षकलोग यदि एक बात बतलाते तो इब्राहिम उससे दश अधिक निकालते इसप्रकारसे सद्गुरू की कृपा द्वारा इब्राहीमने थोडेही वर्षोंमें अनेक विद्या और कला कोशल तथा राजनीतिमें योग्यता प्राप्त करली। समय पाकर बादशाहने इब्राहीमको राज्य सिंहासन पर बैठाकर बलख का बादशाह बनादिया।

नानाकी गद्दी पर बैठकर इब्राहीम अब इब्राहीमशाह हुए। राज्यके कामको इस योग्यता से किया कि, शत्रु और राज्य के लालची दूसरे बादशाह लोगोंने स्वयं प्रशंसा करके उनसे दोस्ती करली।

इस प्रकारसे रामराज्य सा राज्य करने पर भी इब्राहीमशाह को फकीरों दुर्वेशों की संगति का ऐसा चसका लगा था कि, दिन रातमें राजकाजसे जभी अवकाश मिलता तभी साधु सन्तों के पास पहुंचते। चाहे कितनेही दूर पर किसी अच्छे महात्मा के रहने का समाचार पाते जरूर वहां जाकर उनसे सत संग करके लाभ उठाते। इसी प्रकार राज्य करते हुए कई वर्ष

बीतने पर उनके नानाका जिन्होंने अपना राज्य इन्हें देकर आप भजनके लियें एकान्त वास किया था देहान्त होगया।

नानाके मरजानपर इब्राहीम शाहके मन पर बडा धक्का लगा उनका चित्त संसारसे एकदम वैराग्यको प्राप्त हुआ अब इन्हें दिन रात परलोक की चिन्ता रहने लगी।

यानें इब्राहीमशाहे दो जहाँ॥
करताथा जाहिरमें गो कारे शहां॥
लैक था दुनियासे दिलबरदाशता॥
बेवफा व बेबका पिन्दाशता॥
कारदुनियाँस नथी चसपीदगी॥
कुछ तहेदिलसे नथी गरवीदगी॥
जानता था कार दुनियाँ सुस्तआर॥
करताथा बहरे जरूरत कारो बार॥
मुल्करानी उसनेकी बबा आब ताब॥
दसबरसवल्लाहआलमबिलसवाब॥
अदल अपने असिरमेंऐसा किया॥
महो मुतलक होगया जौरो जफा।
शमआपरवानेकोदेतकलीफअगर॥
किताजल्द उसकाकरे गुलगीर सर॥
जुल्मसे तोडे जो बुज ठन्नी हरी॥
फेर दे कस्साब गर्दन पर छुरी॥

इसके आगे नानाकी मृत्यु देखकर इब्राहीमशाहके हृदयमें विरागका अंकुर विशेष वृद्धिको प्राप्त हुआ और सद्गुरुने जिस प्रकार उन्हें उपदेश देकर सत्य पदको प्राप्त कराया उसका

विशेष वृत्तान्त सुलतानबोधमें लिखा है। यद्यपि और और लिखने वालोंके विचार और लिखनेसे सुलतानबोधमें बहुत कुछ भेद पडता है तथापि सबका लक्ष एकही है और सबने अन्त में फल भी एकही दर्शाया है। इसकारण और यहाँ पुस्तक बढ़ जानेके भयसे अधिक न लिख कर शाह इब्राहीम अद्धमके फकीर होजाने पश्चात् की करामात औ प्रचार की बातों में से थोडी सी बातें यहाँ लिखकर यह ग्रंथ समाप्त किया जायगा।

शाहइब्राहीम अद्धम का स्फुट वृत्तान्त।

वार्ता १।

कहतेहैं अद्धम हुए जिस दम फकीर।
छोड सुलतानीकासब ताजो शरीर॥
मालोज़र जितना खजानें बीच था।
लेके दरियामें दिया सारा डुबा॥
पूछा एक ने क्या किया यह ऐ मलिक।
क्यों न हर एकको दिया यह ऐ मलिक॥
दरजबाब उसको कहा यह मालोजर।
यांदये बोग्जंब हसदे नखवंत का घर॥
यों सुना है मैं बुजुर्गोंसे कलाम।
जानतेहैं इस मिस्लको खास व आम॥
आप पर जो चीज होवे ना पसन्द।
गैरपर उसको मत रखना पसंद॥

१ बादशाही, राज्य। २ राजमुकुट। ३ राजसिंहासन। ४ धनदौलत। ५ बादशाह ६ उत्तरमें। ७ पूंजी। ८ कीना गुस्सा, क्रोध,आंटी। ९ ईर्षा। १० अभिमान। ११ बडों। १२ दूसरा।

❀ वार्ता २।

बादशाहत छोडकर अद्धम चले
कोहं व सिहराकी तरफ़को शहरसे ॥
बेटेको अपने किया कायममुकाम ।
बादशाहत वह लगा करने तमाम ॥
आपली फिर राह सिहरा की गरज ।
कुछ न रखी माल दुनियाकी गरज ॥
साथ एक प्याला लिया और बोरिया ।
एक मिसवाक और एक तकिया लिया ॥
एक सोजन खलकां सीनेके लिये ।
साथ यह असबाब जरूरी ले लिये ॥
शहरसे बाहर निकलजोकी नजर ।
सोते देखा एकको वा खाकपर ॥
बोरिया फेंका वहाँ और यह कहा ।
खाकसारोंको जमीन है बोरिया ॥
आगे जा देखा तो एक बेचारः आंब ।
औकसे पीता है बैठा बे हिजाब ॥
हाथसे प्यालेको भी फोडा वहीं ।
यानी पी लेवेंगे हम पानी योहीं ॥
आगे देखा एक सोताहै गरीब ।
हाथको रखे सिरहाने बेनसीब ॥
तकिया भी छोडा फजूली जानकर ॥
यानी एक यह भी है मुझपर बारसर ॥

❀ इस वार्तामें जिन २ शब्दोंपर अंकदिये गये हैं उनका अर्थ वार्ताके अन्तकी टिप्पणी में देखो।

आगे जाकर देखा तो एक नेक[१४] खो ।
उंगलियोंसे मांजताहै दांतको ॥
हाथसे मिसवाकभी तब फेकदी ।
मिस्ल ईसाँ[१६] एक सोजनही रखी ॥
सैर करते करते आखिर एक जाँ ।
एक पहाड पर गुजर उनका हुआ ॥
आदमी वाँ था न वाँ हैवाँन था ॥
यातो था वह कोह या मैदानथा ॥
दूरसे एक झोपडी आयी नजर ॥
देखा एक दुर्वेशको उस कोह पर ॥
करके इश्क अल्लाह प बैठ वहां ।
बैठना इनका हुआ उस पर गिरां ॥
बोला वह दुर्वेश ऐ दुर्वेश । तू ।
रातको रहना न यां दिलरे[२१] तू ॥
यॉं न दाना है न पानी है कहीं ।
मसलेहत तेरा यहां रहना नहीं ॥
तब यह बोले उससे ऐ कम हौसला[२३] ।
रिज्कका[२४] हरगिज[२५] न करियो तू गिला[२६] ॥
तेरा मैं मिहमाँ नहीं ऐ तकियेदार ।
जिसका मिहमा हूँ वही है गमगुसार ॥
जिसने दी है जान वह देवेगा नान ।
गर नहीं बावर[३१] तो करले इमतहान[३३] ॥
जो किसीके पास आता है अजीज ।
किस्मत अपनीसाथ लाताहै अजीज[३४] ॥
है खदा सबका नहीं करता शरीक ।

रिज़्कमें बाहम किसीको लाशरीकँ ॥
देख आते मत किसीको सहमँ जा ।
उसकी किसमतकाहैसाथउसके घरा॥
कहके यह और हटे वहांसे जा रहे ।
सामने तकियाक जा सुस्ता रहे ॥
शामको एक लोटा और दो रोटियाँ ।
तकियेंवालेको वहां पर उतरियाँ ॥
और उनक वास्ते खँवाने तआम ।
यक पुलाओंकी रिकाबी एक जाँम ॥
जर्फ चीनी और उनपर ख्वानँ पोश ।
यक तकल्लुँफसे उनमें नाय नोशं ॥
खाके इब्राहीमने पानी पिया ।
शुक्रँनेंआमतका फिरकसिजदाकिया ॥
यह तो नेंअमत लेक बस चलते रहे ।
वह जो तकियाद्दारँ थे जलते रहे ॥
शाम जब आयी वही फिर उतरियाँ ।
साथ यकलोटाके वां दो रोटिया ॥
मारे गुस्साके उन्होंन यों कहा ।
मैं नहीं खानेका खाना आपका ॥
एककोतुमभजो कुलियँऔरपुलाँओं ।
मुझकोजौकी रोटियाँरुखीखिलाओ ॥
जैसा वह दुवश मैं दुवश हूँ ।
जैसा वह दिलरेश मैं दिलरेशः हूँ ॥
क्यों बढ़ायी एककी यह इज्जँशाँ ।
हैं फकीर आपसमें सब एकसा ॥

जबकियायहशिकवे:उसने आशकार ।
तब हुआ उसपर खतौबे किर्दगार ॥
कि ऐ फकीर!इतना न भूल अपने तईं।
तुझको शर्म इसबातपर आती नहीं ॥
उसको गर पूछे तो वह तो बादशाह ॥
मेरी खातिर तज दिया ताजो कुलाह॥
छोड़ कर लज्जात दुनियाकी तमाम ।
वह शराब औवह कबाब औवहत आम॥
वहहुकूमत साहिबी सब अपनीछोड़ ।
बन्दगीमें मेरी आया हाथ जोड़ ॥
साहिबी जो छोड़ कर होवे गुलाम ।
क्योंनदूंमैं उसकोयकरुखाने तआम ॥
तेरी इस रोटीसे यह खाना है कम ।
याद कर उसके वह नाजो नअम ॥
और अपना वक्तभी तू याद कर ।
किस तरह औकात होती थी बसर ॥
एक घसियारा था तू मर्द गरीब ।
खोदता था घास तू ऐ बेनसीब ॥
जङ्गलोंमें खोदता फिरता था घास ।
एक टका आताथा उसका तेरे पास ॥
तू हुआ था छोड़कर उसको फ़कीर ।
मां न बेगम थी न बाबा था अमीर ॥
उस मुशक्कत से बसर करता था तू ॥
सर पर गट्ठे लेके नित मरता था तू ॥
तुझको मैं पक्की पकायी रोटियाँ ।

भेजता हूँ साथ पानीके यहां ॥
गर रजा पर मेरी तू राजी नहीं ॥
तो ठिकाना अपना कर यांसे कहीं ॥
दिल फकीरीसे अगर तेरा फिरा ॥
जाली और खुरपा यह है तेरा धरा ॥
आशकीसे तू हमारे बाज आ ॥
लेके खुरपा घास अपनी खोद खा ॥
जो खुदा किस्मतमें देवे बशे ओ कम ॥
मत रजाँसे उसकी रख बाहर कदम ॥
तरफ से अपने कर बाहर तलब ॥
खींच मतले फायदा रंजो तअब ॥
उसने जो समझा है सोई खूब है ॥
तालिबोंको नित रजा मतलूब है ॥
अपने तई सबके बराबर तू न जान ॥
फहम कर यह मोलवीकी बात मान ॥
हम भी ऐसे हैं यह कहना है बुरा ॥
इज्जमें वह आदमी गर है भला ॥
यां खुदीमें और खुदामें बैर है ॥
किस तरफ भटका फिरे है खैर है ॥
बन्दगान हक्क हैं मिस्कीनों गरीब ।
कुब्रसे दूर और जिल्लत से करीब ॥
इज्जतं व गुरबतंही वहां मञ्जूर है ।
कुब्र है जिसमें सो हकेस दूर है ॥

पकके गिरपड़ताहै मेवा खाक[८१] पर ।
खाम[८२] है जब तक रहे इफलाक[८३] पर ॥

साखी ।

दास गरीबी बन्दगी, सतगुरुकाउपकार ।
मान बड़ाई गर्बका, पचि पचि मरै गवाँर ॥
मान बड़ाई कूकरी, धरमराय दरबार ।
दीन लकुटिया बाहिरे; सब जग खाया फार ॥
मान बड़ाई कूकरी, संतन पायी जान ।
पाण्डव जग पान नभई,सुपच विराजे आन॥

---

१ राज्य । २ पहाड । ३ जंगल । ४ स्थानापन्न । ५ टाट । ६ सूर्द । ८ गुद्डी । ९ जमीन. मिट्टी । १० पानी । ११ अद्दली । १२ लज्जा, शरम । १३ बोझ । १४ नेक = अच्छा । खो =स्वभाव । अर्थात् अच्छे स्वभावको भलेमानस आदमी । १५ ईसा पैगम्बर इसाई धर्मके प्रवर्त्तक मूल पुरुष । १६ अन्तम । १७ जगह । १८ वहां, उस जगह । १९. फकीर दो प्रकार के होते हैं । एक तो गदा (भीखमांगनेवाले) जिनको संसारी वैभ-वकी बहुत लालसा है मगर उनको मिलता नहीं । दूसरें दुर्वेश जिन्होंने संसारको अपने विचार द्वारा त्याग दियाहै । २० इस जगाह । २१ दिल = हृदय; रेश = जखम घाव । आशय हृदय पर चोट खाये हुआ अर्थात् संसारसे उदास हुआ पुरुष । २२ बिहतरी, भलाई, नसीहत, उपदेश, उत्तम उपाय । २३ हौसला = हिम्मत, उत्साह; कम हौंसला = कमहिम्मत, अनउदार ॥ २४ रोजी, भोजन । २५ कदापि नहीं; कभी नहीं । २६ शिकायत, उलाहना । २७ अतिथि । २८ दुःख मिटाने वाला, सहानुभूति दिखानें वाला । ३० रोटी । ३१ विश्वास, यकीन । ३२ परीक्षा ३३ निकट । ३४ प्यास । ३५ भाग्य । ३६ एकसाथ । ३७ साथ । ३८ डरता । ३९ हटकर । ४० मठ । ४१ थाल । ४२ गिलास । ४३ वर्तन । ४४ थालीका ढकन । ४५ तैयारी । बनावट । ४६ खानेपीने के सामान । ४७ धन्यवाद । ४८ मुसलमानी एक खाना । ४९ प्रतिष्ठा । ५० बराबर, समान । ५१ निन्दा, शिकायत । ५२ जाहिर प्रकट । ५३ क्रोध, कोप । खतावे किर्दगार = ईश्वर का कोप । ५४ कर्ता ५५ लेना ॥ ५७ खुशी, लिये । ५८ लज्जात = स्वाद । लज्जात बहुवचन है लज्जातको अर्थात् बहुतसे स्वाद । लज्जात दुनिया ॥ संसारी विषय वासनाका सुख ॥ ५९ पीनेकी चीज । ६० भोजन, खाना । ६१ लाड । ६२ प्यार । ६३ समय । ६४ करना; गुजरना । ६५ परिश्रम । ६६ अधिक । ६७ मर्जी, इच्छा, आज्ञा । ६८ दुख । ६९ चाहने वाला । ७० चाह । ७१ समक्ष । ७२ यहां मोलवीसे मतब है मौलाना रूम । ७३ अधीनता । ७४ अभिमान । ७५ ईश्वरके भक्त । ७६ गरीब । ७७ । अभिमान । ७८ अपमान । ७९ निकट । ८० गरीवी, दीनता । ८१ सत्य । ८२ कच्चा । ८३ आसमान ।

माया तजे तो क्या भया, मानहिं तजा न जाय।
मानहिं बड मुनिवर गले, मान सबन्न को खाय ॥
कविरा अपने जीवते, ये दो बातां धोय।
मान बडाई कारने, अछता मूल न खोय ॥

वार्त्ता ३।

शाह इब्राहीम अद्धम संसार त्याग देनेके पश्चात मस्त फकीरों के वेषमें इधर उधर फिरा करतेथे। न कोई उनका विशेष वेष था न चिह्न। इसलिये लोग उनको पहचान नहीं सकते थे। एकबार ऐसेही फिरते हुए किसी अमीर आदमी ने उन्हें पकड-कर अपने बाग में माली के काम पर लगा दिया। सद्गुरु की इच्छा जानकर वे अच्छी तरह बाग का काम करने लगे। एक वर्ष जब बागवानी करते उनको हो गया तब एकदिन बाग का मालिक अपने कईमित्रोंको साथ लियेहुए बागमें आया। शाह इब्राहीम साहबने उस समय बागमें जितने फल फूल थे सबमें से थोडा थोडा लेकर एक डाली बनायी और मालिक बेगके पास ले गये। जब उस अमीर ने डाली में से अनारों को लेकर खाया तब सब अनार खट्टे निकले। उसने शाहसाहब को बुलाकर पूछा कि, मेरेलिये ये खट्टे अनार क्यों लाया? उन्होंने जवाब दिया कि, मुझे खट्टे मीठे की कुछ खबर नहीं है। उस अमीर ने कहा कि, तुम कितने दिनसे इस बाग में रहतेहो? उन्हों ने कहा एक वर्षसे। अमीर ने कहा एक वर्षसे बागवानी करके भी तुमने आजतक बागके खट्टे मीठेअनारों को नहीं पह-चाना? शाह इब्राहीम ने उत्तर दिया तुमने मुझे बागकी रक्षा करने के लिये रखा था कि, फलों को खाने के लिये? अमीरनें

कहा रक्षाके लिये ? उन्होंने कहा तब मैं फल कैसे खा सकता था ? अगर रक्षक भक्षक बनजाय तब तो रक्षा का नामही संसार से उठ जाय। आपकी बात को सुनकर वह अमीर बड़े आश्चर्य में आया। फिर जाँच करने पर उस अमीर को मालूम हुआ कि, वह तो शाह इब्राहीम अद्धम हैं तब तो वह हाथ जोड कर उनके पैर पर गिरपडा और अपना अपराध क्षमा कराने लगा। तब वे हँसकर उस अमीरको उपदेश देकर चलदिये.

वार्त्ता ४।

कहते हैं कि, बादशाहत त्याग देने के पश्चात् सुलतान इब्राहीम अद्धम शाह दस वर्ष तक नेशापुर के जंगल की एक गुफा में रहकर भजन करते रहे। आठवें दिन वे गुफा से निकल कर जंगलकी लकडियां इकट्ठी करके बस्तीमें ले जाकर बेच आते और उससे जो कुछ मिलता उतनेही में आठ दिन के भोजन का सामान खरीद कर लेआते और आठ दिनतक बैठे भजन करते।

लिखाहै कि, इस दस वर्ष की तपस्या और एकान्तबाससे उन्होंने अपने मन तथा इंद्रियों को पूर्ण रीतिसे जीत लिया था। इसके प्रमाणमें लिखाहै कि, जब नेशापुर से शाह इब्राहीम अद्धम रवाना हुए तब एक जहाज पर चढ कर अरब को चले। संयोगसे उस जहाज पर एक अमीर भी जारहाथा। उस अमीरके साथ सब अमीराना सामान नाचराग वगैरह थे। ठट्ठा मसखरी से अमीरों को खुश करने वाले भांड़ भी उसके साथ थे। एक रातको भांडों ने कहा अगर कोई आदमी मिलता तो उसपर से हमलोग अपनी मसखरी उतारते। उस अमीरने हुक्म दिया कि, देखो

जहाज़ में कोई गरीब भूखा मिलजाय तो उसे रुपया दोरुपया देकर अपना काम निकाल लो। आखिर कार ढूंढते ढूंढते उस अमीर के आदमियोंने शाह इब्राहीम अद्धमको किसी कोने में बैठा हुआ पाया। इनका विचित्र वेष और बढी हुई दाढी वगैरह देखकर सबने पागल समझ कर उन्हें पकड लिया और अमीरके मजलिस में लाकर बैठा दिया। फिर तो भांडों नें मनमानी की। जितने खेल खेलते अन्तमें सब उन्हीं पर उतारतें अंतमें जब उन्हें बहुत तकलीफ हुई तब आकाश बानी हुई कि, अगर तुम कहो तो इस ज़हाज़को डुबाकर इन सब मूर्ख बदमाशोंको इनके कियेका दण्ड देदूँ। शाह इब्राहीमने बडे धीरज के साथ कहा कि,

खींच कर सीनेमें अपने एक आह।
बोला इब्राहीम ऐ मेरे अल्लाह॥
कुछ नहीं इस अमरमें इनकी खता।
करता अगर बसीरत इनको तू अता॥
कजरवी क्यों करते ऐ दानायराज।
फेल बदसे आप करते एहतराज॥
राह में गर बेबसर के चाहहो।
जो न रोके उसको वह गुमराह हो॥
मर्दबीना को है लाजिम दे बता।
वरनः गोया उसका खून उसने लिया॥
वह है या रब्ब जुर्म असियांसे बरी।
कुछ नहीं उसमें खता उनकी जरी॥
क्योंकि गफलतसे है मसलूबुलहवास।
जेहल नादानी से मकलूबुल हवास॥

फिर उनने कहा कि,हे प्रभु! क्यामैं तेरा बन्दा इसका बिलहूँ और ऐसा नापाक हूँ कि, मेरे स्पर्श के पाप से इतने बडे जहाज को डुबाकर इतने निष्पापोंका अन्त करेगा । प्रभु! तू तो दयालुहै अधम उधारनहैं ऐसा क्यों नही करता कि यदि केवल मेरे ही कारणसे तुझे इतनी हत्या करनी पडती हो तो मुझको ही डुबादे अगर नहीं तो इन सबोंको वह ज्ञानदे कि ये तेरी बडाईको समझें और इनका हृदय दया और ज्ञानसे पूर्ण हो जावे। उनके इस प्रकार आशिर्वाद करनेके पश्चात् तत्काल ही अमीर सहित समाज के सब आदमियों का हृदय शुद्ध और ज्ञान से पूर्ण हो गया । उस समय सबने उनको पहचाना। फिर तो सब उनके पगपर गिरकर क्षमा करानें लगे । उन्होंने सबको उपदेश देकर संतोष दिलाया ॥

वार्त्ता ५।

एकबार एक स्मशान में बैठे हुए शाह इब्राहीम अद्धमसे किसीने पूछा कि, बादशाही छोडकर मरघटों में क्यों बैठते फिरते हो? उन्होंने उत्तर दिया कि, संसार के मनुष्यों को मैं चार प्रकार का देखता हूँ। १। कोई तो जीताहै और संसार में मौजूद है ॥ २ ॥ कोई मांके पेटमें है । ३ । कोई अपना कर्म पूरा करके आनेही चाहताहै । ४ । कोई मरगये हैं इनमें से मरे हुए लोग पुकार रहे हैं कि, ओ संसार के आदमियों! जल्दी जल्दी मरो कि, क्यामत जल्दी हो और हमलोग कब्रकी कष्ट से छूटें । जो माताके पेट में आचुके हैं और जो आने वाले हैं वे पुकार रहे हैं कि, ओ संसार के मनुष्यो! जल्दी संसारको छोड़ो कि, हमारे आनेको स्थान मिले । आशय यह है कि, एक ओर से भगाते हैं और

दूसरी ओरसे बुलाते हैं । इस दशा में संसारमें रहने की इच्छा किस प्रकार होसकती है । इसलिये मैंनें मौतको और मरघट को अन्तिम स्थान जानकर सेवन करना आरम्भ किया है ।

वार्ता ७ ।

एक बार फकीर होजाने के बहुत दिन पीछे शाह इब्राहीम अद्धम बलखमें गये और शहर से बाहर एक जलाशय के किनारे बैठे । आने जाने वालों ने उन्हें देख कर पहचाना और उनके बेटे को जो उस समय वहां के बादशाह थे उनके आने की खबरदी ।

बादशाह बापके आने की खबरको सुनकर चट सवारी मँगाकर बहुतसे मुसाहेब और नौकर चाकरों को साथ लिये हुये वहाँ पहुँचा । शाह इब्राहीम के आनेका समाचार जैसे ही बलख के लोगों को पहुँचा वैसे ही जो जिस दशामें था अपना अपना काम छोडकर दौड पडा । थोडी ही देरमें शाह इब्राहीम के निकट बडा भारी मेला लग गया ।

सुलतान इब्राहीम के पास में सिवाय एक गुदडी के दूसरा वस्त्र या पात्र आदि कुछ नहीं था । कठिन तपस्या के कारणसे उनका शरीर भी बहुत दुबला पतला और कमजोर देख पडताथा । बापकी वह दशा देखकर बादशाह बने हुए आत्म दृष्टिसे शून्य बेटेने कहा पिताजी ! आपनें बादशाहत छोड़कर संसार भरका कष्ट अपने शिर उठाके क्या लाभ उठाया ? ।

जो आपका शरीर मखमल और फूलोंकी सय्या पर सोनेंवाला था अब उसके लिये टाट भी आपके पास नहीं है जिसके संमुख हजारों दास दासियाँ सेवा करनेके लिये हाथ जोडे खडे रहते थे आज वही इस प्रकार बेकस और लाचारक समान

भूखे प्यासे जमीन पर सोता और दुःख उठाता फिर रहाहै । पूज्य पिता जी ! एक चीज को छोडकर मनुष्य दूसरी वस्तुको उन्नति की आशासे स्वीकार करताहै । आपने तो उलटा प्राप्त सुख को भी खोकर अपनी ऐसी दशा बनाली है जिसे देखकर मुझे शरम आतीहै और आपकी यह प्यारी प्रजा आठ आठ आसूं रो रहीहै । इसी लिये मैं आपसे पूँछेता हूँ कि, आपको इस त्याग में क्या प्राप्त हुआहै ! ।

बेटेकी बातको सुनकर उसे कुछ उपदेश देने के विचारसे सुलतान ने कहा, बेटा ! मैंनेजो कुछ कमाया है वहतो पीछे बताऊंगा पहले तू बतला कि, बादशाही पाकर तूने अपनी उन्नति कहांतक की है ? बापकी बात को सुनकर बेटा हँसकर बोला कि, देखिये आपके राज्य छोडकर चले जानेके पश्चात् मैंने अमुक अमुक देश अपने बाहु बलसे जीतकर स्वाधीन कर लियाहै और अमुक अमुक सुधार राज्य में फैलायाहै । मेरे अधिकारमें क्या नहीं है ? जिसको चाहूँ आज गरीब बनादूँ जिसको चाहूँ आज कुबेर कहलादूँ । जिसको चाहूँ उसका जान बखशी करदूँ जिसको चाहूँ मार डालूँ । मेरे नाम को सुनकर शत्रु डरते हैं । मेरी आज्ञा को कोई तोड नहीं सकता ।

इतना सुनकर सुलतानने कहा कि, बेटा ! अगर सच मुच तुममें ऐसी सत्ता आगयीहै तो ले मेरी यह सुई इस तलाब मेंसे निकलवा दे । इतना कहकर गुदडी सीनेकी सूईको तालाब में फेंकदिया ।

यह देखकर बेटा (बादशाह) ने हँसकर कहा यह कौन-बडी बातहै । एक नहीं लाखों सुई आपको मँगवा देताहूँ । सुलतान ने कहा मुझे दूसरी सुई नहीं चाहिये मुझे तो मेरी ही सुई चाहिए ।

बादशाह ने उसी समय वजीर को आज्ञादी और आनन फानन में देखते ही देखते हजारों पानी में डुबकी मारनेवाले और जाल डालने वाले हाजिर हो गये।यद्यपि सूईका निकाल लेना बादशाह सहल काम समझता था तथापि सब उपाय करने परभी सूईका पता नहीं लगा। तालाब के तह में जमें हुए सब काँदों कीच साफ होगये।मगर सूईकापता नहीं लगा। तबतो बादशाह अपने मनमें शरमाकर पिताके पास जाकर कहने लगा कि, वह सूई तो नहीं मिली उसका मिलना असम्भव है दूसरी सुईयां हाजिर हैं जितनी चाहिये लीजिये। सुलतान इब्राहीमने कहा कि, बेटा तूने यह क्या उन्नति की कि, एक सुई भी तालाब से नहीं निकलवा सकता! खैर अब मेरी कमाई को भी देख और अपनी कमाई से मिला। इतना कहकर सुलतान ने आंख बन्द करली एक क्षण के बाद आंखखोल कर तालावकी ओर देखा तब अगनित जलचर मछली आदि जीवधारियों को किनारे जलमें खडा देखा। बादशाहने उनसे कहा प्यारी ईश्वरकी सृष्टिकी मछलियो! क्या तुम मेरा एक काम कर सकोगी? सब जलचरोंने एक जबान होकर कहा जो आपकी आज्ञा हो करने को तैयार हैं। जलचरों को बोलते सुनकर बादशाहसे प्रजा तक सब आश्चर्य में आगये। सुलतानने मछिलियोंसे कहा कि मेरी एक सूई पानीमें है उसे ढूँढकर लादो। इतना सुनते ही मछलियां गोता लगा गयीं। थोडीदेरमें एक मछलीसूई मुहमें लिये हुई किनारे आयी। बादशाहने अपने हाथ से सूई लेकर देखी तो वही सूई थी। फिरतो वह बापके पगपर गिरकर रोते और अपनी अज्ञानता के अपराध को क्षमा कराने लगा।

प्रजा चारों ओर से जय जयकार वाणी उच्चारने लगी। इतने में सुलतान इब्राहीम अद्धमसाहब वहां से अन्तरध्यान होगये।

वार्त्ता ८।

कहते हैं कि, जब सुलतान इब्राहीम अद्धम मक्का के निकट पहुँचे तब सुना कि मक्काके पुजारी और यात्री लोग उनकी अगुवानी को आरहेहैं। तब वो जमात से निकल कर अलग होकर आगे चले गये जिसमें उनको कोई पहचान न सके मक्का के महात्माओं के सेवक लोग जो अपने अपने मालिकों से आगे आरहे थे पहले सुलतान इब्राहीम अद्धमसे मिले। उनलोगों ने आपसे पूछा क्या सुलतान इब्राहीम अद्धम यहांसे नजदीक हैं? सब महात्मा लोग उनसे मिलनेको आरहे हैं। आपने उत्तर दिया कि; वे उस अधर्मीसे क्या चाहते हैं? सेवकों ने गाली देते सुनकर आपको खूब मारा और गरदनियां दीं और कहने लगे कि, तू ऐसे महात्मा को अधर्मी कहताहै? असलमें तूही अधर्मी है। आपने कहा हां भाई सोई तो मैं भी कहरहा हूँ वे सब तो आपकोमारकूट के आगे बढ़े और आप अपने मनसे कहने लगे कि,क्यों ओ दुष्ट तूने अपने किये का फल पाया या नहीं? अभी कैसा खुश हो रहाथा कि, मक्का के महात्मा लोग हमारी अगुवानी को आरहे हैं। इसी प्रकार से आप ही आप अपने मनको समझा रहेथे इतने में लोग आगये और आपको पहचान कर आपसे क्षमा मांगने लगे। फिर आप मक्का में जाकर बहुत दिनों तक रहे। आपके बहुत से चेले भी हो गये। आपके चेले गुदड़ी ओढ़ते और खड़ी टोपी पहनतेथे।

वार्ता ९।

जब आप बलख छोड़ कर फकीर हुए थे उस समय आपका एक छोटा पुत्र था जब वह लडका बड़ा हुआ तब उसने अपनी मांसे पूछा कि मेरा बाप कहां है? मांने सब हाल कह सुनाया और यहभी कहा कि सुननेमें आता है कि, आजकल मक्कामें रहते हैं। लड़केनें मांसे कहा "अगर आपकी आज्ञा हो तो मैं भी मक्का जाऊँ तीर्थभी करूंगा और पिताको ढूँढकर उनका दर्शन भी करूँगा" मांने कहा अकेले तू क्यों जायगा मैं भी मक्का की जेयारत को जाऊँगी। फिरतो लडकेनें वजीरों को हुक्म दिया कि, शहर भर में डौंडीं पिटवादो कि, जिसको मक्का चलना हो वह चलें उसका सब खर्च मेरी ओरसे दिया जायगा। फिर चार हजार आदमी मक्का जानेको तैयार हुए। सबको साथ लेकर लडका मक्का पहुँचा। वहाँ जाकर गुदडी वाले फकीरों की एक जमात देख कर उनसे पूछा कि, तुमलोग इब्राहीम अद्धम साहब को जानते हो? उन्हों ने कहा वे तो हमारे गुरु हैं। फिर पूछा वो कहां हैं? उत्तर मिला कि वो लकडियों के गट्ठे लाने जंगलमें गये हैं। क्योंकि जब वो जंगल से लकडी लेकर आयेंगे और बेचकर रोटी लायेंगे तब हमलोग खायेंगे। इतना सुनकर लडका जंगल की ओर रवाना हुआ। आगे जाकर एक बुड्ढेको लकडियों का गट्ठर शिर पर रखे हुएआते देखा। लडका सुलतानकी वह दशा देखकर रोने लगा। फिर उनके पीछे पीछे बाजार तक गया। जहां जाकर उन्होंने लकड़ी रखकर पुकारा कि कोई है जो माल हलाल (सुकृति की कमाई) को माल हलालकेबदले लेवे। एक आदमी आया उसने आपसे लकड़ियाँ

लेलीं और उसके बदले में रोटियों दे दीं। आप रोटी लेकर जमातमें आये और साथियों के आगे रखदीं। लोग रोटी खाने लगे और आप भजन में लगे।

सुलतान इब्राहीम अद्धम साहेब सदा अपने चेलों से कहा करते थे कि, "देखो बेदाढी मूँछके लडके और स्त्रियों से सदा सचेत रहना उनकी ओर कभी ध्यान देकर मत देखना"। उन के शिष्यवर्ग सदा उनकी आज्ञाका पालन करते थे।

काबाकी परिक्रमाके समय संयोगसे सुलतान इब्राहीम अद्धम का लड़का उनके सन्मुख आगया। आपने दृष्टि भरकर उसकी ओर देखा। शिष्य लोग उनके उस कामसे आश्चर्यमें आये। जब परिक्रमा कर चुके तब आपके शिष्योंने आपसे हाथ जोड कर विनय किया कि दीनबन्धु हमको तो आपने आज्ञा दी है कि बिना मूँछ डाढी वाले बालकों और स्त्रियोंकी ओर दृष्टि मत करना किन्तु परिक्रमाके समय आपने स्वयम् एक बालककी ओर टकटकी लगाकर देखा था इसका क्या कारण है ?

शिष्योंकी बातको सुनकर आपने उत्तर दिया कि, जिस समय मैं बलख छोडकर चला था उस समय मेरा एक छोटा लडका था मुझे इस लडकेको देखते ही ऐसा जान पडा कि यह वही लडका है। आपकी बात सुनकर आपके शिष्योंमें से ऐक शिष्य यात्रियों के स्थानमें गया और बलखके यात्रियोंको ढूढते ढूँढते आपके पुत्रके पास पहुँचा। उस समय वह लडका अपने खीमेंमें बैठा हुआ पुस्तक पढ रहा था और रो रहा था उस शिष्यने जाकर उस लडकेसे पूछा कि आप कहाँसे आये हैं। लड़केने कहा—बलखसे आया हूँ। फिर उसने पूँछा आप

किसके लड़के हैं? उत्तर मिला कि, इब्राहीम अद्धमके उमने पूँछा कि, आपने उनको देखा है? लडकेने कहा कलके सिवाय मैंने उनको कभी नहीं देखा। किन्तु मुझे यहभी निश्चय नहीं है कि, जिनको मैंने देखा है वह मेरे पिता हैं कि,नहीं। मैंने उन- से इस डरके मारे कि, वो तो हम ही लोगोंसे भाग कर यहाँ आये हैं कहीं हमको जानकर यहांसे भी कहीं भाग न जावें कुछ न पूछा। आपके उस शिष्यने कहा कि, आप मेरे साथ आइये मैं आपको आपके पितासे मिलादूँ। फिर तो दोनों मां बेट और बहुतसे आदमी उस शिष्यके साथ चले। जब सब आपके सामने आये तब आपकी स्त्रीने आपको देख लिया देखते ही वह विकल हो गयी और रोने लगी। फिर लडकेसे बतलाया कि, देखो तुम्हारे बाप यही हैं लडका भी रोने लगा। उस समयकी दशा ऐसी करुणापूर्ण थी कि आपके सब शिष्य भी उनके साथ रोने लगे। मोहने करुणाके स्वरूपमें सबके ऊपर अपना जाल फैलाथा।

लडका रोते रोते बेहोश होकर गिरपडा जब चेतमें आया तब बापके पगपर गिरकर प्रणाम किया। आपने उसे गले लगाया फिर उससे उसके पढने लिखने और धर्मकी बातोंको पूछकर आपने चाहा कि,वहांसे उठकर चले जावें किन्तु आपके स्त्री और पुत्रने न छोडा। तब थोडी देरतक चुप रहनेके बाद आपने आसमानकी ओर मुहँ करके कहा हे प्रभु! तू मेरी सहायता कर आपका इतना कहना था कि, पुत्र आपहीके गोदमें मृत्युको प्राप्त हुआ।

शिष्योंने लडकेको मरते देखकर पूछा या सतगुरु! यह क्या हुआ? आपने कहा जिस समय मैंने इस लड़केको गले

लगाया था उस समय मेरे हृदयमें मोहका संचार हो आया था तब परमात्माकी ओरसे आज्ञा हुई थी कि, ऐ इब्राहीम तू मेरे प्रेम और भक्तिका दम भरता है और स्नेह दूसरोंसे करता है। जिस बातके लिये शिष्योंको सबसे अलग रहनेको कहता है उसीको तू आप पकडता है। जब मैंने यह सुना तब मैंने आशीर्वाद किया कि, हे प्रभु मेरी रक्षा तेरेही हाथमें है, यदि मेरे पुत्रका मोह मुझे तुझसे अलग करनेवाला है तो या तो मुझे मृत्यु देदे या उसीको। बस जो कुछ साहबने किया सब ठीक किया। इतना कहकर आप वहांसे शिष्यों सहित उठकर चले गये बलखवाले लोग रोते पीटते लाशको दफन करनेके लिये ले गये *

वार्ता १०।

एकबार हजरत इब्राहीम अद्धमके पास कोई आदमी एक हजार दिरम लाया और विनय पूर्वक प्रार्थना की कि आप इसे स्वीकार कर लीजिये आपने उससे कहा कि, मैं मँगतोंसे कुछ नहीं लेता। उस आदमीने कहा मैं मँगता नहीं हूँ बल्कि बडा धनवान हूँ। तब आपने उससे पूछा कि, जितना तेरे पास है उससे अधिक मिलनेकी इच्छा तेरे हृदयमें है कि नहीं? उसने कहा हां अधिक तो जरूर चाहता हूँ। तब आपने कहा कि, तब तो तू बडा भिखमँगा है इसलिये मैं तुझसे कुछ नहीं लेसकता। मैं उसीसे लेता हूँ जो इतना पूरा है कि, कुछ नहीं चाहता।

* वर्तमानके त्यागके अभिमानी साधु और महंतोंको विचार करना चाहिये क्यों कि, वे भी तो अपनेको सुलतान इब्राहीम अद्धमसे बढकर त्यागी बतलाते हैं।

वार्त्ता ११।

एकबार एक आदमी दसहजार अशरफियाँ लेकर आपके पास आया और उनको स्वीकार करानेके लिये हठ करने लगा। आपने उससे कहा कि, तू इन थोड़ेसे सोनेके बदले मेरी साधुता मोल लेके मुझे त्यागियोंकी जमाअतसे निकलवाना चाहता है? इतना कहकर आप वहांसे उठकर चले गये।

धन्य है इस त्यागको। आजकलके वैरागी भी अपनेको महान त्यागी मानते हुए भी एक एक पैसाके लिये संसारी तुच्छ जीवोंके पास दीनता करते और झूठी खुशामद किया करते हैं। क्या कोई सच्चा विचारवान उन्हें वैरागी कह सकता है? कदापि नहीं।

वार्त्ता १२।

एक आदमी ने आपसे विनय किया कि, आप मुझे ऐसा उपदेश दीजिये जिसपर अमल करके मैं सन्त पदवी को पा सकूँ। आपने उससे कहा—सन्त बनने के लिये सबसे पहली बात यह है कि, लोक और परलोक दोनोंसे चित्त उठाकर केवल साहबमें लगादे। साहब के सिवाय अपने हृदयसे दूसरा सब कुछ निकाल दे। दूसरे—हरामकी कमाई छोडकर सुकृति कमाईसे उदर निर्वाह कर। क्योंकि जिसका आहार शुद्ध है उसका हृदय शुद्ध होताहै, और जिसका हृदय शुद्ध होताहै, उसीके अंतःकरणमें साहबका सच्चा प्रकाश प्रगट होताहै। जिसने अपना आहार शुद्ध किया है वह अवश्य अपने पदको पहुंचा है। तीर्थ व्रत और नाना प्रकारके ऊपरी तपस्यासे चित्त शुद्ध नहीं होता बरन आहार शुद्ध होनेसे ही अन्तःकरण शुद्ध होता है।

वार्त्ता १३ ।

एक बार लोगोंने हजरत इब्राहीम अद्धमसे कहा कि, अमुक सन्त बड़ा सिद्ध और ईश्वरतक पहुंचा हुआहै। वह सदा ध्यानमें ही रहता है और दूर दूर देशकी बातोंको कह देता है । और सदा तपस्या में ही रहता है। आपने उन लोगोंसे कहा कि, मुझे उसके पास लेचलो मैं उसका दर्शन करूंगा। लोग आपको उसके पास लेगये । आपने वहां जाकर देखा कि, वह उससे भी बढकर सिद्धिवाला है। उस सिद्धिने आपसे प्रार्थना की कि, आप तीन दिन तक यहां रहिये आप रहगये। उसके व्यवहारको देखकर आपने विचार किया तो मालूम हुआ कि, उस का भोजन आदि निर्वाह दम्भकी कैमाईसे चलता है। तब आपको उसकी दशा पर दया आयी। तीन दिनके बाद आपने उस सिद्ध को नेवता देकर अपने कुटी पर बुलाया जब वह आप के पास आया तब दूसरे ही दिन उसकी सिद्धि लुप्त होने लगी तीसरे दिन तो वह कोरा कोरा सन्त रहगया । तबउसको बडा आश्चर्य हुआ उसने आपसे कहा कि, आपनें मेरे ऊपर क्या कर दिया मेरा सब चमत्कार जाता रहा ? आपने उसको उत्तर दिया कि; पहले तुम हरामकी कमाईसे अपना पेट भरते थे इस कारण कालने तुम्हारे हृदयमें प्रवेश करके तुम्हे अनेक प्रकारकी सिद्धि का लालच दिखाकर साहब के देशसे काल देशमें लेगया था । अब तुम तीन दिनसे सुकृति की कमाई का भोजन करतेहो इस कारण कालका राज्य तुम्हारे हृदय से उठ गया है। अब तुम चाहो तो साहिबका भजन कर सत्य लोक का साधन कर सकते हो ।

सुलतान इब्राहीम की बात उस समय तो उसको अच्छी नहीं

लगी परन्तु जब वह लौटकर अपने स्थानपर आया और सुल-तान इब्राहीम अद्धम साहेब के आचार विचार को अपने कर्त्तव्यों से मिलानें लगा तब उसे प्रत्यक्ष ज्ञात होगया कि,वतो अपने उ-चित परिश्रम द्वारा अपनी संसार माया चलाते हैं और वह अपनी संसार यात्राके लिये नाना प्रकार के वेश और दम्भकी बातोंसे संसार को बहकाकर अपना नाम बढ़ाता है।जिन बातोंके भेदको वह स्वयम् नहीं जानता उसको जानने का डौल बनाकर लोगोंको ठगताऔर भ्रममें डालता है। इस प्रकार से बोध होतेही उसने पश्चात्ताप करके अपने सब स्वांगों को तिलाँजली देकर काल दशेसे निकलने और सत्यराज्य मे प्रवेश करने के लिये सच्चे संतोंका संग करना आरम्भ किया।

वार्त्ता १४।

एक दिन परिश्रम करने पर भी आपको भोजन नहीं मिला। आपने साहिब को धन्यवाद दिया। इसी प्रकार सात दिन त-क आपको भोजन नहीं मिला और बराबर आप साहिब का धन्यवाद करते रहे। आठवें दिन निर्बलता बहुत बढ़गयी तब आपके मनमें कुछ भोजन मिलने की इच्छा हुई। साहिब की कृपासे एक मनुष्य आकार खड़ाहुआ और विनय करने लगा कि, आप मेरे यहां भोजन करने चलिये उसके प्रेम और भक्ति भावको देखकर आप उसके साथ गये।जब आप उस आ-दमी के घरपर पहुँचे तब उसके अमीराना ठाट और मकानात के देखनेसे मालूम हुआ कि, कोई बडा धनी आदमी है। उस-ने आपको एक सजी हुई कोठरीमें लेजाकर बैठाया फिर वह आपके परों पर गिरकर विनय पूर्वक कहने लगा कि, मैं

आपका मोल लिया हुआ दास हूँ सो यह सब वैभव आपकी सेवा में अर्पण करता हूँ,आपसे स्वीकार कीजिये । आपने उसी समय उससे कहा कि, आजसे मैं तुझे दासत्व से स्वतंत्र करताहूँ और यहसब माल असबाब भी तेरे ही को देताहूँ। इतना कहकर आप वहांसे उठकर जंगल में चले आये और साहिबसे प्रार्थना करने लगे " हे प्रभु ! मैं आजसे तेरे सिवाय दूसरा कुछ न चाहूँगा । तू तो टुकडे रोटीके बदले संसार भरकी माया मेरे गले बांधना चाहता है " । कहते हैं कि, आपने मनका दण्ड देनेके लिये कई दिनों तक और भी भोजन नहीं किया ।

सद्गुरु ने सबसे अधिक मनके ऊपर ही ध्यान रखने को बारंबार कहा है । यथा–

साखी–मनके मते न चालिये, छाडि जीवकी बानि ।
　　कतवारीके सूत ज्यों, अलटि अपूठा आन ॥
　　मनके मते न चालिये मनका मता अनेक ।
　　जो मनपर असवार है, सो साधू कोइ एक ॥
　　चिंता चित्त विसारिकै,फिरी न बूझिये आन ।
　　इन्द्री पसारा मेटिये, सहज मिले भगवान् ॥
　　मनको मारो पटकिके, टूक टूक ह्वै जाय ।
　　टूटे पीछे फिर जुटै, बीच गांठ रहि जाय ॥

मनका विशेष वर्णन मन बोध ग्रन्थमें देखनेसे मालूम होगा ।

वार्त्ता १५ ।

सुलतान इब्राहीम अद्धमसाहबको निद्रा नहीं आती थी ।एक बार बहुतसे आदमियोंने मिलकर इस बातकी परीक्षा ली । आपसे पूछा कि, आपको निद्रा क्यों नहीं आती ? आपने उत्तर दिया जिस कालने बड़े बडे ऋषि, मुनि, पीर, पैगम्बर

और औलियाओंको साहिबसे विमुख करदिया। वह सदा जाग कर सत्यपथके जीवोंको भटकानेकी युक्ति रचता रहताहै, तब हमको सोनेकी फुरसत कैसे मिल सकती है ?

सचहै। साहबने कहा है।

काल खडा शिर ऊपरे, जागु बिराने मीत।
जाको घर है गैल में,सो कस सोवै निचिंत ॥

वार्त्ता १६।

एकबार सुलतान इब्राहीम अद्धम साहब एक टूटेहुये मकानमें ठहरे हुए थे।उसमें और भी बहुतसे मुसाफिर उतरे थे। रातको ठंढी ठंढी हवा और साथ ही साथ पानीके छींटें भी पड़नेलगीं। उस मकानका द्वार टूटा हुआथा। इससे मकानके अन्दर ठंढी हवा और पानी आकर मुसाफिरोंको कष्ट पहुँचा रहेथे। आपसे उनका कष्ट देखा न गया। आप चुपचाप उठकर द्वारपर जाखड़े हुए। जिससे अन्दरके मुसाफिरोंको तो आराम हुआ किन्तु आप ठंढसे ठिठुर गये।सवेरा होनेपर लोगोंने देखकर पहचाना। और आगसे सेकनेपर जब आपको होश आया, तब लोगोंने पूछा कि, आपने ऐसा क्यों किया? तब आपने कहा कि, बहुत सी जानोंको बचानेके लिये एक का जान काममें आवे और बहुतोंकी तकलीफ दूर करनेके लिये एकको थोड़ी तकलीफ उठानी पड़े तो इससे बढकर अच्छा काम क्या होसकता है ? इसलिये मैं द्वार पर खडा हो गया जिससे एक मेरी तकलीफ के बदले इतने मुसाफिरों को आराम होवे। सच है।

दया भाव जानै नहीं, ज्ञान कथे बेहद।
तेनर नरकै जायँगे, सुनि सुनि साखी शब्द ॥

वार्त्ता १७ ।

सहलविन इब्राहीम नामक संतने कहा है कि एकबार वो सुलतान इब्राहीमके साथ सफर में थे, संयोगसे वो बीमार पडगये। सुलतानके पास जोकुछ बस्त्रादि था बेंचकर उनकी रक्षामें लगादिया अन्तमें जब कोई सवारी भी नहीं रही तब सहलविन इब्राहीमने कहा "मैं बहुत कमजोर हो गयाहूँ अब आगे कैसे जासकूंगा।" आप उन्हें अपनी गर्दनपर बैठाकर तीन मंजिलतक लेगये, जबतक वो अच्छे भी हो गये। *

वार्त्ता १८।

सुलतान इब्राहीम अद्धमके साथ जो कोई रहनेकी इच्छा प्रकट करता था। आप उससे तीन बचन ले लेतेथे तब उसको अपने साथ रखते थे।

१ पहला नियम उनका यह था कि, आप किसीसे सेवा नहीं कराकर सबकी सेवा आप ही करते थे।

२ दूसरा नियम यह कि, भजन करनेके समय का सबको सूचना देना अपनें ऊपर रक्खाथा।

३ नियम यह था कि, मण्डली का कोई आदमी भी सुकृति की कमाई से जो कुछ कमा के लाता था उसको मण्डली में समान उपयोगमें लगाते थे।

इन नियमोंमें से एक भी नियम जिसको अस्वीकृत होता था उसको अपनी मण्डली से बाहर करदेते थे।

---

* नोट-धन्यहै इस पर उपकारको। आजकलके साधुओंको ध्यान देकर इसबातको विचारना चाहिये क्योंकि, वर्तमान में साधुओंकी यह नीति होगईहै कि, सफर तो सफर किसी विशेष स्थानपर भी कोई बीमार पड़जाय तो उसे एक गिलास पानी तक देना बुरा समझते हैं। मैंनें बहुतसे ऐसे दृष्टान्त देखेहै और स्वयंभी उनके संग रहकर भोग कियाहै।

आज कलके महंतोंको इसबात पर ध्यान देना चाहिये क्यों कि, वर्तमानके महंत या मण्डलीके मुखिया साथके साधुओंकी पूजा और भेंटको भी हड़प जाते हैं ।

वार्ता १९ ।

एकबार किसीने सुलतान इब्राहीम अद्धम साहबसे पूछा कि, आपका पेशा (धन्धा) क्या है ? आपने उत्तर दिया "मैंने संसारको तो उसके चाहने वालोंपर छोड दिया है और परलोकको परलोकके चाहनें वालोंके लिये । किन्तु अपने लिये मैंने केवल साहबका भजन रक्खा है । सच है साहबने कहा है ।

साखी– माला जपूं न कर जपूं, मुखसे कहूं न राम ।
मेरा हरी मोंको जपे, मैं पाऊं विश्राम ॥

वार्ता २० ।

एकबार किसीने सुलतान इब्राहीम अद्धमसे पुछा कि, आपने ऐसी अधीनता और दासापन कहाँसे सीखी । आपनें उसे उत्तर दिया कि "एक बार मैंने एक दासको मोललिया । जब उसे साथ लेकर अपने स्थान पर आया तो उससे पूछा कि, तेरा नाम क्या है ? उसने उत्तर दिया कि, जिस नामसे आप पुकारें वही मेरा नाम है । फिरे मैंने पूछा तू खाता क्या है ? उसनें कहा जो आप खिलावें । फिर मैंने पूछा कि, तू पहनता क्या है ? उसने जवाब दिया जो आप पहनावें । फिर मैंने कहा तू करता क्या है ? उसने कहा जो आप हुक्म देवें । फिर मैंने कहा तू चाहता क्या है ? उसने कहा जो दास है उसको अपनी इच्छा कहां है ? जिसको अपनी इच्छा है वह दास ही नहीं है । आप फरमाते हैं कि, उस दासकी बातोंको सुनकर उसीदम उसको दासत्व से मोक्ष दे दिया

और उसीदम से अपना सब कुछ साहबको सौंपदिया। फिर जैसा वह चाहता है करता है। मैं न तो आधीनता करता हूँ न दासापन जो कुछ है साहबका है मेरा कुछ नहीं ।

नोट—वर्तमान कालके दास पदवी के अभिमानी कबीर पंथी साधुओंको उपर्युक्त सुलतान के दासके वचनों पर ध्यान देना चाहिये क्योंकि, यद्यपि आजकलके कबीरपंथी साधुओंके नाममें दास शब्द अवश्य जुटा होता है और उनके मनमें भी दास शब्दका बडा भारी अभिमान रहता है यहां तक कि, यदि किसी कबीर पंथीके नाममें दास शब्द न जुटा हो अथवा किसी का नामही ऐसा हो कि,उसके नामके साथ दास शब्दका जोड न मिलता हो तो उस दास शब्दसे हीन सच्चे दासको भी वचनों और व्यगोंके मारे तंग करते रहते हैं और बल पूर्वक उसके सुन्दर प्रसिद्ध नामको बिगाडनेका प्रयत्न करते हैं । और आप दास कहलाकर भी स्वामीपनेंके ऐसे दम्भ और अहंकार में पडे रहते हैं कि, अपने गुरु (जैसे माता पिता, दीक्षा गुरु आदि) से भी मान चाहते और उसने अपना पग पुजवाते हैं। और सतगुरुके बचनका ध्यान भी नहीं रखते क्यों कि,सतगुरुका वचन है।

गुरुको नीचा करि जानई, गुरु से चाहे मान ।
सो नरनरके जायगा, जन्म जन्म होय स्वान ॥
दासापन तो हृदय नहिं, नाम धरावै दास ।
पानीके पीये बिना, कैसे मिटै पियास ॥
नाम धरावै दासजो, दासापन हो लीन ।
कहै कबीर लौलीन बिनु, स्वान बुद्धि कहि दीन।
दासापन हृदय बसे, साधन सों आधीन।

कहैं कबीरा दास सो, दास लक्ष लौलीन ॥
स्वामी होना सोहरा, दोहरा होना दास ।
गाड़र आनी ऊन को, बांधी चरै कपास ।
निर्बन्धन बन्धा रहै, बन्धा निर्बंध होय ।
कर्म करै कर्ता नहीं, दास कहावै सोय ॥

वार्त्ता २१ ।

एक ने आपसे एकदिन प्रार्थाना की कि, आप मुझे उपदेश दीजिये । आपने उसको कहा कि, एक साहिब को याद रख और संसार को भूल जा । एक दूसरे ने भी आपसे उपदेश मांगा आपनें उसे कहा कि, बन्धे को खोल और खुलेको बांध । उस आदमीने कहा मैंने इसका अर्थ नहीं समझा । तब आपने उसको समझाया कि, थैली का मुहं खोल अर्थात् जो कुछ तेरे पास है-उससे परमार्थ कर और-जबान को बांध अर्थात् बहुत बोलना छोडादे । सत्य है सत्य गुरुनें कहाहै ।

जिह्वाको दै बन्धनैं, बहु बोलना निवार ।
सो परखीसे संग करु, गुरुमुख शब्द विचार ॥

इसी प्रकार से सुलतान इब्राहीम अद्धम साहब के विषयमें हजारों वार्ता प्रसिद्ध हैं । यहाँ ग्रन्थ बढजानेके भयसे मेरे पास जितनी वर्ताओंका संग्रह हैं उन सबोंको नहीं लिखसकते । आपकी जीवनीके साथ अधिक लिखने का प्रयत्न किया जायगा

इति सुलतान इब्राहीम अद्धम साहबका संक्षिप्त जीवन चारित्र समाप्तः ।

इति बोधसागर पूर्वार्द्ध समाप्तमिदं

